जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२४ अंक -०९ मई २०२२ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ५२ मूल्य - १५० रूपए प्रति

!! ॐ अर्हम् !!

आचार्य महाश्रमणजी के षष्टिपूर्ति वर्ष पर शत् शत् नमन

ADVANCE PANELS & SWITCHGEARS (P) LTD.

Unit 1: A-257, DSIDC, Narela Industrial Park, Narela, New Delhi-110040,
Factory 2: SIDCUL, Haridwar, Factory 3: Sonepat, Haryana (www.advancepanels.com)
Offices : Delhi, Noida, Gurgaon, Dehradun, Jaipur, Ahmedabad, Mumbai, Pune, Bengaluru, Chennai)
(43 years old India's leading manufacturer of HT, LT & Control Panels like 33 kV, 11 kV, PCC, MCC, MDB, VFD & Soft Starters, Draw-out panels, iMCC, APFC & Hybrid solution, PLC & SCADA s, DB's, sandwich bus ducts, rising mains, cable trays, raceways.
EPC Solutions: 11KV/33KV/66KV Switchyard, sub station, external & internal electrical contracts, MEP contracts.
Contact us : marketing@advancepanels.com, customercare@advancepanels.com,
Mob. : 9350290804, 8377000515

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

मेरा राजस्थान
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका
पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
पधारो म्हारे देश
भरतपुर
कोटा
जोधपुर
जैसलमेर
जयपुर
बीकानेर
चूरू
लक्ष्मणगढ़
नागौर
कुचामन
झुँझुनूँ
पाली
फतेहपुर
डीडवाना
रामगढ़
नवलगढ़
चिड़ावा
सिरोही
रतनगढ़
सरदारशहर
सीकर
लाडनूँ
जसवंतगढ़
बिसाऊ
केड
सुजानगढ़
ब्यावर
बिदासर
छोटीखाटू
तालछापर
सांभर
अजमेर
राजलदेसर
गंगाशहर
नोखा
देशनोक
कालू
रतननगर
चित्तौड़गढ़
मण्डावा
मंड्रेला
नोहर
मेवाड़
दाँता-रामगढ़
सादड़ी
फालना खुड़ाला
आमेट
रींछेड़
अलसीसर
श्रीमाधोपुर
डूण्डलोद
बगड़
लोसल
मुकुंदगढ़
शिशोदा
सिंधाना
राजसमंद राजनगर
देवगढ़
पिलानी
सांडेराव
खिमेल
औद्योगिक नगरी रानी स्टेशन
राजगढ़-सादुलपुर
बिकानेर का श्रीडुँगरगढ़
बालोतरा
मारवाड़ मूण्डवा
महनसर
उदासर
नापासर
लूनकरनसर
उदयरामसर
भीनासर
मोमासर
(रिणी) तारानगर
भीम
चाड़वास
भादरा
मात्र रु. 100/- में, प्रति महिना
राजस्थान का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ
पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनिः ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com
विशेष छूट विज्ञापन देने पर पूरे साल 'मेरा राजस्थान' पत्रिका मुफ्त
वार्षिक शुल्क 1,111/-
आजीवन शुल्क 11,111/-
सम्पादक बिजय कुमार जैन
उपसम्पादक संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक अनुपमा शर्मा (दाधीच)
भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
नीम लगायें नीम पर्यावरण बचाये

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

भारत को केवल भारत ही बोलेंगे

आज से इंडिया नहीं बोलेंगे

भारत नाम की आजादी के लिए

India को संविधान से हटाने के लिए

मुक्त हस्त आर्थिक सहयोग करें व सरकारी नियमों के अनुसार रियायत प्राप्त करें

हर महीने होने वाले खर्चों के लिए आप भी दान दाता बन सकते हैं

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

80G व 12A भारतीय आयकर नियमानुसार पंजीकृत

हमारा बँक खाता क्र.

HDFC BANK SAVING BANK A/C No. 50100479479181

IFSC CODE : HDFC0000592 BRANCH NAME : MAROL, ANDHERI EAST, MUMBAI, BHARAT

निवेदक

मैं भारत हूँ फाउंडेशन परिवार

(अंतर्राष्ट्रीय संस्थान)

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

अगला अंक

हे प्रभो! यह तेरापंथ

तेरापंथाचार्य
श्री महाप्रज्ञ जी के जन्म पर्व
१४ जून

BASANTILAL SANCHETI JAIN
Mob. 098199 76662

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

एक देश है फिर नाम क्यों है अनेक
भारत - इंडिया
भारत को केवल भारत ही बोले
मैं भारत हूँ फाउंडेशन का यह है आह्वान

Prathmesh Gold

Specialist in Bangles

204, Golden Plaza, 2nd Floor, 93/95, Dhanji Street, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 003
Tel.: +91-22-23468222 / 61832199 / 49117305 / 33527305
E-mail: prathmeshgold92@gmail.com

!!जय भारत!! भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101 !!जय भारत!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए'

Remove INDIA From Constitution

!!भारत माता की जय!! भारतीय संविधान से INDIA हटाया जाए !!भारत माता की जय!!

बिजय कुमार जैन - भ्रमणध्वनिः ९३२२३०७९०८

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर
अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी,
शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के षष्ठीपूर्ति दिवस
पर कोटी-कोटी वंदन!

Manoj Kumar Manish Kumar Kothari

Manoj Sugar Suppliers

Mob : 9831081883/ 8444090248

Mahaveer & Co.

M.K. Kothari & Associates

Chartered Accountants

Mob: 9831399966

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

7, Ram Kumar Rakshit Lane, Kolkata, West Bangal-700007

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove ~~'INDIA'~~ Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

२४ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२४, अंक ९, मई २०२२

जिनागम

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com

अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर ० सम्पादकीय ० दिगम्बर श्वेताम्बर

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

अतिथि सम्पादक का स्वकथ्य

'ओम अर्हम्' अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक, तेरापंथ धर्मसंघ के यशस्वी युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी की आज्ञा से मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) से ५ मई १९७४ को सरदारशहर में दीक्षित बालक मोहनलाल दूगड़ ने दीक्षा के बाद नया नाम पाया मुनि मुदित उनका जन्म १३ मई १९६२ को सरदारशहर में हुआ था एवं बाल्यकाल में वहीं शिक्षित-दीक्षित हुए।

कालान्तर में आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा १४ सितम्बर १९९७ को गंगाशहर में आप तेरापंथ धर्मसंघ के युवाचार्य घोषित हो गये, जिसका संकेत तो काफी पहले, गुरूदेव तुलसी दे गये थे। आचार्य महाप्रज्ञ के देवलोकगमन के बाद आप विधिवत दिनांक २३ मई २०१० को तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें यशस्वी आचार्य प्रस्थापित हुए, इस तरह १३ मई जन्म, ५ मई दीक्षा दिवस व २३ मई आचार्य पदारोहण होने से मई का महिना आपके जीवन का एक विशेष महत्व का महिना बन गया। इसी वर्ष मई महिने में आप जीवन के ६० वर्ष पूर्ण कर रहें हैं एवं षष्टिपूर्ति महोत्सव समारोह आपकी जन्मभूमि सरदारशहर में आयोजित हुआ।

'जिनागम' के यशस्वी सम्पादक श्री बिजय कुमारजी 'जैन एकता' एवं सभी जैनों की 'सम्वत्सरी' एक दिन मनाने हेतु पिछले कई वर्षों से प्रयासरत हैं एवं इस प्रयोजन हेतु अनेक आचार्यों से मिले एवं मंत्रणा की है। समग्र जैन समाज के लिये यह काफी अष्टावक्र पहेली होने के बावजूद सभी की हार्दिक इच्छा भी है कि इसमें सफलता मिले, प्रयास जारी है, सभी जैन समुदाय यह निश्चित करने का प्रयास करे तो असम्भव भी नहीं है। प्रयासों से ही आंशिक सफलता मिलती है। हम जरूर सफल होंगे, ऐसा वीर प्रभु वरदान व आशीर्वाद प्रदान करें।

सम्पादक महोदय द्वारा भारत की एक राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' घोषित हो, इस हेतु भी अथक प्रयास किया जा रहा है परन्तु यह कार्य राष्ट्रहित की बजाय, राज्यों की कुटिल राजनीति में फंसा हुआ है, इसके बावजूद 'हिन्दी' का वर्चस्व व प्रसार बढ़ रहा है, अत: समय पर हमारी 'हिन्दी' भाषायी पटरानी जरूर बनेगी, इसमें सन्देह नहीं है, वर्तमान में भाजपा मोदी सरकार भी इसके लिए प्रयासरत है।

जैन समाज की विशिष्ट पत्रिका 'जिनागम' के सम्पादक श्री बिजयकुमार जैन की मेरे से अपेक्षा रही है कि इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले इस विशिष्ट विशेषांक की समायोजना में मैं सहयोगी बनूं। तेरापंथाचार्य महाश्रमणजी के प्रति श्रद्धाभाव प्रकट करने का यह दुर्लभ अवसर प्राप्त करना मैंने अपना सौभाग्य समझा पुज्य गुरुदेव के आशीर्वाद एवं इस विशेषांक की तैयारी में अनेक चारित्रात्माओं का आशीर्वाद एवं श्रावकों व मित्रजनों का सहयोग मिला है, उनकी वजह से ही यह अंक आपके सामने प्रस्तुत करने का मुझे भी आत्मीय संतोष प्राप्त हुआ है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि सम्पादक महोदय की भावना को प्रस्तुत करने के साथ यह विशेषांक सुधि पाठकों को जरूर पसन्द आयेगा।

जय जिनेन्द्र!

- विजयराज सुराणा जैन
पड़िहारा-दिल्ली
भ्रमणध्वनी :९८६८८०७६८८

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

सरदारशहर की धरा पर ऐतिहासिक युगप्रधान पदाभिषेक पर्व का भव्य आयोजन

सरदारशहर, चूरु (राजस्थान): छह दशक पूर्व सरदारशहर में जन्मे बालक मोहन ने सरदारशहर की धरती पर ही जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की साधु परंपरा में दीक्षा ली और मुनि मुदितकुमार बने। अपने व्यक्तित्त्व, कर्तृत्व, निष्ठा, गुरुभक्ति की अखंड आस्था का परिणाम हुआ कि मुनि मुदित अपने पूवाचार्यों द्वारा 'महाश्रमण' पद पर प्रतिष्ठित हुए और अपने दसवें आध्यात्मिक गुरु की मंगल सन्निधि में महाश्रमण से युवाचार्य महाश्रमण बने। सरदारशहर में तेरापंथ के दसवें आचार्य महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के पश्चात तेरापंथ के ग्यारहवें अनुशास्ता बने। आचार्य बनने के बाद वैश्विक क्षितिज को मापने निकले आचार्य महाश्रमणजी ने सप्तवर्षीय अहिंसा यात्रा के दौरान नेपाल, भूटान की विदेशी धरती को पावन बनाने के साथ ही भारतवर्ष के २२ राज्यों को पावन बना मानवता का ऐसा शंखनाद किया कि जैन धर्म के पालक महाश्रमण जन-जन के महाश्रमण बन गए। आज ऐसे सदी के महानायक, महातपस्वी आचार्य महाश्रमण के जीवनकाल के साठ वर्षों की सम्पन्नता के सुअवसर के साथ युगप्रधान पदाभिषेक महापर्व के गौरव का क्षण भी सरदारशहर को प्राप्त हो रहा था।

सूर्योदय के कुछ समय पश्चात ही आचार्यश्री महाश्रमण अपने जन्मस्थान से कार्यक्रम स्थल की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग के दोनों ओर पंक्तिबद्ध खड़े श्रद्धालुओं के जयघोष से पूरा वातावरण गुंजायमान हो रहा था। वाद्ययंत्रों की मंगल ध्वनि इसे और अधिक प्रभावी बना रही थी।

आचार्यश्री लगभग पांच किलोमीटर का विहार कर धवल सेना संग बीडीएस कॉलेज के तिरंगा स्टेडियम पहुंचे तो साधु, साध्वी, समणी, मुमुक्षु बहनें, जैन संस्कारकों व उपासकों द्वारा आगमसूक्त, लोगस्स व णमोत्थुणं आदि पाठों का वाचन कर अपने आराध्य का भव्य स्वागत किया।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने युगप्रधान परंपरा व युगप्रधान अर्हता को बताया तो साध्वीवर्या साध्वी संबुद्धयशाजी ने आचार्यश्री महाश्रमणजी के अवदानों को व्याख्यायित किया। मुनि कुमारश्रमणजी, साध्वी सुमतिप्रभाजी, प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री बाबूलाल बोथरा व संसारपक्ष में आचार्यश्री के भाई श्री सुजानमल दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनिश्री धर्मरुचिजी द्वारा पूज्यचरणों में काव्यांजलि ग्रंथ समर्पित किया गया। दूगड़ परिवार के नन्हें बच्चों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

आध्यात्मिक गुरु का अध्यात्ममय युगप्रधान पदाभिषेकः युग को नई दिशा प्रदान करने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी के युगप्रधान पदाभिषेक की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई जो सात चरणों में चली। मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी उठे और आचार्यश्री से सिंहासनारूढ़ होने का निवेदन किया। आचार्यश्री के सिंहासनारूढ़ होते ही साध्वीवर्याजी आदि अग्रणी साध्वियों द्वारा नंदीश्लोकों के साथ संघ स्तुति की गाने लगी। फिर आरम्भ हुआ ज्योतिचरण के पदाभिषेक का चरणबद्ध कार्यक्रम। मुख्यमुनिश्री ने प्रथम चरण में पवित्रता जागरण का क्रम किया। जल से आचार्यश्री के पदांगुष्ठ का अभिषेक किया। तदुपरान्त हस्तद्वय अंगुलियों का भी अभिषेक किया। अभिसिक्त जल को उपस्थित साधु-साध्वियों ने अपने मस्तक से लगाकर धन्यता की अनुभूति की। अभिषेक करने के उपरान्त मुख्यमुनिश्री ने पदाभिषेक पत्र का वाचन कर वह **शेष पृष्ठ ८ पर...**

!! ॐ अर्हम् !!
जय आचार्य भिक्षु जय आचार्य तुलसी जय आचार्य महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर
अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी,
शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के
जन्म दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

बिमल आसकरण दुगड़ जैन
भ्रमणध्वनि : 98200 25699
अभिमन्यु जैन श्रेयांस जैन

JCC
THE GIANT MOVERS
JCC INDIA PVT. LTD.
Logistics I Infrastructure I Rental
D-4100, BIMA Complex, Kalamboli, Navi Mumbai,
Maharashtra, Bharat - 410 218
Ph. : 91-22-27415055 Fax : 91-22-27425066 email - bimaljain@jccindia.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ७ से ... पत्र अपने आराध्य के करकमलों में समर्पित कर दिया। तत्पश्चात क्रमशः उत्तरीय वस्त्र अर्पण कर माल्यार्पण किया तो पूरा वातावरण जयघोष से गुंजायमान हो उठा।

युगप्रधान को अर्पित किए गए श्रद्धा भावों से ओत-प्रोत अभिनंदन पत्र व भेंट

मुख्यनियोजिकाजी ने रजोहरण, साध्वीवर्याजी ने प्रमार्जनी, श्रमण-मणी परिवार ने अभिवंदना पत्र प्रस्तुत किया, जिसका वाचन शासन गौरव साध्वी कल्पलताजी ने किया

इस दौरान केन्द्रीय संस्थाओं के माध्यम से समस्त श्रावक समाज की ओर अभिनंदन पत्र प्रस्तुत किया गया, जिसका वाचन श्री के.सी. जैन ने किया।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने श्रीमुख से उपस्थित विराट जनमेदिनी को मंगल पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि आज मैं देख रहा हूं कि मेरे प्रति मंगलकामनाएं की जा रही हैं। इस शरीर के साथ जीवन के साठ वर्ष पूर्ण हो गये और अब सातवें दशक में प्रवेश हो गया है। सरदारशहर में जन्म लेने और दीक्षा लेने के उपरान्त परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी और परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने खुले मैदान में दौड़ने का अवसर दिया और खुले आकाश में उड़ान भरने को उत्प्रेरित किया। नौ मई २०१० को सरदारशहर में ही परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण के उपरान्त धर्मसंघ ने अमल-धवल चद्दर ओढ़ाई। आचार्यपद के साथ आज सम्पूर्ण धर्मसंघ ने युगप्रधान के रूप में आभूषण प्रदान किया। चतुर्विध

धर्मसंघ से प्राप्त सम्मान को मैं स्वीकार करता हूं। अपने समस्त पूर्वाचार्यों का स्मरण करता हूं, शासनमाता को स्मरण करता हूं। हमारा धर्मसंघ साधाना, सेवा के अच्छे कार्यों में समय का नियोजन करे और दूसरों की भी आध्यात्मिक-धार्मिक सेवा करे। मैं सम्पूर्ण धर्मसंघ के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करता हूं।

इस नव्य, भव्य कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनिश्री दिनेशकुमारजी ने किया। इस दौरान अनेक प्रदेशों के श्रद्धालुओं ने भी अपनी-अपनी ओर से पूज्यचरणों में भेंट अर्पित की।

तपती गर्मी और प्रचंड आतप के बाद भी श्रद्धालुओं की आस्था अडोल रही और होने वाले कार्यक्रम के पल-पल को अपने पलकों पर सजाया और नयनों में ही नहीं, अत्याधुनिक उपकरणों में भी ऐसे संजोया मानों जीवन भर के लिए आध्यात्मिक थाति।

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य महाश्रमण जी के ६०वें जन्म दिवस पर
कोटि-कोटि वंदन

Vinod Kumar Bokaria
भ्रमणध्वनि : 9380681000
Oswal Trading Corporation
Office :
Old# 23, New#10, Venkatachalla Mudali Street, Chennai - 600 003, Ph- 25351393, Cciatrex#413045
Residence :
G-C, Shatrunial Apartment, 42/57, Vepery High Road, Vepery, Chennai - 600 007

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

ज्वेलर्स ब्लॉक इन्श्युरेन्स

★ सबसे अच्छी कंपनी द्वारा पॉलीसी और कम प्रीमीयम की गारंटी
★ लोकल सेफ एलाउड है, क्लाज में कोई समझौता नही
★ पोर्टाबिलीटी सुविधा पुरानी गुडविल के साथ
★ फिडेलीटी ईम्पलायी + थर्ड पार्टी
★ 3000+ ज्वैलर्स का इंश्योरंस हमारे साथ
★ आपके पुराने पॉलिसी को फ्री मे जाँच करवाएँ

लाईफ इन्श्युरेन्स

★ पाए 1,00,000/– टैक्स फ्री आपकी 100 वर्ष की उम्र तक,
सिर्फ @ 5,00,000/– वार्षिक 3 साल भरने पर
+ 80 लाख परिवार के लिए

★ पाए 1,00,00,000/– टैक्स फ्री 25 साल बाद,
सिर्फ @ 16666/– मासिक 16 साल भरने पर
+ 40 लाख से बढ़ती हुई रिस्क कवर

मेडीक्लेम

सिर्फ @1500/– मासिक में,
पाए 25 लाख की मेडीक्लेम परिवार के लिए
★ कैशलेस सुविधा उपलब्ध
★ रुम और ईलाज पे कोई लीमीट नहीं
★ पोर्टाबिलीटी सुविधा पुरानी गुडविल के साथ
★ कोई मेडीकल जाँच नही उम्र 60 तक

Legacy of 38 Years

25000 HAPPY CUSTOMERS INDIA & ABROAD

11000 Claims Solved

300 National & International Awards

वर्ष 2020–21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए है जिसमे पॉलीसी है ज्वैलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्श्युरेन्स, मेडीक्लेम, फायर एवं बर्गलरी.

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A

NICE™
INSURANCE LANDMARK
One Stop Insurance Solution in India !
हम देश विदेश में सभी ग्राहको को ऑनलाईन सुविधा द्वारा सेवा देते है.

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

26 A, Dagina Bazar, Mumbadevi Rd, Mumbai 400 002 | Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com
Contact: 9869230444 / 9869050031 / 022-22448800

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

करिश्माई दरवेश... बेमिसाल फकीर...

चारों तरफ ढेरों नेमतें मौजूद, पर उसे कुछ नहीं चाहिये जिन्दगी को सुकून से जीता, अपनी दूनिया में मशगूल, एक ऐसा अलमस्त जो किसी की आंखों में दर्द नहीं देख सकता। अमन और प्यार का पैगाम देने वाला, यहां से वहां घूमता, खानाबदोश सा अन्दाज़, उस नूरानी फकीर के करिश्माई किस्से हजारों जुबानों से सुने जा सकते हैं। मुल्क के पॉलीटिकल रहनुमा हों या बड़े-बड़े साइंसदा, कानूनगो, डॉक्टर, इंजीनियर एक से एक नामचीन हस्तियां, जिसके दर पर कदमबोसी को पहुंचती हों।

दुनियां की सारी नेमतों से बेपरवाह-बिना ख्वाहिश। तन पर एक चिन्दा तक नहीं। गजब का अजूबा है। कहते हैं जिसने भी उस फकीर की कदमबोसी की, वह खुशहाल मालामाल हो गया। तकरीबन ३० साल से मैं इस फक्कड शहनशाह के नजदीक आया। खरामा-खरामा इनको समझना शुरू किया। अमन, प्यार और हमदर्दी का पैगाम देने वाले मसीहा के दर पर गुजरा मेरा हर लम्हा, मेरी जिन्दगानी की बेशकीमती यादगार है। हर जानदार को प्यार करने वाला, मस्त मौला मिजाज का ये हैरतअंगेज फकीर बड़ी ही अजीबो-गरीब जिन्दगानी बिता रहा है।

भारत के कर्नाटक स्टेट के एक छोटे से गांव सदलगा में १० अक्टूबर १९४६ को पैदा हुए, इस करिश्में को बचपन से लोग प्यार से तोता कह कर बुलाते थे, पर तब लोग यह नही जानते थे कि यह तोता तो आसमानी है इन्सानों की बस्ती से उड़कर ये कही दूर कुदरत की आगोश में जा बैठेगा और हुआ भी यही। ३० जून १९६८ को अजमेर की सरजमीं पर इस नौजवान तोते ने दुनिया के सारे ऐशो-आराम छोड़ के अपना लिया फकिरी रास्ता और दुनिया को मिला एक करिश्माई दरवेश। लू भरी तेज गर्मी हो या फिर बर्फानी सर्द मौसमे हर हाल में जमीन पर ही या फिर मिल गया तो लकड़ी के पटिये पर ही सोना-बैठना, कभी भी कुछ नही ओढ़ना, अपने बालों को हर दो महिने में, अपने ही हाथों से उखाड़ डालना। चाहने वाले मुरीदों का दिया सादा साफ वेजीटेरियन खाना-पानी, चौबीस घंटे में केवल एक वक्त ही दिन में तकरीबन १०-११ बजे के आस-पास लेना और कभी-कभी तो वो भी नहीं। कम पेट (भर पेट तो कभी भी नहीं) दाना पानी बर्तन में नहीं सिर्फ अपने ही हाथों की हथेलियों में लेकर खाने वाला यह फकीर एक जिन्दा अजूबा है। कभी गुसल न करने के बावजूद जिस्म से नूरानी महक सी निकलती है। देखने में खूबसूरत गोरा-चिट्टा मुस्कराता हर वक्त हजारों लाखों की भीड़ से घिरा, फिर भी अपने में अकेला, बस अपनी रूहानी दूनियां में ही मस्त। कई बोलियों के इस जानकार ने जिन्दगी के फलसफे के अपने ही नजरिये को लेकर कई किताबें भी लिखी है, जिसके पास मोर पंखों का गुथा-बंधा सा एक गुच्छा, जिसे पिच्छी कहते हैं और सूखे हुए तूंबे-लकड़ी का सा बना,पानी के लिए कटोरदान, बस इतनी ही चीजें उसकी दुनियावी जिस्मानी जरूरतों के लिये काफी होती हैं।

कभी किसी गाड़ी घोड़ा की सवारी नहीं करना। कभी हरियाली पर पैर नहीं रखना। ७६ साल की उम्र में भी नंगे पैर पैदल ही, सैकड़ों हजारों मील का सफर करना, जिनके एक इशारे पर, एक से एक दौलतमंद अपनी तिजोरी की दौलत, उसकी बताई नेकी पर लुटाने को तैयार। बीमार बूढ़े जानवर परिन्दों के इलाज देख रेख के लिये कई सेन्टर, इनके एक इशारे पर खुल गए। इसी दरवेश के एक इशारें पर अरबों रूपयों का अस्पताल बीमारों-मजलूमों के इलाज के लिये खुल गया, जहां हर फिरके का जरूरतमंद बीमार अपना इलाज करा सकता है। भाग्योदय अस्पताल के नाम से बने इस दवाखाने में दुनियां की बेहतरीन मशीनरी के इन्तिजाम के साथ ही काबिल डाक्टर चौबीसों घंटे मौजूद रहते है और अब बन रहा है पूर्णायु आयुर्वेदिक अस्पताल, जिसमें जड़ी बुटियों से इलाज होगा, उस पर एक हैरतअंगेजी ये भी है कि ये फकीर कभी खुद दवा नहीं खाता। हरपीस जास्टर जैसी खौफनाक दर्द की बीमारी और नीम बेहोश कर देने वाले बुखार के बावजूद भी खुद के इलाज के लिये कभी दवां नहीं खाई, सिर्फ अपने अंदर की रूहानी ताकद से अपने जिस्म को ठीक कर लेता है। मोहब्बत, अमन और नेकी के मसीहा इस फकीर को लोग आचार्य विद्यासागर जी के नाम से जानते हैं। किसी शायर के कुछ अल्फाज़ याद आते हैं:

ऐसे दरवेशों से मिलता है हमारा शजरा।
जिनके कदमों में कई ताज पड़े रहते हैं।।

मैं खुशनसीब हूं जो मुझे इस दर पर दुआ मिली और इनके ही निगाहे करम से मैंने अपनी जिन्दगी को बेहतर बनाने की ओर कदम बढ़ाये हुये हैं।

- मुहम्मद शफीक खान

गुरूवर महाश्रमणजी को षष्टिपूर्ति वर्ष पर हमारा वन्दन! वन्दन!

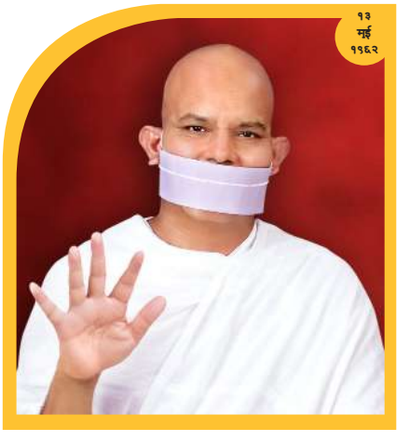

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

विजयराज सुराणा जैन

भ्रमणध्वनि: ९८६८८०७६८३

राजीव सुराणा जैन

भ्रमणध्वनि: ९८१००३०६७२

शुभम सुराणा जैन

SWASTIK

Marketing Company

Manufacturers & Dealers XLPE/PVC Armoured &
Unarmoured Telecommunication & Co-axial,
House Wiring & Submersible, Instrumentation

Ollvin
Connecting life...
WIRES & CABLES

B-35/3, Jhilmil Industrial Area, Delhi, Bharat -110095
Tel. : 011-42483038, 09312271615
swastikmarketing.70@gmail.com
www.ollvin.in

मै भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

षष्टिपूर्ति जन्म पर्व

तेरापंथाचार्य महाश्रमण जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म	: वि.सं. २०१९, वैशाख शुक्ला नवमी (१३ मई १९६२) सरदारशहर
जन्म नाम	: मोहनलाल दुगड़
पिता	: स्व श्री झूमरमलजी दुगड़
माता	: स्व. श्रीमती नेमादेवी दुगड़
दीक्षा	: वि.सं.२०३१ वैशाख शुक्ला चतुर्दशी (५ मई १९७४) सरदारशहर (आचार्य तुलसी की अनुज्ञा से मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' द्वारा)
अन्तरंग सहयोगी	: वि.सं. २०४२, माघ शुक्ला सप्तमी (१६ फरवरी १९८६) उदयपुर में
सांझपति	: वि.सं. २०४३, वैशाख शुक्ला चतुर्थी (१३ मई १९८६) ब्यावर में
महाश्रमण पद	: वि.सं. २०४६, भाद्रव शुक्ला नवमी (९ सितम्बर १९८९) लाडनूं में
युवाचार्य पद	: वि.सं. २०५४, भाद्रव शुक्ला द्वादशी (१४ सितम्बर १९९७) गंगाशहर में
आचार्य पदाभिषेक	: वि.सं.२०६७, द्वितीय वैशाख शुक्ला दशमी (२३ मई २०१०) सरदारशहर में
महातपस्वी	: वि.सं. २०६४, भाद्रपद शुक्ला पंचमी (१७ सितम्बर २००७) उदयपुर में
शान्तिदूत	: वि.सं. २०६८, ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी (२९ मई २०११) उदयपुर में
श्रमण संस्कृति उद्गाता	: वि.सं.२०६९, आश्विन कृष्णा चतुर्दशी (१४ अक्टूबर २०१२) जसोल में
अहिंसा यात्रा शुभारम्भ	: वि.सं. २०७१, मार्गशीर्ष बदी तृतीया (९ नवम्बर २०१४) दिल्ली से
प्रथम विदेश यात्रा	: वि.सं.२०७२, चैत्र शुक्ला एकादशी (३१ मार्च २०१५) वीरगंज (नेपाल)
प्रकाशित पुस्तकें	: आओ हम जीना सीखें, दु:ख मुक्ति का मार्ग, क्या कहता है जैन वाङ्मय, संवाद भगवान से (भाग-१, २), शिक्षा सुधा, शेमुषी, मेरे गीत,धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, महात्मा महाप्रज्ञ, सुखी बनो-संपन्न बनो-विजयी बनो, रोज की एक सलाह, शिलान्यास धर्म का, अदृश्य हो गया महासूर्य....

With Best Compliments From

GIRIAS®

The Consumer Durable People

MOST TRUSTED HOUSE HOLD NAME SINCE 1971

SINCE 1971

ELECTRICAL AND ELECTRONICS CONSUMER DURABLE PEOPLE

110 MEGA SHOW ROOMS

Showrooms at

YELAHANKA
Rudreshwara Chambers
Yelahanka New Town
Sharavathi Hotel Building
Ph: 48504464

COLES PARK
No.41 (Park Grand)
St John's Chruch Road
Ph: 25362525

MATHIKERE
Opp. Ramaiah Kalyana
Mantapa, Gokula
(Near BEL Circle)
Ph: 23450101

KATHRIGUPPE
Kathriguppe Main Road
Diagonally Opp. Big Bazar
Banashankari
Ph: 9035499288

MARATHAHALLI
Outer Ring Road
(Opp. Home Town)
Ph: 90354 99011

BANNERGHATTA ROAD
NS Palya, BTM 2nd Stage
(Next To Shoppers Stop)
Ph: 2678 3030

BANASHANKARI
Ring Rd Iliyas Nagar
Near Sarakki Signal
Ph: 2671 5654

GANDHINAGAR
1st Main Road
Ph: 2220 4189

BRIGADE ROAD
138, Shoolay Circle
Ph: 2211 8871

MYSORE ROAD
Opp. Indian Oil Bunk
Ph: 2674 1227

HOSUR ROAD
Near Silk Board Flyover
Ph: 2572 4947

INDIRANAGAR
100 Ft Road
Ph: 2520 2880

HRBR LAYOUT
Opp. Kalyan Nagar
Bus Depot
Ph: 90354 99177

SADASHIVNAGAR
Opp.Cauvery Theatre
Circle
Ph: 2361 2745

JAYANAGAR
Opp. Dayanand
Sagar Mantap
Ph: 90354 99077

RAJAJINAGAR
Next to National Public
School, WOC Road
Ph: 2311 9237

BASAVANGUDI
"Chitra Court" Sankaramutt Vani
Vilas Junction, Vanivilas Road
Ph: 90354 99244

KORAMANGALA
80 Feet Road
Sony Junction
Ph: 9035411200

NAGARABHAVI
Ring Road
Near BDA Complex
Ph: 2318 6902

HOSUR
4,Prabhu Complex
Post Office Road
Ph: 04344 243633

BRANCHES: ✶ HUBLI: 90354 99155 ✶ MANGALORE: 90354 99211 ✶ MYSORE: 90354 99099 ✶ DAVANGERE: 9591987864 ✶ DHARWAD: 9591987863 ✶ CHENNAI: 044 26264233 ✶ COIMBATORE: 0422 2230615 ✶ SALEM: 0427 2330734 ✶ THIRUVALLUR: 044 27663299 ✶ POLLACHI: 04259 220031 ✶ HOSUR: 04344 243633 ✶ MADURAI: 0452 2343733 ✶ TIRUPPUR: 0421 2243633

BANGALORE H.O.
GIRIAS INVESTMENT PVT LTD
#47,3rd Main Road, Near Tel. Exchange
Bangalore - 560 003
Ph: 080 41411663

CHENNAI
GIRIAS INVESTMENT PVT LTD
No 249, AH Block, 7th Main Road, 1st Street
Shanthi Colony, Chennai 600 040
Ph: 044 26223633.

SOUTH INDIA'S NO.1 CONSUMER DURABLE RETAILER.

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

निस्पृह व्यक्तित्व - आचार्य श्री महाश्रमण

एक अन्तरराष्ट्रीय विश्वविख्यात संस्थान द्वारा पूरी दुनिया के सभी देशों के सर्वेक्षण के बाद यह आंकलन प्रसारित किया गया कि विश्व में करीब ३६०० से ऊपर विभिन्न तरह की धार्मिक मान्यता, यानि अलग-अलग तरह की उपासना पद्धति वाले धर्म व विधियां प्रचलित हैं।

जैन धर्म: एक अन्य पक्ष यह है कि ईसाई, मुस्लिम, सनातन (हिन्दू), जैन, सिख, ब्राह्मणों आदि-आदि अनेकों बड़े धर्मसंघ हैं, जिनकी मान्यता मानने वाले करोड़ों की संख्या में हैं, उनके अनुयायी भी विश्व के अनेक देशों में फैले हुए हैं, इन्हीं में एक है जैनधर्म, जिसकी जड़ें हजारों-लाखों वर्षों पहले नहीं, बल्कि करोड़ों वर्ष पहले से जमी हुई है एवं जैन आज दुनिया के कई देशों में फैले हुए हैं। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) हुए थे, जिनकी तो काल-गणना भी मुश्किल है, इसके अन्तिम तीर्थंकर महावीर २६२१ वर्ष पहले हुए थे, उस समय इस धर्म का नाम श्रमण धर्म व जिन धर्म प्रचलित था, जो बाद में जैन धर्म के नाम से सुविख्यात हो गया।

तेरापंथ का प्रादुर्भाव: आचार्य रूघनाथजी जिनके एक शिष्य थे मारवाड़ प्रान्त के कंटालिया ग्राम के श्री भीखणजी। प्रतिभा के धनी, विद्वान व आगम शास्त्रों के ज्ञाता संत भीखणजी की किन्हीं तात्विक मान्यताओं पर वाद-विवाद से अपने गुरू से मतभेद हो गया, तब उन्होंने करीब २६२ वर्ष पहले सन १७६० में बगड़ी (पाली जिला) में उनसे सम्बन्ध-विच्छेद कर अपना अलग सम्प्रदाय स्थापित किया जो आज 'तेरापंथ' के नाम से पूरे भारत में सुविख्यात है।

जैन धर्म का विलक्षण संघ : तीर्थंकर महावीर के बाद जैन धर्म की यह एक विलक्षण घटना थी 'तेरापंथ' धर्मसंघ का उदयमान होना, यह किसी एक व्यक्ति की महत्वाकांक्षा का परिणाम नहीं था, परन्तु जैन आगमों व सूत्रों में उल्लिखित, परम्पराओं व सिद्धांतों को विकृत व कलुषित होने से बचाने एवं उनको पुनः प्रतिष्ठापित करने का महत्वपूर्ण प्रयास था। संत भीखण ने यह कार्य किया, अतः वो नवोदित तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम प्रवर्तक आचार्य बने। अन्य सम्प्रदायों में प्रचलित मान्यताओं से हटकर इसमें एक आचार्य यानि पूरे धर्मसंघ का एक ही सिरमोर आचार्य हो, यह सिद्धान्त बना।

इतिहास साक्षी है कि युवा सन्त तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के सर्वाधिक प्रभावी व क्रांतिकारी आचार्य साबित हुए, ऐसे महान आचार्य की तेरापंथ धर्मसंघ को सबसे बड़ी देन है करीब १५० मुनि सन्तों में से १७ वर्षीय मुनि मुदित के रूप में एक रत्न की खोज। यह उपरोक्त भूमिका इसी रत्न रूपी मुनि मुदित तक पहुंचने की कहानी है, जो कालान्तर में बना तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान ११वें पट्टधर आचार्य महाश्रमण, निस्पृह व्यक्तित्व के धनी महाश्रमण।

बचपन से ही अध्यात्म की ओर: मोहन का जन्म सरदारशहर कस्बे में श्री झुमरमलजी दुगड़ की भार्या श्रीमती नेमा देवी की कुक्षी से दिनांक १३ मई १९६२ में हुआ। आप चार भाई व तीन बहिनें थी। आपकी माता धार्मिक प्रवृति की महिला थी तथा साधु-साध्वियों की आराधना-सेवा में प्रायः जाती-आती थी। मोहन पर अपनी माता की धार्मिक वृत्ति का काफी प्रभाव पड़ा, अतः आपका भी मात्र ८ वर्ष की उम्र से ही साधु-साध्वियों की सेवा-आराधना में काफी झुकाव हो गया। सन १९७४ का मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनूं) का चातुर्मास सरदारशहर में था, यह एक बड़ा ही सुखद संयोग बना, मुनिश्री ने तो उनकी धार्मिक वृत्ति का खूब सिंचन किया।

बालक मोहन का अध्यात्म की ओर झुकाव तो बढ़ता ही गया, इनकी समझने व कंठस्थ करने की प्रवृत्ति काफी गजब की एवं समृद्ध थी। कहना नहीं होगा कि मात्र कुछ माह में मोहन ने पच्चीस बोल, तेरह द्वार, बावन बोल, गतागत, बासठिया, लघुदण्डक, पाना की चर्चा आदि सहित गाथा आदि थोकड़ों को कंठस्थ कर लिया एवं वापस दोहरा-दोहरा कर उनका शुद्ध उच्चारण भी सीख लिया, इसके साथ ही अपने शैक्षणिक विद्यालय में भी बराबर जाता था एवं अपनी पाठ्य पुस्तक पढ़ने व समझने में भी अव्वल दर्जे का छात्र था।

निर्णायक १२वां वर्ष : किशोर मोहन का १२वां वर्ष काफी निर्णायक साबित हुआ, पहले उसके मन में एक दुविधा थी कि मुझे गृहस्थ में रहना चाहिये या साधु बनना चाहिये, वो स्वयं ही अपने संस्मरणों में बताते हैं कि सन् १९७३ की सम्वत्सरी के दूसरे दिन आचार्य कालुगणी का निर्वाण दिवस था। सम्भवतः एक स्वर्गस्थ आचार्य जो किसी देवलोक में स्थित थे, उन्होंने भी उसकी प्रतिभा को जान लिया था कि इसके माध्यम से मेरे तेरापंथ धर्मसंघ का और अधिक शुभ भविष्य उजागर होने वाला है, तो उन्होंने उसे अपना भावी पट्टधर मानकर उसकी मानसिकता में ऐसा प्रवेश किया और उसने साधु जीवन स्वीकार करने का मानसिक निश्चय कर लिया एवं अपना हर कदम उस ओर बढ़ाने लगा।

शेष पृष्ठ १५ पर...

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य महाश्रमण जी के षष्टिपूर्ति विशेष दिवस पर
हमारा कोटि-कोटि वंदन!

MAGNUM ENTERPRISES

11, Camac Street, Kolkata, West Bengal, Bharat -700064

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ १४ से ... स्कूली शिक्षा भी शानदार तरीके से ग्रहण करते हुए मोहन ने धार्मिक शिक्षा व आराधना हेतु दिन-प्रतिदिन प्रगति करता गया। मुनि सुमेरमलजी का सरदारशहर में होने वाला चातुर्मास उसके जीवन का निर्णायक मोड़ आ गया, साथ के अन्य मुनि भी उसे सिंचित कर ही रहे थे। उनके बड़े भाई श्री सुजानमलजी द्वारा दीक्षा की अनुमति के पश्चात जल्दी ही दीक्षा का एक ऐसा शुभ मुहूर्त दृष्टिगोचर हो गया।

दीक्षा का निवेदन : उस समय आचार्यश्री तुलसी दिल्ली में अणुव्रत विहार (भवन) में प्रवासरत थे।

मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मोहन ने प्रवचन पंडाल में खड़े होकर अपनी उत्कृष्ट भावना ज्ञापित की, तब आचार्यप्रवर ने उसे दीक्षा की आज्ञा प्रदान कर दी, उनके परिवार की सरदारशहर में ही दीक्षा दिलाने का ज्यादा मानस था, अतः उनकी भावना को देखते हुए आचार्य तुलसी की आज्ञा से मुनि श्री सुमेरमलजी (लाडनूं) ने ५ मई १९७४ को सरदारशहर में गधैयाजी के नोहरे के प्रांगण में दो संतों को दीक्षा प्रदान कर दी एवं किशोर मोहन दूगड़ बन गया मुनि मुदित, उनके साथ अन्य थे जो पिछले अनेक वर्षों से मुनि सुमेरमलजी की सेवा में ही विरचित थे। दीक्षा के बाद मुनि मुदित का एकमात्र साथ रहा अध्यात्म ग्रन्थों का पाठन, कंठस्थ करना एवं अपनी स्वयं की साधना करना।

अनुपम मेधा : मुनि मुदित की मस्तिष्क ऊर्जा व स्मृति शक्ति काफी प्रखर थी जिसकी वजह से वह एक दिन में तीस से अधिक श्लोक याद कर लेते थे। पूर्व में याद किये हुए ज्ञान का पुनरावर्तन तो चलता ही था, शुद्ध व स्पष्ट उच्चारण की तरफ भी विशेष ध्यान रहता था। चातुर्मास की समाप्ति के बाद आचार्य श्री तुलसी सन् १९७५ को मर्यादा महोत्सव हेतु श्रीडूंगरगढ़ पधारे, तब मुनिश्री सुमेरमलजी भी उनके दर्शनार्थ वहां पधारे तब नवदीक्षित संत भी सभी साथ थे, जहां उन्होंने गुरूचरणों में समर्पित कर दिया। मुनि मुदित अगले दो वर्ष मुनिश्री सुमेरमलजी के साथ ही रहे, उसके बाद एक चातुर्मास आचार्यप्रवर के साथ सरदारशहर में किया एवं बाद में मुनि रूपचंदजी (संघमुक्त) के साथ जयपुर चातुर्मास के बाद उन्हीं के साथ दिल्ली पधार गये।

विशिष्ट घटना कर्म : तेरापंथ धर्मसंघ में घटित होने वाले एक विशेष घटनाकर्म का कोई पूर्व आभास नहीं देते हुए सन १९७९ के राजलदेसर मर्यादा महोत्सव पर आचार्य श्री तुलसी ने सर्वजनता को रोमांचित करते हुए अपने अति विद्वान संत श्री नथमलजी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करते हुए धर्मसंघ का युवाचार्य घोषित कर दिया, इससे पूर्व गंगाशहर में मुनि नथमलजी को ''महाप्रज्ञ'' अलंकरण से विभूषित किया था। युवाचार्यपद पर मनोनीत करने के बाद उनका नया नामकरण कर दिया गया ''युवाचार्य महाप्रज्ञ''।

संघनिष्ठा का महत्व : मर्यादा महोत्सव के बाद आचार्यश्री तुलसी युवाचार्य के साथ दिल्ली पधारे एवं कुछ दिन दिल्ली में विराजकर पंजाब की तरफ विहार कर गये एवं युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी अणुव्रत भवन में विराज रहे थे। मुनि रूपचंदजी अपनी कुण्ठा के आवेग को रोक नहीं सके एवं तेरापंथ धर्मसंघ से निकलने का निर्णय ले लिया, अब तक देखा यह गया है कि जब सिंघाड़पति धर्मसंघ छोड़ता है या निष्कासित किया जाता है तो उनके साथ के अन्य सभी संत प्रायः उसी के पास **शेष पृष्ठ १६ पर ...**

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

पृष्ठ १५ से ... रहने का निश्चय करते हैं, क्योंकि सिंघाड़पति के साथ वर्षों साथ रहने से उनका भावनात्मक लगाव हो जाता है। मुनि रूपचंदजी के साथ इस अवसर पर अन्य संत तो उनके साथ ही रहे, परन्तु अकेले मुनि मुदित ने कहा कि वह उनके साथ नहीं जाकर तेरापंथ धर्मसंघ में ही रहना चाहेंगे।

मुनि मुदित की छवि को चार चांद : अपने इस शानदार कर्तृत्व की वजह से मुनि मुदित का नाम काफी उजागर हो गया। युवाचार्यश्री ने भी इनको खूब सराहा एवं उनकी दृष्टि में मुनि मुदित के प्रति कुछ विशेष भाव जागृत हो गया और कहा कि यह मुनि काफी कर्तव्यनिष्ठ व संघनिष्ठ है, उन्हें उसके भविष्य में कुछ संभावनाएं नजर आने लगी, इन्हीं संभावनाओं ने मुनि मुदित को टेढी-मेढी गलियों से निकालकर राजपथ पर आरोहित कर दिया।

कर्तव्य बोध : मुनि मुदित इधर-उधर की अन्यान्य बातों पर बिलकुल भी ध्यान नहीं देते थे एवं पूरा समय अध्ययन, उपासना व अन्य संघ के कार्यो में बांट रखा था एवं उसी अनुरूप अपने को पूरा नियोजित कर रखा था।

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी के षष्टिपूर्ति जन्म पर्व पर शत् शत् नमन

Bikash Puglia

Mob: 98303 10068

29B, Rabindra Sarani, 2 Floor,
Room No -29, Near-Mayur Cinema,
Kolkata, West Bengal, Bharat -700073

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   Remove 'INDIA' Name From The Constitution

उपरोक्त संघनिष्ठा के गहरे कर्तृत्व से वो आचार्यप्रवर व युवाचार्यश्री दोनों की ही नजर में काफी ऊंचे उठ गये, अब उनका ध्यान विशेष तौर से मुनि मुदित पर केन्द्रित हो गया, इस तरह समय के साथ-साथ उनकी विशेषताएं उजागर होने लगी।

दो विशेष घटनाएं : सन १९८७ के दिल्ली चातुर्मास हेतु आचार्यप्रवर ससंघ जयपुर से दिल्ली पधार रहे थे। मैं स्वयं इस यात्रा में काफी समय स्वयं-सेवक के रूप में साथ ही रहा, साधु-साध्वियां किसी विशेष कार्यो हेतु मुझे स्मरण कर लेते थे। पालम हवाई अड्डे के पास आते-आते कुछ बाल साधुओं ने हवाई अड्डा देखने की इच्छा मुझसे प्रकट की। मैंने आचार्यप्रवर को संतों के मानस की बात बताई तो उन्होंने अनुमति प्रदान कर दी। ६-७ बाल साधु इस हेतु मेरे साथ जाने को उत्सुक व प्रसन्न थे, जब मुनि मुदित से इस सम्बन्ध में कहा गया तो उन्होंने आचार्यश्री के सेवा में साथ ही रहने की बात कहकर हवाई अड्डा देखने जाने हेतु इन्कार कर दिया।

चातुर्मास में पूरा संघ अणुव्रत भवन में विराज रहा था, उन्हीं बाल संतों ने मुझसे अप्पुघर देखने की इच्छा प्रकट की, वो स्वयं तो आचार्यप्रवर से आज्ञा लेने में संकोच कर रहे थे, अतः मुझे आगे किया, मैंने जब निवेदन किया तो आचार्यश्री ने मेरी तरफ टेढी आंख से देखा, मानो कुछ रूष्ठ से हों, संत दूर से छिपकर देख रहे थे, मैं तो हट ही गया, संतगण भी तुरन्त इधर-उधर हो गये, सम्भवतः मधुकर मुनि के परामर्श या कहने से मुझे एक-दो दिन बाद निर्देश दिया गया कि इन्हें अप्पु घर दिखा लाओ, परन्तु समय कम ही लगाना, तब मेरे साथ ७-८ सन्त हो गये एवं जब मुदित मुनि से पूछा गया तब अपना पाठ पूरा करने का कहकर साथ जाने से इन्कार कर दिया, इस पर कुछ साथी संतों ने हल्का सा व्यंग्य भी कस दिया।

इन उपरोक्त दोनों घटनाओं से पाठक समझ सकते हैं कि मुदित मुनि अपने कार्यों व कर्त्तव्यों के प्रति कितने जागरूक थे एवं इस तरह के अन्य कार्यों में अपना समय बिलकुल भी नहीं देना चाहते थे। जाते व वापसी आने पर संतों ने आचार्यप्रवर का दर्शन किया तो मुदित मुनि को नहीं देखकर उन्होंने मुझसे इस बारे में पूछा भी, यह ऐसी घटनाएं थी जिस वजह से मुनि मुदित धीरे-धीरे आचार्यप्रवर की नजरों में प्यारे लगने लगे।

आचार्य सेवा का अवसर : उस काल में सुबह शाम साध्वियां सभी पंचमी हेतु ठिकाने से बाहर खुली जगह में जाते थे तब पानी का पात्र अपना-अपना साथ ले जाते थे, आचार्य तुलसी का पानी का पात्र वर्षों से मुनि श्री मधुकरजी ले जाते थे। घटना ८ मई १९८४ की लाडनूं की है जिस दिन मुनि मुदित का जन्म दिन भी था, आप २२ वर्ष **शेष पृष्ठ १७ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी के पदाभिषेक एवं षष्टिपूर्ति समारोह पर शत् शत् नमन

Shanti Kumar Jain
Chairman
Mob. : 9811225575
Sangeet Jain
Director

Samman Lal Sher Singh
Papers Pvt. Ltd.

B-11, 2nd Floor, Gujranwala Town, Part-1, Delhi,
Bharat - 110009 Ph. : 91-11-47013305-06-07-08
Fax : 91-11-47091716
e-mail : shantijain@sammanlal.com www.sammanlal.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के जन्म दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

Pramod Kothari
Mob : 94350 63678

Luit Nagar, Mullapatty, Haibargaon,
Nagaon, Assam, Bharat - 782002

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ १६ से ... के पूरे हो रहे थे, उस दिन आचार्यश्री तुलसी ने मुनि मुदित को निर्देश दिया कि अब से पानी का पात्र तुम लेकर मेरे साथ जाया करो। आचार्यों की सेवा का यह एक विशेष अवसर था जो उनको जन्मदिन के उपहार के रूप में मिल गया, इस वजह से मुनि मुदित को आचार्य व युवाचार्य के साथ निश्चित रूप में दोनों समय साथ रहने व उनकी सेवा व बात करने का वरदान सा मिल गया, इससे कुछ नई बातें जानने-सुनने का अवसर व नये श्रावकों से परिचय बढ़ने का भी सहज ही नये-नये अनुभव प्राप्त करने का अच्छा मौका मिलता था।

जोधपुर चातुर्मास में आचार्यप्रवर के प्रातःकालीन प्रवचन से पहले का प्रवचन देने का मुदित मुनि को निर्देश दिया गया, इस तरह पूरे चातुर्मास काल में उन्होंने आगम आधारित विषयों पर अपना प्रवचन देते, उससे उनकी ज्ञान के विकास का बेहतर अवसर व भाषण कला के अधिक विकास व सुधार का सहज अवसर मिला, बाहर आये श्रावकों से वार्ता करने व अन्य संघीय जानकारी व परिचय बढ़ाने का अन्यान्यों की अपेक्षा विशेष अवसर मिलने लगा।

युवाचार्यश्री के सहयोगी : ६ फरवरी १९८६ उदयपुर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्यप्रवर ने फरमाया कि युवाचार्य महाप्रज्ञ को अनेक तरह के कार्य करने होते हैं, अतः उन्हें एक सक्षम सहयोगी की अत्यन्त अपेक्षा है, अतः इस हेतु मुदित मुनि को उनका अन्तरंग सहयोगी रूप में नियुक्त कर रहा हूं एवं वो युवाचार्यश्री के हर कार्य में पूर्ण सहयोगी रहेंगे, इस दायित्व से मुदित मुनि का कार्य क्षेत्र काफी बढ गया, वो पहले आत्मकेन्द्रित ज्यादा थे, अपने में ही मस्त व व्यस्त रहने वाले को अब व्यापक क्षेत्र में काम करने का अवसर मिलने लगा, इससे उनके अनुभव व सम्पर्क का विस्तार होने लगा।

सांझपति का सम्मान : दीक्षा लेने के अनेकों वर्षों तक साधु-साध्वियों को किसी अन्य वरिष्ठ साधु के साथ रखा जाता है, जब वह स्वयं ही काफी योग्य व अन्य योग्यताएं प्राप्त कर लेता है तो उसे सिंघाड़पति/सांझपति बना दिया जाता है। १३ मई १९८६ में ब्यावर में मुनि मुदित को भी यह सम्मान प्राप्त हो गया, यह आचार्य द्वारा उनका विशेष अंकन है, जो उन्हें प्राप्त हुआ।

महाश्रमण पद से विभूषित : तेरापंथ धर्मसंघ में इससे पूर्व कोई भी सन्त श्रमण (साधु) से महाश्रमण पद पर सम्मानित नहीं हुआ था, यह पहला अवसर था जब गुरू तुलसी ने अपने शिष्य की विशेष योग्यता का अंकन करते हुए अपने स्वयं के जन्म दिवस **शेष पृष्ठ १८ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!

पृष्ठ १७ से... पर ९ सितम्बर १९८९ को लाडनूं में इन्हें महाश्रमण पद से विभूषित किया। मुनि मुदित की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए प्रफुल्लित मन से एक विशेष नियुक्ति-पत्र प्रदान किया गया। अध्यात्म निष्ठा, साधना, शिक्षा, सेवा, विमम्रता, संघनिष्ठा, गंभीरता आदि विशेषताओं को ध्यान में रखकर मैं मुनि मुदित कुमार को 'महाश्रमण' के पद पर नियुक्त करता हूं।

◆ धर्मसंघ में युवाचार्य के बाद इनका स्थान रहेगा।

◆ यह युवाचार्य के कार्य में सतत सहयोगी रहेगा।

◆ युवाचार्य की तरह साध्वियों, समणियों को पढ़ाना इसके कार्यक्षेत्र में रहेगा।

◆ आहार पानी समुच्चय में होगा।

◆ सब प्रकार का विभागीय कार्यो व संघीय बोझ की पांती से मुक्त रहेगा।

- आचार्य तुलसी
९-९-१९८९

समस्त जैन पंथो की एकमात्र पत्रिका व 'जैन एकता' के लिए प्रतिबद्ध 'जिनागम' के प्रबुद्ध पाठक अवलोकन करें कि एक गुरू ने अपने विनीत शिष्य हेतु उन सब उच्च मानवीय गुणों वाले शब्दों को प्रयुक्त करके उसे सम्मानित किया। अपने प्रवचन में आचार्य तुलसी ने उनको अनेक करणीय कार्यों का निर्देश देते हुए कहा कि वह संघीय कार्य करने हेतु अपना विकास करे। उपस्थित दर्शकों ने उनकी भावना व भावी संकेत को खूब अच्छी तरह समागत कर लिया एवं मुनि मुदित महाश्रमण के रूप में सबकी नजरों में अनेकों पायदान ऊपर उठ गये।

स्वतंत्र यात्रा : मुनि मुदित अपने शुरू के वर्षों में केवल स्वयं के अध्ययन में केन्द्रित ज्यादा रहते थे। न तो हवाई अड्डा देखने गये और न ही अप्पू घर का आकर्षण उन्हें खींच पाया। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी सन १९८७ के चातुर्मास में अणुव्रत भवन पधारे। प्रायः सभी सन्त उन्हें देखने व कार्यक्रम में नीचे हॉल में आ गये परन्तु मुनि मुदित प्रथम तल के अपने ही कक्ष में अपने अध्ययन में केन्द्रित रहे। आत्म संयम का यह विशेष उदाहरण है, यद्यपि युवाचार्यश्री के साथ जुड़ने में अन्य कार्यो में भी अपने आपको नियुक्त करने लगे थे। आचार्य तुलसी एक प्रयोगधर्मी व व्यावहारिक प्रशिक्षण देने वाले महापुरूष (गुरू) थे। उन्होंने मुदित को हर विद्या में पारंगत करने हेतु उनकी स्वतंत्र यात्रा का चिंतन करते हुए उन्हें अपनी जन्मभूमि सरदारशहर व आसपास के क्षेत्रों में विचरण हेतु भेजा, अनेकों संतों-सतियों के साथ करीब ५० दिनों में १५-२० क्षेत्रों में गये, वहां प्रवचन दिया स्थानीय लोगों से परिचय किया तथा उन्हें अध्यात्म की रश्मियों से आप्लावित करके सभी को संतुष्ट किया, अनेकों अनुभव प्राप्त किया।

यात्रा के अन्त में खाटू में जब दर्शन किये तो युवाचार्य महाप्रज्ञ उनके स्वागत हेतु पण्डाल से बाहर पधारे तथा आचार्यश्री भी पट्ट से उतरकर

अपने प्रिय शिष्य को गले से लगाकर उसके प्रति खूब प्रमोद भावना व आनन्द व्यक्त किया। ऐसा लग रहा था मानो ५० दिनों बाद नहीं बल्कि ५० माह बाद मिल रहे हों, दोनों ओर ही ऐसा आभास हो रहा था। श्रावकगण भी इस आनन्दमय मिलन समारोह को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता अनुभव कर रहे थे।

अकल्पनीय उदाहरण : सन १९९० के चातुर्मास के बाद आचार्यश्री व युवाचार्यश्री ने महाश्रमणजी को बाड़मेर-सोजत **शेष पृष्ठ १९ पर...**

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर
अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी,
शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के जन्म
दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

Rajesh Chhajer
Mob : 9840135819

Krishna Enterprises
Importer Plastic Raw Material
Office :
6, Gandhi Street, Kodaiangur, Chennai - 600 118
Ph: 25546799 Email : krishna7ent@yahoo.co.in

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ १८ से... आदि जिले की स्वतंत्र यात्रा हेतु भेजने से अत्यन्त ही भावपूर्ण विदाई दी, जब लम्बी यात्रा के बाद वापस लौटे तो उस तरह उनका हृदयंगम दृष्य वाला स्वागत किया, अपने उदगारों के मध्य आचार्य श्री तुलसी ने महाप्रज्ञजी से प्रश्न किया 'इस श्रमशील अनुपम यात्रा का इन्हें क्या उपहार प्रदान करू'? चारों तरफ सन्नाटा, कोई भी कुछ बोलने की स्थिति में नहीं था। उसका उत्तर भी स्वयं ही दिया जो अकल्पनीय व अनोखा था। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु ने अपने शिष्य भारमलजी से कहा कि तुम पर कोई इल्जाम (आरोप) लगाये, चाहे वो मिथ्या ही हो, फिर भी तुम्हें तेले की तपस्या करनी होगी, अब में भी इसे ऐसा ही कुछ अनोखा देने वाला हूँ।

चारों तरफ सन्नाटा पसर गया, उपहत करते-करते कौन सा दण्ड देंगे। गुरूदेव बोले महाश्रमण! तुम्हारे पर भी कोई व्यक्ति सुविधावाद अपनाने या उसकी तरह का अपनी तरफ से कोई ऐसा आरोपित करे तो तेला जैसी कड़ी तपस्या तो नहीं, परन्तु तीन दिन लगातार तीन-तीन घण्टे का ध्यान करना होगा, क्या कुछ ऐसा हुआ है?

पूरा पण्डाल इस अनोखे उपहार को सुनकर चिंतन के मध्य आ गया, महाश्रमणजी ने करबद्ध यह स्वीकार किया कि भविष्य में इसका विशेष ध्यान रखूंगा कि सुविधावाद मेरे व संघ के आसपास भी नहीं पनपे।

गुरू द्वारा इस माध्यम से अन्यों को भी यह एक अनोखी सीख थी।

अगले वर्ष अध्यात्म साधना केन्द्र दिल्ली में आयोजित मर्यादा महोत्सव पर इसका विधिवत पदाभिषेक समारोह आयोजित किया गया। तेरापंथ के इतिहास में इतना अनोखा व इतना शानदार विशाल आयोजन पहली बार हुआ था। आचार्य तुलसी ने अनुष्ठानपूर्वक शास्त्रीय विधि विधान से उन्हें आचार्यपद पर प्रतिष्ठापित किया, उसके बाद उन्होंने महाश्रमणजी को खड़ा करके एक लिखित पत्र सौंपा, जिसका विवरण निम्न है--

अर्हम्

महाश्रमण मुनि मुदितकुमार आचार्य महाप्रज्ञ के गण संचालन के कार्य में सतत सहयोगी रहे तथा स्वयं गण-संचालन की योग्यता विकसित करें, इसके लिये अवशेष जो करणीय है वह उचित समय पर आचार्य महाप्रज्ञ करेंगे।

५ फरवरी १९९५, रविवार

-गणाधिपति तुलसी

इसके वाचन व सुपुर्दगी के बाद वहां उपस्थित किसी भी व्यक्ति को सन्देह नहीं रहा कि अब महाप्रज्ञ के युवाचार्य एवं भावी आचार्य महाश्रमणजी होंगे। महाश्रमण मुदित ने अपने दोनों गुरूओं के मध्य अपनी योग्यता की इतनी पैठ जमा दी थी कि भावी आचार्य की स्पष्ट संभावनाएं नजर आ गई।

गुरू का प्रोत्साहन : महाश्रमणजी को अपने दोनों ही गुरुओं से काफी प्रोत्साहन मिला तथा प्रायः किये जाने वाले कार्य उनके माध्यम से करते या करवाते थे, ताकि वह उनसे जुड़ जावे व जान जावें। आचार्य तुलसी ने तो यह भी निर्देश दे रखा था कि मैं जब भी तुम्हें बुलाऊं तब कलम व डायरी साथ लेकर आया करो, ताकि जो भी नई बात ध्यान में आवे, उसे लिखाया जा सके। महाश्रमणजी रात्रि में गुरूदेव तुलसी के पट्ट के पास ही सोते थे ताकि जब वो उन्हें या कोई व कैसा भी कार्य हो वह तैयार रहें। आचार्य तुलसी ने तो एक बार प्रवचन में कहा कि यदि कोई मुझसे पूछे कि संत कैसा हो तो मैं मुनि मुदित को प्रथम पंक्ति में रखूंगा, इसकी शालीनता, सहनशीलता एवं एक संत के सभी गुणों का समावेश है, उन्होंने तो **शेष पृष्ठ २० पर ...**

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर
अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी,
शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के जन्म
दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

शुभकरण नवरतन सुनील हिरण

आर. के. मेन्यूफेक्चरिंग कंपनी

प्लॉट नं. ए-395, टीटीसी इंडस्ट्रियल एरिया,
एमआयडीसी, महापे, नवी मुंबई, महाराष्ट्र, भारत 400710.
भ्रमणध्वनि : 9821279990 (गंगापुर-वाशी)

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी के
पदाभीषेक एवं षष्टिपूर्ति समारोह पर शत् शत् नमन

Himmat Bardia
Mob: 9830135666

HIMMAT ELECTRIC CO.

16, Ganesh Chandra Avenue, Kolkata - 700 013

HIMMAT ELECTRICALS & ELECTRONICS

54, Ezra Street, Kolkata - 700 001

Crompton Greaves | Bharat Bijlee | Schneider Electric | SIEMENS | Kirloskar

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १९ से ... अपनी डायरी में लिखा कि महाश्रमण मुदित कुमार मेरा सहज सेवाभावी शिष्य है, मैं भविष्य के लिये निश्चिंत हूं।

गंगाशहर चातुर्मास: सन १९९७ का चातुर्मास वहां घोषित था, सभी वहां सानन्द विराज रहे थे। गुरूदेव तुलसी के अकस्मात देवलोक गमन होने पर आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपना भावी उतराधिकारी (युवाचार्य) मनोनयन करने हेतु। १४ सितंबर १९९७ की तिथि घोषित कर दी। चोपड़ा हाई स्कूल के प्रांगण में निर्मित विशाल भव्य पण्डाल में एक लाख से अधिक व्यक्तियों की उपस्थिति थी। यद्यपि अधिकांश को नाम की निश्चिंतता थी, फिर भी घोषित होने से पहले पूरा उहापोह व्याप्त था। तेरापंथ के दशम अधिष्ठाता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपनी भूमिका वक्तव्य के बीच में शुभ मुहूर्त आते ही कहा-''उष्ठित मुनि मुदित'' नाम सुनते ही एकाएक ही लाखों हाथ प्रसन्नता की गर्जना के साथ उठ गये एवं जब उत्तराधिकार पत्र का वाचन किया तत्पश्चात जनता जय-जयकार करने लगी।

युवाचार्य नाम की घोषणा के बाद आचार्यप्रवर ने आगम श्लोकों एवं आर्षवाणी का उच्चारण करते हुए एक नई चादर पछेवड़ी उन्हें ओढाई एवं आलिंगनबद्ध करते हुए अपने समीप पट्ट पर बैठाया कहा:

अर्हम्

ऊँ णमो भगवते ऋषभाय, ऊँ णमो भगवते पार्श्वनाथाय, ऊँ णमो भगवते महावीराय श्री भिक्षु, भारीमाल, ऋषिराय, जयाचार्य, मघवा, मणिक डालचन्द, कालु, तुलसी गुरूभ्यो नमः।

मैं तेरापंथ के दशम आचार्य के दायित्व का निर्वाह कर रहा हूं अब मैं अनुभव कर रहा हूं मुझे आचार्य के सर्वोत्तम और सबसे अधिक महत्वपूर्ण कर्तव्य की अनुपालन करनी चाहिये। तेरापंथ धर्मसंघ भिक्षु शासन की गुरू-परम्परा का अक्षुण्ण रखने के लिये मुझे अपने उतराधिकारी की नियुक्ति करनी चाहिये, मैं अपने परम अराध्य गुरूदेव तुलसी के साक्ष्य से मुनि मुदितकुमार को अपने उतराधिकारी के रूप में युवाचार्य पद पर नियुक्त करता हूं। मुझे विश्वास है कि यह अध्यात्म निष्ठा, अनुशासन विनम्रता और आचारनिष्ठा के साथ भिक्षु शासन की गरिमा बढ़ाता रहेगा। **१० सितम्बर, १९९७**

-आचार्य महाप्रज्ञ

तत्पश्चात आचार्यप्रवर ने फरमाया कि इनका नाम मुदित है एवं गुरूदेव तुलसी ने इन्हें 'महाश्रमण' का पद दिया था, अब मैं इनका नाम ही बदल कर 'महाश्रमण' कर रहा हूं। भविष्य में यह युवाचार्य महाश्रमण के नाम से प्रसिद्धि पायेंगे व पहचाने जायेंगे। आचार्य प्रवर ने उनके प्रति अनेकों अपनी शुभकामनाएं व आशायें, आकांक्षाएं प्रकट की, तत्पश्चात युवाचार्य महाश्रमण ने अपने अति भावपूर्ण शब्दों में पूर्व आचार्यों-युवाचार्यों के प्रति अपना आदर भाव व्यक्त करते हुए अपने संसारपक्षीय माता-पिता का भी स्मरण किया कि मेरे पर उनका अति उपकार है, जिस वजह से आज मैं इस मुकाम तक पहुंच पाया हूं। उन्होंने अपनी आत्मनिष्ठा, श्रद्धानिष्ठा व कार्यनिष्ठा सभी भावों को प्रकट करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ की सर्वोत्तम सेवा करने को वचनबद्ध हुए। महाश्रमणजी ने अपने उद्बोधन में साध्वीप्रमुखाश्री व अन्य सभी बड़े-छोटे संतों के प्रति अपना अभिवादन व सद्भावना प्रकट की, साथ ही पूरे तेरापंथ धर्मसंघ की उत्कृष्ट सेवा हेतु अपने आपको समर्पित कर दिया।

पट्ट का उपयोग - युवाचार्य बनने के बावजूद वो पहले की ही तरह रात्रि में नीचे ही सोते थे। पद प्राप्ति के बाद भी वो किसी भी तरह की विशेष सुविधाएं ग्रहण नहीं करना चाहते थे। आचार्यप्रवर को ज्ञात होने पर उन्हें सोने व बैठने हेतु पट्ट का प्रयोग करने का निर्देश दिया गया।

अणुव्रत प्रेक्षा यात्रा - फरवरी २००० में 'तारानगर' मर्यादा महोत्सव की सम्पन्नता पर आचार्य महाप्रज्ञजी के निर्देश पर नोहर, अबोहर, हनुमानगढ, गंगानगर आदि क्षेत्रों की स्वतंत्र यात्रा की, जिसका विशेष उद्देश्य था आध्यात्मिक व नैतिक चेतना का जागरण, अणुव्रत, जीवन विज्ञान आदि का प्रचार-प्रसार एवं क्षेत्र के परिवारों के अध्यात्म भावों को ज्यादा पुष्ट करना, उनकी सार-संभाल करना।

कष्टप्रद पहाड़ी यात्रा- नवम्बर २००३ में महाश्रमणजी ने मध्य प्रदेश के कुछ क्षेत्रों की यात्रा की, जो प्रायः पहाड़ी व दुर्गम जंगली रास्ता था। २५ दिनों में ३३२ किलोमीटर की यात्रा करके करीब ३२ गांवों को स्पर्श करते हुए वहां पर अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान आदि का काफी प्रचार-प्रसार किया एवं हजारों व्यक्तियों को नशामुक्त जीवन जीने का संदेश देते हुए स्कूलों के सैकड़ों छात्रों को संकल्पबद्ध भी किया। क्षेत्र के केवल जैनी ही नहीं अन्य सभी समुदाय के लोग जो सम्पर्क में आये वो सभी लाभान्वित हुए।

तेरापंथ का शुभ भविष्य - युवाचार्य महाश्रमण ने १३ मई २००५ को जब ४४वें वर्ष में प्रवेश किया। गुरू ने अपने शिष्य को आशीर्वचन देते हुए कहा कि 'विनम्रता, सहिष्णुता, क्षमा, संतोष व सरलता के साथ मन प्रसन्नता, ये ऐसे गुण हैं जो केवल व्यक्तित्व का ही निर्माण नहीं करते, अपितु समाज के लिये भी वरदान बन जाते हैं। अतः युवाचार्य के हाथों तेरापंथ का शुभ भविष्य सुरक्षित है।

महाश्रमण के विशिष्ट गुण - सन २००८ में जयपुर में ''युवादृष्टि'' पत्रिका में वो कहते हैं कि 'जनता भगवान के तुल्य होती है, जनता की सेवा करना भगवान की सेवा करना होता है, इससे मुझे कर्म **शेष पृष्ठ 22 पर...**

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी के पदाभिषेक एवं षष्टिपूर्ति समारोह पर शत् शत् नमन

नवरत्न कुमुद बच्छावत

DJ BROTHERS

Admin Offfice: No. 307, Bhanwar Apt., 10th Cross, Near Adagi Hospital, Wilson Garden, Bangalore, Karnataka, Bharat-560027

Head Offfice: Plot No.33, INDIA FOOD PARK, KIADB Industrial Area, Vasanthanarasapura, 3rd Phase, Kora Hobli, Tumkur District, Bangalore, karanataka, Bharat-572139

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के जन्म दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

HONDA सच कर देंगे सपने

Vinod Dugar

Mob: 9831052020, 9831043111, 6290822990, 8420102153

Dugar Honda

Teghoria, VIP Road (Opp. Big Bazaar)
Near Dum Dum Airport, Kolkatta,
West Bengal, Bharat-700052,
Branch: Club Town Greens
Next to Vodafone Store, Bangur

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

'जैन एकता' से ही जैन समाज का
होगा विकास व बढ़ेगा सम्मान
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

Dulichand Bokaria

Mob: 9435409629

OSWAL BROTHERS

Deals in: All Type of Plastic
Household, Kitchenware & Crokery

14-A, Suraj Market, H.B. Road, Fancy Bazar,
Guwahati, Assam, Bharat-781001
दूरध्वनि: 0361-2547376, 2638993,
अणुडाक: oswalbros@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

!! ॐ अर्हम् !!

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य महाश्रमण जी के ६०वें जन्म दिवस पर
कोटि-कोटि वंदन

Khemchand Mukim Mob :9999102249

SRIMATI GEMS & JEWELS

100% buy back policy*

*T&C apply

A wide variety of Diamond, JADAU, Gold Jewellery and exclusive SILVER FURNITURE at wholesale prices.

Authentic Jewellery is your right and our commitment...

4835-36,24 Ansari Roach Darya Garth New Delhi-110002
Website: sgiindia.com, E-mail: sgi.delhi@gmail.com
Contact: 8588977777, 011-23254470, 23244472

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

पृष्ठ २० से ... निर्जरा का लाभ मिलता है, सेवा भी होती है और दायित्व का निर्वहन भी होता है।'

आचार्य महाप्रज्ञजी ने एक अवसर पर कहा 'महाश्रमण पहले बहुत एकान्तवासी थे, अकेले रहना, अपने आप में ही रहना इनकी पसन्द थी, अब इतने बदल गये हैं कि जनता को भगवान मानने लगे हैं। महाश्रमण प्राणवान व्यक्ति हैं एवं उसके तीन आधार बिन्दु हैं-सत्य, श्रद्धा और तप। महाश्रमणजी इस बात के लिये बहुत जागरूक रहते हैं कि मुझे किंचित मात्र भी असत्य का दोष नहीं लगे, जब एक गुरू अपने शिष्य के लिये ऐसे शब्दों को प्रयोग करे तो उसकी विशिष्टता तो स्वतः ही उजागर हो जाती है।

अहिंसा यात्रा- आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के नेतृत्व में शुरू होकर जोधपुर, अहमदाबाद, सूरत, मुम्बई, जलगांव, सिरियारी, जयपुर आदि मुख्य स्थलों के स्पर्श व चातुर्मास करते हुए एक लम्बा यात्रा वृत हुआ, जिसकी पूरी संयोजना युवाचार्य महाश्रमणजी की रही। यात्रा के मुख्य दो उद्देश्य रहे, पहला अहिंसक चेतना का जागरण और दूसरा नैतिक मूल्यों का विकास, इस हेतु अनेकों कार्यक्रम हुए, जिसमें लाखों व्यक्ति प्रभावित हुए। हजारों विशिष्ट लोगों से युवाचार्यश्री का सम्पर्क हुआ एवं इस विशिष्ट उद्देश्योपरक सम्बन्ध में अनेकों साथ के कार्यक्रम संयोजित हुए। सन २००९ में सुजानगढ़ में यात्रा की परिसम्पन्नता करके उस वर्ष का चातुर्मास जैन विश्व भारती में किया गया।

सरदारशहर पदार्पण - सन २०१० का श्रीडूंगरगढ का मर्यादा महोत्सव सम्पन्न कर चातुर्मास हेतु सरदारशहर पधार गये। सन ९ मई २०१० की भरी दोपहरी में सरदारशहर में तेरापंथ के दसवें महासूर्य का अस्त हो गया। केवल तेरापंथ धर्मसंघ ही नहीं बल्कि पूरा जैन धर्म संघ व अन्यान्यों ने भी इसे अपूरणीय क्षति माना।

११ वें आचार्य महाश्रमण - तेरापंथ परम्परा के अनुसार वो आचार्य बन गये एवं उनके पदाभिषेक का अत्यन्त भव्य व विशाल समारोह सरदार शहर के गांधी विद्या मंदिर के विशाल प्रांगण में २३ मई २०१० में सम्पन्न हुआ, जिसमें भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी सहित अनेक राजनेताओं, विद्वानों की उपस्थिति में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के निर्देशन में सम्पन्न कार्यक्रम में अपना पद ग्रहण किया। नव प्रतिष्ठित आचार्यश्री ने काफी भावपूर्ण उदगार व्यक्त करते हुए निम्न संकल्प भी स्वीकार किये-

- मैं तेरापंथ की परम्परा, मर्यादा, आचार-विचार और साचारी की एकता को अक्षुण्ण रखने का पूरा प्रयास करूँगा।
- मैं तेरापंथ धर्मसंघ के दायित्व का पूर्ण निष्ठा के साथ निर्वाह करूँगा।
- मैं तेरापंथ के व्यापक दृष्टिकोण एवं कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करूँगा। इसके साथ चतुर्विध धर्मसंघ द्वारा अपने-अपने स्तर पर अपने दायित्व, कर्तव्य व करणीय कार्य एवं आचार्य के प्रति पूर्ण निष्ठा का भावपूर्ण भाषा में खड़े होकर स्वीकार किया। आचार्यप्रवर ने भी वहां उपस्थित अपने से बड़े (रत्नाधिक) सन्तों को वन्दन व साध्वीप्रमुखा आदि साध्वियों का अभिवादन किया, इस अवसर पर महाश्रमणजी ने अपने को दीक्षा प्रदान करने वाले मुनिवर श्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' को विशेष सम्मान भाव से स्मरण किया, जो उस समय वहां उपस्थित नहीं थे। कार्यक्रम अत्यन्त ही भव्य व गरिमापूर्ण था। सन २०१० का सरदारशहर का चातुर्मास, जैसा पूर्व में निर्धारित था, घंटाघर रोड पर स्थित नवनिर्मित विशाल व भव्य तेरापंथ भवन में सम्पन्न हुआ। पारम्पारिक कार्यक्रमों के अलावा कुछ विशेष कार्यक्रम भी आपके सान्निध्य में आयोजित हुए, उन्होंने पदाभिषेक के समय ही घोषित कर दिया था कि पूर्व निर्धारित चातुर्मासों व अन्य कार्यक्रमों का जो गुरूदेव की अवस्था की वजह से पूर्ण नहीं किये जा सके थे, अब वो सब पूरे किये जायेंगे।

उस अनुरूप चातुर्मास की समाप्ति पर सबसे पहले उन्होंने उन सभी स्थानों का स्पर्शन किया जहां वयोवृद्ध व अशक्त साधु-साध्वियां स्थिरवास थी, वो योजनाबद्ध व कार्यक्रम के अनुसार अपना कार्य सम्पन्न करने वाले आचार्य बनें। यहां तक आप अपने समय का हर मिनट का सदुपयोग व निर्धारण करते रहते हैं। अनेक स्थानों का भ्रमण करते हुए जब चातुर्मास केलवा में किया किया, बतादें कि केलवा तेरापंथ धर्मसंघ का अति विशिष्ट ऐतिहासिक स्थान है, जहां की प्रसिद्ध अंधेरी ओरी में तेरापंथ के प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु ने अपना चातुर्मास किया था। वहां एक यक्ष का स्थान था, जहां स्थानीय व्यक्ति जाने व रहने से डरते थे, वैसे स्थान पर इस महान तपस्वी सन्त ने अपना चातुर्मास सानन्द सम्पन्न किया एवं यक्ष स्वयं उनका प्रवचन सुनता था व सेवा करता था। सन २०१२ का चातुर्मास आचार्यश्री महाश्रमणजी ने ओद्योगिक नगर बालोतरा के पास 'जसोल' में करवाया। भगवान पार्श्वनाथ व **शेष पृष्ठ 23 पर...**

!! ॐ अहम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के जन्म दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

Rajesh Pannalal Surana
Mob. : 9820217414

SABNAM GROUP OF COMPANIES

Sabnam House, Plot No. 15/16 Central Cross Road-B,
MIDC, Andheri East, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400093

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

!! ॐ अहम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर
अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी,
शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के
जन्म दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

Vikash Sethia Mob. : 9886001248

'ANUKAMPA FOUNDATION'

RKS AGRO-TECH LTD.
AGRO BIOTECH INDUSTRY

SUNSTAR FINANCE & HOLDINGS LIMITED

201 Kalpak Arcade, 19, Church Street, Bangalore, Karnataka, Bharat - 560001
e-mail : indiapride75@hotmail.com

पृष्ठ २२ से ... भैरूजी का प्रसिद्ध नाकोड़ा तीर्थधाम 'जसोल' कस्बे के समीप ही है। चातुर्मास में आने वाला हर श्रावक परिवार भगवान के दर्शनार्थ नाकोड़ा प्रायः अवश्य ही जाता रहता है। 'जसोल' भी सूती कपड़े की रंगाई आदि के लिये काफी प्रसिद्ध स्थान है।

जैन विश्व भारती : लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर तेरापंथ धर्मसंघ का प्रमुख स्थल है। आचार्य तुलसी की परिकल्पना से स्थापित जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय जैनों का एक मात्र प्रथम, जैन अध्यात्म प्रशिक्षण का प्रमुख स्थल है, इसके विकास व सिंचन का कार्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने भी खूब किया, अब उनके पट्टधर का दायित्व था कि उसके विकास की ओर विशेष ध्यान देवे, इसके अतिरिक्त आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष की भी तैयारी करनी थी, अतः इन सब विशेष उद्देश्यों के लिये आचार्य महाश्रमण ने सन २०१३ का चातुर्मास लाडनूं में सम्पन्न किया, चूंकि जैन विश्व भारती के परिसर में काफी बड़े पैमाने पर आवासीय सुविधायें उपलब्ध हैं, अतः बाहरी यात्रियों का यहां काफी आवागमन रहा। आचार्यप्रवर के सान्निध्य में यहां अनेकों संस्थाओं के वार्षिक अधिवेशन, सेमीनार व प्रशिक्षण के विशेष कार्यक्रम संचालित हुए।

जैन विश्व भारती
लाडनूं

दिल्ली का चातुर्मास : सन २०१४ का काफी महत्वपूर्ण चातुर्मास अध्यात्म साधना केन्द्र महरौली नई दिल्ली में था। तेरापंथ धर्मसंघ के विकास के पुरोधा पुरुष आचार्यश्री तुलसी का यहां पर जन्म शताब्दी वर्ष के सम्बन्ध में अनेक किस्म के विभिन्न आयोजन समय पर हुए। अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट द्वारा सम्पादित आचार्य तुलसी से सम्बन्धित एक ग्रन्थ का विमोचन हुआ, जिसमें दिये गये आलेखों की सभी द्वारा सराहना हुई। ऐसे विरल महान पुरूष के कर्तृत्व व व्यक्तित्व के सम्बन्ध में एक विशाल ग्रन्थ तैयारी करने का कार्य पिछले २-३ वर्षों से चालु था, जिसे गंगाशहर के श्री अजय चोपड़ा ने अन्तिम रूप से सम्पादन करके उसे दो खण्डों में काफी भव्य रूप से विमोचन का कार्यक्रम आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में महरौली के भव्य पण्डाल में आयोजित हुआ, जिसमें अनेकों राजनेताओं व विद्वानों ने सम्मिलित होकर श्रद्धांजलि के अपने भावसुमन प्रकट किये।

लाल किले से विदाई : दिल्ली के बाद भारत के अनेक प्रान्तों की लम्बी यात्रा का कार्यक्रम बना हुआ था, जिसका शुभारम्भ चातुर्मास के बाद ९ नवम्बर २०१४ को लाल किले के सामने के प्रांगण में काफी भव्य विदाई समारोह के रूप में आयोजित था। नेपाल के उपराष्ट्रपति इस समारोह के मुख्य अतिथि थे, क्योंकि तेरापंथ के यह पहले आचार्य थे जो नेपाल पधारने वाले थे। निर्धारित मुहूर्त पर आचार्यप्रवर ने अपने दीक्षा गुरू मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी ने खड़े होकर मंगलपाठ सुना एवं वहीं से श्री मांगीलालजी सेठिया के निवास की ओर विहार **शेष पृष्ठ २४ पर ...**

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ २३ से... करा दिया। प्रसंगवश पाठकों को यह बताना चाहूंगा कि श्री मांगीलालजी सेठिया जैन आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के पिछले पांच चातुर्मासों में लगातार प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष रहे एवं सारी व्यवस्थाएं बड़ी कुशलता व मनोयोग से सम्पादित की, इस बार की व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल पटावरी जैन थे, उन्होंने काफी अर्थ व श्रम का नियोजन करके अध्यात्म साधना केन्द्र में काफी नये निर्माण करवाये एवं उन्हें काफी भव्य रूप प्रदान करने का उन्हें बहुत बड़ा श्रेय जाता है।

विराटनगर चातुर्मास : नेपाल के अनेकों विपदा-ग्रस्त कस्बों को शान्ति व प्रसन्नता का प्रसाद बांटते हुए नेपाल सन २०१५ के प्रथम चातुर्मास हेतु विराटनगर पधारे, परन्तु वहां की स्थानीय राजनैतिक परिस्थितियों की वजह से वहां पर वैसे प्रभावी कार्यक्रम व आयोजन सम्पन्न नहीं कर सके जो अपेक्षित थे।

नेपाल यात्रा के बाद आप दो दिन के लिये भूटान भी पधारे जहां पर बौद्ध माण्टेसरी में आचार्यप्रवर का भव्य स्वागत हुआ एवं वहां की जनता भी लाभान्वित हुई। आपकी प्रवचन शैली इतनी प्रभावी होती है जिसमें हर व्यक्ति उसमें से कुछ न कुछ आध्यात्मिक खुराक पाता है। वहां से बंगाल व आसाम के हर मुख्य शहरों का स्पर्श करते हुए पहाड़ी व कष्टप्रद जंगली रास्तों से पाद-विहार करते हुए सन २०१६ का गौहाटी चातुर्मास सम्पन्न किया, तेरापंथ आचार्य की यह आसाम यात्रा पहली बार हो रही थी।

अणुव्रत पुरस्कार: गौहाटी चातुर्मास के बाद शिलोंग, तुरा, ग्वालपाड़ा, सिलीगुड़ी होते हुए पटना पधारना हुआ। बिहार के मुख्यमंत्री श्री नितीशकुमार ने अनेक कठिन परिस्थितियों व बाधाओं के होते हुए बिहार में नशाबंदी करने के निर्णय को लागू किया। 'नशामुक्त जीवन जीना' जैन जीवन शैली के अन्तर्गत अणुव्रत आंदोलन का प्रमुख सूत्र है। बिहार राज्य में इसका प्रयास शुरू हुआ, अतः उसके प्रमुख सूत्रधार मुख्यमंत्री नीतीशकुमारजी को तत्कालीन राज्यपाल श्री रामनाथ कोविन्द (वर्तमान राष्ट्रपति) के कर-कमलों से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ऐसी हस्तियों व व्यक्तियों को खोजना व सम्मानित करना आचार्यप्रवर की प्रमुख विशेषता रही है, जिससे अन्य भी प्रभावित होते हैं।

भगवान महावीर की पावापुरी: यहां भी आपका पधारना हुआ, वहां का सबसे बड़ा आकर्षण व कार्यक्रम रहा जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों के साथ मिलकर तीर्थंकर महावीर का जन्म कल्याणक का विशेष व प्रभावी आयोजन। वर्तमान में वहां एक भी जैनी नहीं रहते, वहां हजारों व्यक्ति एकत्रित हुए। तीर्थंकर महावीर के नाम से आप्लावितप्रायः सभी क्षेत्रों जैसे कुण्डलपुर, राजगिरी, नालन्दा आदि पधारना हुआ।

जैनों की नगरी कोलकाता: सम्भवतः अहमदाबाद, मुम्बई व कोलकाता में सर्वाधिक जैन परिवार रहते हैं। उसी तरह तेरापंथ के भी करीब ७-८ हजार सर्वाधिक परिवार यहां प्रवास करते हैं। आचार्यश्री तुलसी ने सन १९५८ का चातुर्मास कोलकत्ता में किया था, अब वहां सन २०१७ के चातुर्मास हेतु तेरापंथ के आचार्य का दूसरी बार पधारना हुआ। व्यावसायिक नगरी होने से यहां पर सर्वाधिक व्यक्ति दर्शन सेवा हेतु पहुंचे एवं वहां पर आयोजित कार्यक्रमों व प्रवचनों में काफी प्रभावी भीड़ रही।

दक्षिण भारत में : आपने शुरू में कोलकाता तक की यात्रा घोषित की थी बाद में उसे दक्षिण भारत पधारने का घोषित कर दिया, जो इस अनुरूप है-

वर्ष	मर्यादा महोत्सव	चातुर्मास
२०१८	कटक (उड़ीसा)	चेन्नई (तमिलनाडु)
२०१९	कोयम्बटूर (तमिलनाडु)	बैंगलुरू (कर्नाटक)
२०२०	हुसुर (कर्नाटक)	हैदराबाद (तेलंगाना)
२०२१	रायपुर (छत्तीसगढ़)	भीलवाड़ा (राजस्थान)
२०२२	बीदासर (सम्पन्न कर लिया)	छापर (प्रस्तावित है)
२०२३	टापरा (प्रस्तावित)	मुम्बई (प्रस्तावित)

गुरुदेव का तीव्र विहार: पुज्य गुरुदेव अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार विहार में अग्रसर थे एवं कार्यक्रम के अनुसार वो २० मार्च २०२२ को दिल्ली पधारने वाले थे, उन्हें जब यह जानकारी प्राप्त हुई तब उन्होंने अपने विहार की गति बढ़ा दी। चुरू में जहां तीन रोज विराजने वाले थे, उसे एक रोज में ही निपटाया। विहार की गति तो बढ़ी हुई थी, परन्तु लुहारू के बाद बढ़ती गर्मी के मौसम में भी प्रतिदिन दो-तीन विहार एवं तीन दिन तक लगातार ३५ किलोमीटर की गति से उग्र विहार किया, अन्तिम दिन ६ मार्च २०२२ को इस गर्मी के मौसम में अति उग्र ४७ किमी का विहार करके शाम ५:४५ बजे अस्पताल पहुंचकर साध्वीप्रमुखाजी को दर्शन दिये एवं विधिवत वंदना की।

अनुकम्पा भवन में: उसके दूसरे दिन सभी तरह की व्यवस्था करके शासन माता को साधना केन्द्र के 'अनुकम्पा भवन' के एक कमरे में स्थांतरित कर दिया गया एवं आचार्यप्रवर भी वहीं पधार गये, अगले दस दिन आचार्यप्रवर दिन में दो-तीन बार साध्वीप्रमुखाजी को दर्शन देने व मंगलपाठ सुनाने हेतु पधारते एवं कुछ समय वहीं पर विराजते, इससे प्रमुखाजी को भी काफी मानसिक प्रसन्नता होती। ७ मार्च का प्रातः शारीरिक स्थिति ज्यादा **शेष पृष्ठ २५ पर ...**

Karni Soft Solutions Pvt. Ltd.
Aligning IT to BUSINESS

Karni Soft Solutions Pvt. Ltd

Aligning IT to BUSINESS

Partners: IBM infor

Services Offered
- ERP
- SCM
- CRM
- BI
- IBP solutions

Contact Us:
Delhi Office: F-6/10, Krishna Nagar,3rd Floor New Delhi, 110051 (India). Ph: +91 9971096596
Email: umedsethia@karnisoftsol.com
Kolkata Office:1, Chandney chowk street, 1st floor, B-Block, Room no.7, Kolkata-700072
Website: www.karnisoftsol.com
Social Media: Facebook: Karni-Soft-Solutions-Pvt-Ltd
Twitter: https://twitter.com/karnisoftsol

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ २४ से ... अनुकूल न देखकर उन्हें सागारी संथारा करवा दिया गया एवं कुछ समय बाद ही साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी प्रातः ८:४५ पर महाप्रयाण कर गई।

वात्सल्य पीठः निर्धारित समय उपरान्त उनके पार्थिव शरीर को वर्द्धमान समवसरण में श्रावकों के दर्शनार्थ रखा गया। साध्वी प्रमुखा जी का महाप्रयाण सुनकर सभी स्तब्ध थे एवं हजारों की संख्या में अपने भाव सुमन भेंट हेतु वहां आये। शाम करीब ४ बजे एक सुसज्जित बैकुंठी में विराजमान करके, साधना केन्द्र के बाहरी क्षेत्र में परिक्रमा करके, अनुकम्पा भवन के ठीक सामने ही, नये अधिग्रत प्लॉट में, हजारों लोगों की अश्रुपूरित नेत्रों के मध्य उनका अन्तिम दाह-संस्कार कर दिया गया, सभी शासन माता की जय-जयकार कर रहे थे। अगले ४-५ दिनों तक गुरुदेव के सान्निध्य में उनका स्मृति दिवस मनाया गया, जिसमें सैकड़ों साधु-साध्वियां, श्रमणियां, श्रावकगण व राजनेता, विद्वानों ने शासन माता के प्रति अपने उच्च भावों को भाव सुमन भेंट किये। विदित हो कि इस संस्कार स्थल पर शासनमाता का एक भव्य स्मृति स्थल का विकास किया जायेगा, जिसका पूज्यवर ने नाम दिया है--'वात्सल्य पीठ'।

अहिंसा यात्रा का समापनः अगले चार दिन आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अणुव्रत भवन, पूर्वी दिल्ली आदि क्षेत्रों का स्पर्शन करते हुए २७ मार्च २०२२ को प्रातः तालकटोरा स्टेडियम में पधारे। सभी वर्ग के हजारों की उपस्थिति से स्टेडियम खचा-खच भरा था। नेपाल के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री परमानन्द झा एवं केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुन मेघवाल मुख्य अतिथि के रूप में करीब ५ घण्टे से अधिक चले कार्यक्रम में उपस्थित रहे। मुनिश्री कुमार श्रमण के संयोजना में कार्यक्रम कई रूप में अति रोचक चला, उपस्थित वक्ताओं के अलावा प्रधानमंत्री सहित अनेक राज्यपाल, मुख्यमंत्री व अनेक विशिष्ट व्यक्तियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति विडियो के माध्यम से व्यक्त की।

राष्ट्रपति से मुलाकातः २८ मार्च २०२२ को आचार्यप्रवर का राष्ट्रपति से मुलाकात का समय निर्धारित था। २९ मार्च प्रातः नांगलोई में विदाई समारोह आयोजित था, उसके बाद पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पुज्यवर का हरियाणा, राजस्थान की ओर विहार हो गया।

आचार्य महाश्रमण पूर्णतः समय नियोजित महापुरूष हैं। वर्षों व महिनों का ही नहीं, बल्कि दिनों का उसके घंटों का भी अपना कार्यक्रम जो निर्धारित करते हैं, उसी अनुरूप अपना कायक्रम करते हैं। यहां तक कि किसी व्यक्ति से कितना मिनट, कितने बजे मिलना है यह भी तय करके आगंतुक को अपना समय देते हैं एवं उसी अनुरूप वार्तालाप करते हैं, ऐसे महापुरूष कम ही देखने को मिलते हैं, जिसके वजह से अपने हर क्षण का सदुपयोग करते हुए अपनी साधना-आराधना को गति दे रहे हैं। आप हर दृष्टिकोण से सचेष्ट रहते हैं एवं किसी भी तरह के लोभ व लालच को तो आसपास भी नहीं फटकने देते, ऐसे निस्पृह व्यक्तित्व वाले तेरापंथाचार्य स्वस्थ रहें, शतायु रहें, ऐसी मेरी, समास्त जैन समाज व 'जैन एकता' के प्रतिबद्ध एकमात्र पत्रिका जिनागम परिवार व तीनों लोकों के श्रावक श्राविकाओं की मनोकामना है।

-विजयराज सुराणा जैन
पड़िहारा-दिल्ली

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य महाश्रमण जी के ६०वें जन्म दिवस पर कोटि-कोटि वंदन

Babulal Bothra Mob. : 9444423132
Mohanlal Bothra Mob. : 9306424110
Kanhaiyalal Bothra Mob. : 9841888071
Mahaver Chand Bothra Mob. : 7904462304

Mahalaxmi Enterprise, Chennai
Balchand Babulal & Co., Trichy
Akasyam Motors, Tiruvatiur
Jain Sons Enterprises, Chennai

N. 15, Venkatrama Street, Kondithope, Chennai,
Tamil Nadu, Bharat - 600 079 Ph.: 044 - 25208240

बाबूलाल, श्रीमती रायकंवरी, श्रीमती रूचि, श्रीमती कुसुम,
कु. हेमा व समस्त बोथरा परिवार (गंगाशहर, बीकानेर)

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन
आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य महाश्रमण जी के ६०वें
जन्म दिवस पर कोटि-कोटि वंदन

Anil Kumar Baid
भ्रमणध्वनि : 9431127904

New Bharat steel co.

Purulia Road, Tara nagar, P.O. Chas,
Bokaro, Jharkhand, Bharat - 827013

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मै भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

श्री विजयराज सुराणा एक कर्मशील कार्यकर्ता

भारत में सर्वाधिक सर्दी व गर्मी के लिए प्रसिध्द अपने ननिहाल शहर चुरु में विजयराज सुराणाजी का २२ जनवरी १९३९ को जन्म हुआ। कॉलेज तक की पढाई चुरु में करने के बाद इलेक्ट्रोनिक्स का डिप्लोमा कोर्स कोलकाता से पूर्ण किया। कटिहार में दुकान एवं कोलकाता में हॉ लसेल इलेक्ट्रिक ट्रेडिंग के व्यापार की स्थापना के बाद सन १९७० में इलेक्ट्रिक वायर बनाने का उद्योग शाहदरा-दिल्ली में स्थापित किया। अपने स्कूल-कॉलेज की छात्र यूनियन के मंत्री रहने से लिखने-पढने का अभ्यास शुरू से ही हो गया था, बाद में अणुव्रत आंदोलन से जुड़ने से ३५ वर्षों तक विभिन्न पदों पर कार्यरत रहे। अणुव्रत पत्रिका का १५ वर्षों तक प्रकाशन एवं अणुव्रत महासमिति के चार कार्यकाल तक महामंत्री रहे, अत: देशव्यापी भ्रमण का अवसर मिला, इसी वजह से अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञ का विशेष वरदहस्त मिला, साथ ही अनेक विद्वानों, लेखकों व विशिष्ट व्यक्तियों व राजनेताओं से भी सम्पर्क का सौभाग्य बना।

सामाजिक कार्यों में रूचि की वजह से अपने गांव में स्कूल निर्माण में सहयोगी एवं प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र के भवन निर्माण के मुख्य सूत्रधार रहे। दिल्ली में ओसवाल समाज संस्था के संस्थापक अध्यक्ष रहकर उसका भव्य भवन निर्माण करवाया। शाहदरा में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के आप संस्थापक अध्यक्ष रहे, इसके अलावा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली, महासभा कोलकाता, अणुव्रत समिति, तेरापंथ युवक परिषद, अमृत संसद, जैन विश्व भारती, अणुव्रत विश्व भारती, गांधी सेवा सदन, भारत जैन महामंडल मुम्बई आदि अनेक संस्थाओं के साथ सक्रियता से जुड़े रहे। दिल्ली में आचार्यों के चातुर्मास में सक्रियता से जुड़कर कई पदों को संभाला। दिल्ली में तेयुप के संस्थापकों में रहे।

आपका सर्वाधिक विशेष कार्य दिल्ली से संलग्न सूर्यनगर में विद्या भारती स्कूल जो २० हजार वर्गमीटर में स्थापित है, उसका सर्वांगीण विकास करके शानदार भवन का निर्माण करवाया, उससे आप २५ वर्षों तक जुडे रह कर ४ बार अध्यक्ष का पद संभाला एवं शिक्षा का एक शानदार स्थल के रूप में विकास करवाया। बजाज इलेक्ट्रिकल्स लि. द्वारा सन १९६७ में एक चित्र के आधार पर अखिल भारतीय प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार, ओडीसा सीमेन्ट से द्वितीय एवं कई अन्य पुरस्कारों से सम्मानित हुए। आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा आपको 'अणुव्रत सेवी' सम्बोधन से सम्मानित किया गया।

श्री सुराणा अनेक पत्रिकाओं से सक्रियता से जुडे रहे, जिनमें सैकड़ो आलेख आपके प्रकाशित हो चुके हैं। अणुव्रत, तेयुप, जिनागम व अन्य कई पत्रिकाओं के विशेषांकों में संपादन का अवसर मिला। पिछले १० वर्षों में आपकी १५ स्वरचित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वर्तमान में आप 'दिल्ली में तेरापंथ धर्मसंघ का विकास' ३५० पृष्ठों की पुस्तक के सम्पादन व प्रकाशन के कार्य में संलग्न हैं। ८४ वर्ष की आयु में भी आप कुछ संस्थाओं व रचनात्मक कार्य करवाने हेतु सक्रियता से जुड़े है।

श्री सुराणा गांधी सेवा सदन राजसमन्द के अध्यक्ष निर्वाचित

अणुव्रत महारथी काका देवेन्द्र कुमार कर्णावट द्वारा सन १९५२ में स्थापित 'गांधी सेवा सदन' राजसमन्द, इस पूरे क्षेत्र की प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान है, अति अल्प साधनों से शुरू यह पौधा, अब वटवृक्ष की तरह फैला हुआ है, जिसका स्वयं का विशाल भव्य भवन है, एवं हायर सेकेण्डरी स्कूल तक की सभी विधाओं में कई सैकड़ो छात्र अध्ययनरत हैं, जिनका परिणाम भी अति उत्तम रहता है।

माननीय सर्वश्री हीरालाल देवपुरा, माणिक्यलाल वर्मा, मोहनलाल सुखाड़िया, हरदेव जोशी, डॉ. गिरिजा व्यास जैसी विशिष्ट हस्तियां इस संस्था से जुड़े रहे हैं एवं इसके विकास में इनका विशेष योगदान मिला है। अणुव्रत आंदोलन के कार्यों की वजह से देवेन्द्र कर्णावट के साथ भी विजयराज सुराणा का काफी गहरा सम्पर्क बना, इसी वजह से श्री सुराणा का गांधी सेवा सदन से भी जुडाव रहा एवं इसके विकास में भी योगदान रहा। आप इसके आजीवन सदस्य के अलावा ट्रस्टी भी हैं एवं संस्था के सर्वांगीण विकास में सहयोगी भी रहे हैं।

अगले वर्ष काका श्री देवेन्द्र जी का शताब्दी वर्ष हैं एवं संस्था स्थापना का ७५वां वर्ष का स्वर्ण जयन्ती वर्ष समारोह है, यह दोनों ही विशेष कार्यक्रम श्री सुराणा जी के नेतृत्व में सम्पन्न होंगे, इस वार्षिक अधिवेशन में आगामी ५ वर्ष के लिए सर्वसम्मत अध्यक्ष मनोनीत हुए हैं। हमें श्री सुराणाजी से अनेक अपेक्षाएं हैं, जो पूर्ण होंगी। ऐसा विश्वास है।

संकलन चित्र

अणुव्रत की स्थापना के 50वें दिवस पर आयोजित विशाल समारोह पर
अणुव्रत महासमिति व महामंत्री विजयराज सुराणा को परामर्श देते आचार्य श्री महाप्रज्ञ

!! ॐ अर्हम् !!

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य महाश्रमण जी के ६०वें
जन्म दिवस पर कोटि-कोटि वंदन

Nihalchand M. Golchha
Mob. +91 9820120482
Kushal N. Golchha
Mob. +91 9930939660

Jivraj Jograj
Golchha's

Jivraj Jograj
Wholesale & Retail
Dealers In : Fancy Suits / Kurti's/ Leggings
2nd Floor, 102, Vithalwadi, Kalbadevi Road,
Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 002
Ph : 022- 4022 5335, Email : jivrajjograj@gmail.com
Mob. +91 9323963919

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

।। ॐ अर्हम् ।।

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

हे प्रभो! यह तेरापंथ

परस्परोपग्रहो जीवानाम

तेरापंथ धर्मसंघ के शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी म.सा. के जन्म पर्व पर शत्-शत् वंदन

BINOD KUMAR GANG
भ्रमणध्वनि : 9435 074716
Nathmal Hemraj / Gang Brothers, Madan Mohan Road, Karimganj, Assam, Bharat - 788711

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

हम सभी आत्मनिग्रह की दिशा में आगे बढ़ें : आचार्य श्री महाश्रमण

हमारी दुनिया में सुख भी है, दुःख भी है, अनेक बार आदमी अपने चिंतन से दुःखी बन जाता है, चिंतन में बदलाव आता है, तो वह दुःख दूर भी हो सकता है। परिस्थिति कठिन है, एक आदमी उससे दुःखी हो रहा है, तो दूसरा आदमी दुःखी नहीं भी होता। समस्या जीवन में आ सकती है पर समस्या से मानसिक स्तर पर दुःखी बनना जरूरी नहीं है।

समस्या और दुःख एक चीज नहीं है। भौतिक कठिनाइयां या मानसिक परेशानियां हो सकती हैं। भावात्मक विकास नहीं होता तो आदमी कठिनाइयों से दब सकता है, इन दुःखों से छुटकारा मिल सकता है क्या? मिल सकता है, तो उसका तरीका क्या है? शास्त्रकार ने बताया है कि अपने आपको ही अभिनिग्रहित करो। अपने आप पर कंट्रोल करो, इस प्रकार तुम दुःख से मुक्त हो जाओगे, सुख-दुःख हमारे भीतर ही होता है।

हमारे साधु संतो में चित्त समाधि की बात चलती है। चित्त समाधि अच्छी रहे, मैं मेरी चित्त समाधि अपने हाथ में रख सकूं तो बढ़िया बात है। चित्त समाधि पराजित हो गई तो अप्रसन्नता हो सकती है। उपादान मजबूत होगा तो चित्त समाधि खंडित नहीं होगी। काया तो अरति है, क्या आनंद है? ग्रहण मत करो, ग्रहण करेंगे तो दिमाग में असर होगा।

कोई बुराई करता है, उसमें सच्चाई है, तो उस बात पर ध्यान देकर कमजोरी को दूर करें, तथ्य नहीं है, तो उस पर ध्यान मत दो। चित्त समाधि अपने हाथ में ही रहे। परिवार हो, संस्था हो, अपनी शांति अपने पास रहे, निमित्त प्रतिकूल होने पर भी हमारी शांति भंग न हो, हमारी सहनशीलता-समता की शक्ति रहे।

मन को वाटर प्रूफ बना लें। यह एक प्रसंग से समझाया गया कि निमित्त भले प्रतिकूल है, पर निमित्त समाधि को खंडित न कर दे। अपने चिंतन को अच्छा रखें, दूसरे के कहने से कोई चोर या बड़ा नहीं बन जाता है।

तेरापंथ धर्मसंघ आध्यात्मिकता से जुड़ा धर्मसंघ है, हम उसके पथिक बने रहें, इसके लिए अपने आपका निग्रह करना अच्छा रहता है, जिनको तिथि या दिनांक से दीक्षा लिए २५ वर्ष हो गए हैं, वो अपनी साधना का और विकास करे, अच्छी सेवा व धर्मसंघ की प्रभावना करें, हम सभी आत्मनिग्रह की दिशा में आगे बढ़ें, यह काम्य है।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

महावीर जन्म कल्याणक पर रक्त जाँच शिविर का आयोजन

सिलचर (आसाम): श्रमण भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक के शुभ अवसर पर साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत समता युवा संघ, सिलचर द्वारा आयोजित सर्वोसंतु निरामया: के अंतर्गत स्वास्थ्य परामर्श एवम जांच शिविर का आयोजन दिनांक १७.०४.२२ रविवार को रामपुर बागान में सुबह १०.३० बजे से दोपहर २.०० बजे तक किया गया, जिसमें विशेषज्ञ चिकित्सक द्वारा दंत चिकित्सा जांच (Dental Check-up) रक्तचाप जांच (Blood pressure Check-up) एवम होम्योपैथिक चिकित्सा का आयोजन किया गया।

शिविर के प्रारंभ में विजय कुमार सांड की अध्यक्षता में आयोजित सभा में साधुमार्गी जैन संघ के मंत्री प्रकाश चंद सुराना, धार्मिक संयोजक विमल भूरा, समता युवा संघ के मंत्री मनोज सोनावत, कैंसर हॉस्पिटल के कल्याण चक्रबर्ती ने अपना वक्तव्य रखा।

सभा के अंत में अध्यक्ष विजय कुमार सांड ने शिविर आयोजन के लिए समता युवा संघ, कैंसर हॉस्पिटल के अधिकारी व रामपुर बगान के मैनेजर और स्टाफ को धन्यवाद व कृतज्ञता ज्ञापन किया।

चिकित्सा शिविर में लगभग ५० रोगी ने अपनी जांच करवाई और सभी रोगी को संघ की ओर से 'गमछा' प्रदान किया गया।

शिविर में संघ के अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ पुर्वोत्तर मंत्री सुशील कांकरिया, संघ उपाध्यक्ष शुभकरण सिपानी, संघ कोषाध्यक्ष महावीर पारख, पुर्व मंत्री मोहनलाल बरडिया, बसंत सिपानी, अनिल गोलछा, संघ सहमंत्री कमल बोथरा, विशाल सांड, सुनील खटोड़, सुमित सुराना आदि भी उपस्थित थे। शिविर के अंत में रामपुर बगान में संघ की ओर से चारा रोपण भी किया गया। यह जानकारी संघ मंत्री प्रकाश चंद सुराणा ने समस्त जैन पंथों की एकमात्र पत्रिका 'जैन एकता' का शंखनाद करने वाली 'जिनागम' को भेजी है।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

!! ॐ अर्हम् !!
जय आचार्य भिक्षु
जय आचार्य तुलसी
जय आचार्य महाप्रज्ञ
सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य महाश्रमण जी के ६०वें जन्म दिवस पर
कोटि-कोटि वंदन
Vimal Jain
भ्रमणध्वनि : 9820402573
Vipul Arts
Shop No. 24, World Trade Center,
Cuffe Parade, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400005
दूरध्वनि: 022-22181624, Fax: 022-22182419
अणुडाक: vipulartsinfo@gmail.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

।। ॐ अर्हम् ।।
जय आचार्य भिक्षु
जय आचार्य तुलसी
जय आचार्य महाप्रज्ञ
आपको मिला है तुलसी-महाप्रज्ञ का आशीर्वाद
देते रहें आप हम श्रावकों को मार्गदर्शन
आपके छाँव में लेते रहें हम श्वास
आप चिरायु रहें स्वीकार करें सुखद अभिनंदन
६०वें जन्म पर्व पर आचार्य महाश्रमण जी को कोटिश: वंदन
Virendra Burad
Mob. : 9928023223
9829022922
PACKWEL
Dream Construction (Nandurbare)
Factory
G-1/31, 1st Phase, Boranada Industrial Area,
Jodhpur, Rajasthan, Bharat - 342001
Ph. : 95-2931 - 281401

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

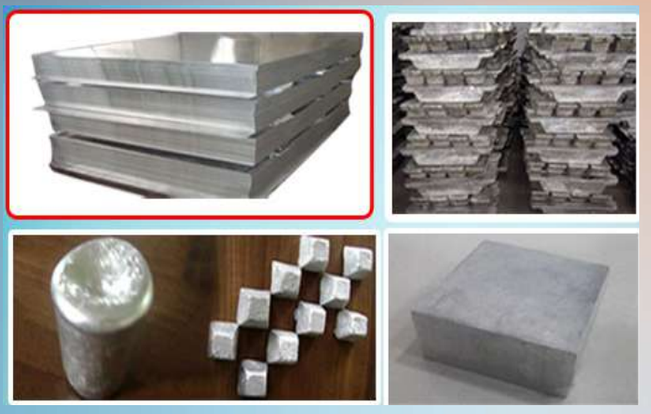

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

आचार्य श्री महाश्रमण के कुछ उल्लेखनीय प्रसंग

तालों की चोरी : बालक मोहन के पिताजी झूमरमलजी जब अपने व्यवसाय स्थल जोरहाट से सरदारशहर आये तब घर उपयोग के लिए कुछ नये ताले लाये थे। मोहन को ताले अच्छे लगे, अतः अपने उपयोग हेतु चुपके से दो ताले छिपा दिये। दूसरे दिन जब ताले कम मिले तो माता नेमी देवी उन्हें इधर-उधर खोजने लगी। बालक ने अपनी माँ को इतना परेशान देखा तब उसे अपनी स्वयं की यह हरकत अच्छी नहीं लगी। आत्मा कचोटने लगी और माता को वो ताले लाकर वापस दे दिये। यही उच्च भाव जीवन के आत्मोत्थान के कारक बनते हैं।

दीक्षा की आज्ञा : बालक मोहन दीक्षा लेने को आतुर था, परन्तु बड़े भाई श्री सुजानमल किसी भी तरह आज्ञा देने से इन्कार कर रहे थे, तब मोहन ने उनके सामने ही यह दृढ़-प्रतिज्ञा की, कि यह आपके घर में नहीं रहेगा, तब उन्होंने पूछा-खाना कहां खायेगा तब मोहन ने कहा-इधर-उधर मांगकर खा लूंगा। दीक्षा की इतनी दृढ़ इच्छा एवं उसकी दृढ़ प्रतिज्ञा को देखकर मां ने सुजानमल को कहा कि अब तुम दीक्षा लेने से रोको मत, इसे आज्ञा दे देवो, ऐसा महान कार्य मन की दृढ़ता से ही सम्पन्न होता है।

भविष्यवाणी ज्योतिषी की : दीक्षा से कुछ माह पहले, शास्त्री श्री छगनलाल जी मिश्रा ने मुनिश्री सुमेरमलजी की रेखाएं देखकर कहा कि आप छः माह के अन्दर दो दीक्षाएं देंगे। बालक मोहन की रेखाएं देखकर कहा कि यह बालक दीक्षित होने के बाद आपकी विद्वानता में ही धर्मसंघ का सर्वोपरि स्थान प्राप्त करेगा। यह सच है कि मनुष्य का भाग्य व भविष्य जन्म के साथ ही निर्धारित हो जाता है, परन्तु कर्म तो करना ही पड़ता है। मोहन के किये गये दृढ़ कर्म ने ही उन्हें ११ वें अधिष्ठाता तेरापंथचार्य महाश्रमण बना दिया ऐसे गुरूवर के चरणों में कोटि-कोटि वंदन...

-राजीव सुराणा
दिल्ली

जैन राजनैतिक चेतना मंच के चुनाव सम्पन्न

नई दिल्लीः जैन राजनैतिक चेतना मंच राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में सर्वसम्मति से गजराज गंगवाल जैन को राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनित किया गया। सभा में प्रदीप जैन 'आदित्य' पूर्व मंत्री भारत सरकार, ललित जैन महामंत्री, रविंद्र काला उपाध्यक्ष, विनोद जैन कोषाध्यक्ष, सुकीर्ति जैन (पूर्व विधायक कटनी) प्रकाश चंद बड़जात्या जैन महामंत्री महासभा, एम. के. जैन चेन्नई कार्याध्यक्ष महासभा, प्रकाश मोदी पारस चैनल, एम. पी. जैन महामंत्री, हुकम जैन काका, आर. सी. जैन दिल्ली, सुनीता काला, महेंद्र जैन दिल्ली, सुमित जैन दिल्ली, संजय जैन दिल्ली उपस्थित थे।

उत्तर भारतीय विकास सेवा संघ में महेन्द्र मुणोत मुख्य अतिथि बने

बेंगलुरूः कर्नाटक उत्तर भारतीय विकास सेवा संघ एवं सर्वजन एकता मंच द्वारा आयोजित माता रानी के विशाल जागरण में मुख्य अतिथि के रूप में युवा समाजसेवी महेन्द्र मुणोत, अतिथि मदनलाल अग्रवाल, नवीन गर्ग एवं अशोक अग्रवाल उपस्थित अभिषेक दुबे एवं मंगल सिसोदिया द्वारा सुमधुर भजनों की प्रस्तुति दी गई। चेयरमेन राकेश शुक्ला ने सभी का स्वागत किया। मंच संचालन प्रवीण मिश्रा ने किया।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for

Marriages, Conferences & Relaxation

Khanvel RESORT SILVASSA

09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555

follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com

sales@khanvelresort.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

Samrat Jewellers SJ

नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें

अनोखीलाल नाहर जैन **पंकज नाहर जैन**

३९ - ए कीर्तिकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२

www.samratjewellers.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

भंवरलाल पगारिया जैन

वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A

UPDATES WITH NEW NOTES

NEW PRODUCT

FEATURES :

- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :

- **Counting Display** : 4 digits
- **Batch Display** : 3 digits
- **Counting speed** : 1000pcs/min
- **Hopper Capacity** : 300 notes
- **Stacker Capacity** : 200 notes
- **Size of countable note** : 50*110-90*190mm
- **Power Supply** : AC220V±10% 50Hz
- **Power Consumption** : ≤ 80W
- **Size of box** : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO® An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705. INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

।।जय गुरू नाना।। ।।जय प्रभु महावीर।। ।जय गुरू राम।।

विश्व में भारत को अब
'भारत' ही कहा जाएगा?
बिजय जी! आप आगे बढें
आपके अरमान पूरे होगें
भारत को 'भारत' ही बोला जाएगा

कमल कुमार भंडारी
देवगढ़-बैंगलोर

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य महाश्रमण जी के
61वें जन्म दिवस पर कोटि-कोटि अभिवंदना

Ganpatlal Jain
Mob: 79770 34005

Rajat Jain
Mob: 9167351384

Arham Jain
Mob: 84509 46521

Shree Nakoda Textiles

Wholesale Dealers Of Fancy Dress Materials

8, Daya Mansion, G. K. Road, Behind Gold Cinema,
Dadar East, Mumbai, Maharashtra - 400 014

Arham Fabrics

HOUSE OF FASHION WEAR

Shop No.1, Dediya Niwas, Dr. B. A. Road, Hindmata,
Dadar East, Mumbai, Maharashtra - 400 014

मारू परिवार, बागोर-दादर (मुंबई)

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी के षष्टिपूर्ति जन्म पर्व पर शत् शत् नमन

Suresh Bafna

Mob: 9967609579

Durian®
DECORATIVE LAMINATES
A Commitment To Excellence

ITALIA
RANGE

Authorised Distributor

Veera Decor

Plot No. -18A, Nr. Axis Bank Sector-14, Koperkhairna,
Navi Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400709
e-mail : veeradecor550@gmail.com
www.durianlam.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

महान साधक आचार्य श्री महाश्रमण के षष्टिपूर्ति के अवसर पर भावभीनी अभिनंदन

हे तेरापंथ के सर्वोच्च शिखर, वंदन है अभिनंदन है।
षष्ठिपूर्ति की मंगल बेला में पुलकित सबका मन है।।
मां नेमा झूमर के राज दुलारे, दुग्गड़ कुल उजियारे
रत्नगर्भा धरा सरदार शहर की, आलोक दीप उजियारे
बलिधारी सूरज चांद तारे, वात्सल्य-माधुर्य वारे
सौम्य, सुसंस्कारी, देदीप्यमान मोहन-आनन है।
षष्ठिपूर्ति की मंगल बेला में पुलकित सबका मन है।।

दसों आचार्यों की अध्यात्म गण संपदा से शोभित भाल नैतिकता-समन्वयता, नशा मुक्ति का लक्ष्य ध्वज विशाल हे देव!

तव पद रज पाकर सरदार-शहर नगर निहाल यशोगाथा कर्मयोगी की, महके देश-विदेश जो चन्दन है। षष्ठिपूर्ति की मंगल बेला में पुलकित सबका मन है।।

धवल सेनानायक आगे बढ़े, दुर्गम पथ बना शुगम दिव्य राशियां भास्कर की, परास्त हुआ अज्ञान तम सिद्धान्त पथ पर पगलिए अंकित करें
सम-श्रम-गम जन-मन भांकृत करें, मंद मुस्कान और मधुर वचन है।
षष्ठिपूर्ति की मंगल बेला में पुलकित सब का मन है।।

मैं ना जानू भाव अलंकरणों की भेंट कैसे मैं चढ़ाऊं
उपमाएं सारी नि:शब्द हुइ, कैसे तुम्हें मैं उपमाऊँ
मैं सौभागी जिन शासन पाकर, गुरु चरणों में शीश नमाऊँ
देव! कर दो संघ समर्पित रहूँ सदैव, श्रद्धा भरा नमन है।
षष्ठिपूर्ति की मंगल बेला में पुलकित सबका मन है।।

- पुष्पा बैद, जयपुर
निवर्तमान अध्यक्ष
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

शासन माता असाधारण साध्वी प्रमुखा श्री कनक प्रभा जी की प्रथम मासिक पुण्यतिथि पर वात्सल्य पीठ पर आयोजित कार्यक्रम में आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या साध्वी श्री शुभ प्रभा जी आदि साध्वी श्री जी गीतिका प्रस्तुत करते हुए।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!

तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर कहां महावीर सुपर वैज्ञानिक- आचार्य मुनि गुप्तिनंदीजी

संसार में यह अद्भूत आश्चर्य है कि ढाई हजार वर्ष पुर्व सर्वत्र अज्ञानता का माहौल था, हिंसा का तांडव था,ऐसे प्रतिकूल स्थिती में महावीर स्वामी ने अहिंसा का दीप प्रज्वलित किया। हिंसा और निष्पाप जीव की हत्या प्रकृति को भी मान्य नही है।

ढाई हजार वर्ष पुर्व महावीर स्वामी ने जल, वनस्पति, चट्टान और पत्थर में जीव है कहा था,आज विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि, जल, वनस्पति, पत्थर में भी जान होती है, इसलिये महावीर सुपर वैज्ञानिक थे, यह सिद्ध हो गया है। ऐसे भाव पुर्ण, प्रभावी विचार, भारत गौरव आचार्य मुनि गुप्तिनंदीजी ने औरंगाबाद में आयोजित महावीर व्याख्यानमाला में कहा कि सुपर वैज्ञानिक महावीर और उनका सुरक्षित विज्ञान, विषय पर अपने विचार व्यक्त किये।

आचार्य मुनि गुप्तिनंदीजी ने कहा कि महाभारत में वर्णन है कि जब भी धर्म पर ग्लानी आती है, अधर्म का बोलबाला होता है, हिंसा और अनैतिकता बढ़ जाती है तब महापुरुष का जन्म होता है। महान आचार्य रविसेनाचार्य जी ने 'पद्म पुराण' मे लिखा है कि जब महापुरुष का जन्म धरती पर होता है, स्वर्ग में धरती की तरह शहनाई, नगाड़े, शंखनाद गुंजते हैं, तरंगे बहती है, इंद्र के आसन डगमगाते हैं, यह वैज्ञानिक चमत्कार है। मुनिश्रीजी के प्रवचन के मध्य ही संघस्थ माताजी आर्यिका शिरोमणी आस्थाश्री माताजी ने 'आयी आयी सुंदर बेला, सुनो कहाणी वीर प्रभू की'-

सुमधुर आवाज में प्रस्तुत कर उपस्थित जन समुदाय को मंत्र मुग्ध कर दिया!

आचार्य मुनि गुप्तिनंदीजी ने कहा 'पाणी छान कर पियें, उबालकर पियें, वनस्पती, जल का अपव्यय ना करें, यह वैज्ञानिक सत्य है। आज वृक्ष तोड़े जा रहें है, बंदर, शेर, चिते, मानवी बस्ती में आ रहे हैं, यह हमारा अपराध है, कोरोना काल में स्वास्थ्य विभाग ने जल छानकर, ऊबाल कर, दो गज दुरी रखने को कहा था, यही जैन सिद्धांत है, वैज्ञानिक तथ्य है, मोबाईल हानी कारक है, सिमित उपयोग करें।

- एम. सी. जैन
९४२३१५०११६

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु
जय आचार्य तुलसी
जय आचार्य महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन
आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य महाश्रमण जी के
६०वें जन्म दिवस पर
कोटि-कोटि वंदन

Surendra Kr. Choraria
Mob: 9831015324

Premier (India) Bearings Ltd

(An ISO 9001:2000 Co.)

INA FAG SCHAEFFLER GROUP INDUSTRIAL · FIS FAG Industrial Services · MOLYKOTE · optibelt Power Transmission

83 (old no.41), Armenian Street, 2nd Floor, Chennai, Tamilnadu - 600 001
Phone: 044-25227616, 25243727, 25246911
Fax: 044-25228612 E.Mail — piblchennai@vsnlcom

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर्व मनाया गया

धुलियान, पश्चिम बंगाल: प्रभात फेरी के साथ कलश शांतिधारा व पुजन के बाद तीर्थंकर की पालकी को लेकर कोरोना चले जाने के पश्चात फिर से भव्य जुलूस निकाला गया। जुलूस में गुंज रहा था भगवान महावीर की जय, अहिंसामय जैन धर्म की जय, आज का दिन क्या चाहता है शांति, शांति का एक मात्र उपाय अहिंसा से है। अहिंसा के पुजारी तीर्थंकर महावीर का दिव्य संदेश 'जिओ और जिने दो', आंधी हो या तुफान आगे बढ़ते जाना है, महावीर की वाणी को हर घर पहुंचाना है' जिसकी विश्व में आज बहुत जरूरत है। उसके बाद तीर्थंकर महावीर स्वामी का मस्तकाभिषेक हुआ। सायं को महाआरती के पश्चात भगवान को पालना झुलाने का कार्यक्रम हुआ। तद्पश्चात धार्मिक, सांस्कृतिक अनुष्ठान का आयोजन किया गया। धुलियान में सभी ने अपना प्रतिष्ठान भी जन्म कल्याणक के दिन पुर्ण रूप से बंद रखा था।

-संजय कुमार जैन बड़जात्या जैन
धुलियान, प. बंगाल

मानवता, अहिंसा का मूल सिद्धांत- भारत गौरव आचार्य मुनी गुप्तिनंदीजी

चिकलठाणा औरंगाबाद (महाराष्ट्र): तीर्थंकर महावीर स्वामी के २६२१ वें जन्म महोत्सव चैत्र शु. त्रयोदशी १४ अप्रैल को औरंगाबाद में सकल जैन समाज की ओर से भव्य-दिव्य जूलूस का आयोजन किया गया। शोभा यात्रा में भारत गौरव आचार्य गुप्तीनंदीजी, आचार्य गुणधर नंदीजी, आचार्य रवी नंदीजी, मुनि नविन नंदीजी, आर्यिका आस्थाश्री माताजी, क्षुल्लक शान्ती गुप्तीजी आदि कड़ी धूप में बिना चप्पल के चल रहे थे। शोभा यात्रा में विविध धर्म, संप्रदाय के संत, महात्मा शामिल थे।

आरंभ में महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिती के ओर से महावीर चौक में सकल जैन समाज के अध्यक्ष राजेंद्र दर्डा ने धर्म ध्वजा फहराया, भारत वर्ष से दिल्ली, मुंबई, जयपुर, इंदौर, कलकत्ता, पटना जैन समाज के ज्ञानी श्रावक अधिक मात्रा में थे। औरंगाबाद में श्वेताम्बर, दिगम्बर, महेश्वरी, सकल जैन समाज महावीर जन्म कल्याणक जन्मोत्सव मनाते हैं, जुलूस में १५ हजार से अधिक श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे जो कि औरंगाबाद का गौरव रहता है। जुलूस में महावीर स्वामी की जय, अहिंसा परमो धर्म की जय, त्रिशला नंदन वीर की जय, बोलो महावीर की जय के नारे लगाए जा रहे थे।

जुलूस में विविध झाकियां प्रदर्शित की गई थी। महावीर स्तंभ से लेकर राजाबाजार तक जुलूस पहुंचा। भारत गौरव आचार्य गुप्तीनंदीजी ने कहा कि आज के जुलूस में सकल जैन समाज के साथ हिन्दु, मुसलिम, सिख, क्रिश्चन, बौध सब साथ आये हैं, यह भारत के लिये आदर्श का उदाहरण है। महावीर स्वामी के अहिंसा का सिद्धांत पुरे विश्व और मानवता के लिये है, इस अवसर पर सांसद चंद्रकात खैरे, राजेंद्र दर्डा, ललित पाटणी, डी. बी. कासलीवाल, मिठालाल कांकरिया, प्रकाश झाम्बड, देवेंद्र काला, निलेश गंगवाल, कविता अजमेरा आदि उपस्थित थे।

- एम. सी. जैन, पत्रकार
९४२३१५०११६

रथयात्रा में गूंजे तीर्थंकर महावीर के जयकारे

फिरोजाबाद: नगर में तीन दिवसीय महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ। अंतिम दिन जैन मेला स्थल पर विभिन्न तरह के धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए। रथयात्रा की वापसी धूमधाम से संपन्न हुई। तीर्थंकर महावीर के रथ की वापसी यात्रा में जैन समाज के श्रद्धालुओं ने उत्साह के साथ भाग लिया।

नगर में महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव मेला प्रांगण से तीर्थंकर महावीर रथयात्रा की वापसी गाजे-बाजे के साथ की गई। निर्भय सागर पाठशाला परिषद के कार्यकर्ता तीर्थंकर महावीर के सोने के रथ को पीत दुपट्टा पहनकर अपने हाथों से खींचते हुए चल रहे थे। रथयात्रा में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर धर्म लाभ लिया। इधर मेला प्रांगण में जैनाचार्य विवेक सागर जी के सानिध्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। प्रातः सर्वप्रथम इंद्र स्वरूप पुजारियों ने तीर्थंकर महावीर का सामूहिक अभिषेक एवं शांतिधारा की, तत्पश्चात नित्य नियम पूजन प्रारंभ हुआ, इसके बाद पल्लीवाल महिला मंडल द्वारा शांतिनाथ विधान का आयोजन भक्तिभाव से किया। विनोद कुमार एवं शुभम जैन की ओर से विधान को द्रव्य भेंट किया गया। अंत में जैनआचार्य विवेक सागर जी ने धर्मसभा को संबोधित किया। दोपहर की सभा में बाहुबली संघ द्वारा नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इसके बाद मेला प्रांगण से तीर्थंकर महावीर रथयात्रा की वापसी हुई। रथयात्रा पीडी जैन मेला प्रांगण से प्रारंभ हुई जो कि डाकखाना, गंज मोहल्ला, सदर बाजार होती हुई घेर खोखल जैन मंदिर पहुंच कर संपन्न हुई।

करिश्माई व्यक्तित्व के नायक : आचार्य महाश्रमण - शासन साध्वी श्री सोमलता

मुंबई: कहा गया है कि पर्वत में ऊंचाई होती है पर गहराई नहीं होती, इसके विपरीत समुद्र में गहराई होती है पर ऊंचाई नहीं होती। जीवन के निर्माण में ऊंचाई और गहराई की संयुति अपेक्षित होती है, इस अपेक्षा को मूर्तिमान होते देखना हो तो वे मनस्वी महापुरूषों में देखी जा सकती है। महान व्यक्तियों का जीवन इसी युगल का संगम स्थल होता है। महर्षि महायोगी तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता पूज्य श्री महाश्रमण के जीवन में दोनों विशेषताएं श्वास-उच्छ्वास की तरह लयलीन हैं। रत्नगर्भा वसुंधरा सरदारशहर जहां पर रहता था झूमरमल जी दूगड का परिवार। उनकी गृहलक्ष्मी नेमांबाई की कुक्षि से जन्मा मोहनकुमार। मोहन किस्मत का धनी था। कुछ लोग सफलता के भव्य प्रासाद में एक-एक पायदान पार करके पहुंचते है तो कोई लिफ्ट से सीधा ही पहुंच जाता है। मोहन के सौभाग्य ने छलांग लगाई और मोहन से मुनि मुदित, फिर महाश्रमण मुदित फिर युवाचार्य महाश्रमण और एक अति शुभ बेला में तेरापंथ के आचार्य महाश्रमण का ताज पहन लिया। आचार्य श्री महाश्रमण ऋजुप्राज्ञ, मित-मधुर भाषी, करूणावान और पुरूषार्थ के प्रखर पुजारी हैं। अटूट संकल्पशक्ति और फौलादी निर्णय लेना आपकी नियति है। मितभाषण तो आपकी खास पहचान है। अर्हतबाजी को आत्मसात करने-करवाने में हर पल व्यस्त रहते हैं। आपश्री को लोग इस युग के भगवान के रूप में देखते हैं। आपने एक-एक सांस पर जागरूकता के प्रहरी बैठा रखे है। 'समयं गोयम मा पमायए' साधना के इस मूलमंत्र को कभी भी निद्राधीन होने नहीं देते। कहा भी है -

रात सुबह का इंतजार नहीं करती
खुशबू मौसम का इंतजार नहीं करती,
समय अमूल्य है, इसे व्यर्थ मत गमाओं,
क्योंकि-जिन्दगी वक्त का इंतजार नहीं करती।।

सुदूर प्रदेशों की पदयात्रा करना आपका नैसर्गिक रूझान है। आप महान यायावर हैं। अहिंसा यात्रा के माध्यम से आपका दीर्घकालिक संयम का सफरनामा रोमांचक और रोचक संस्मरणों की अटैची है तो आचार्यकाल का द्वादश वर्षीय कार्यकाल कीर्तिमानों की बैंक है, उनमें से कुछेक प्रसंग अद्भुत, ऐतिहासिक और अद्वितीय हैं। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की जन्मशती के संदर्भ में सौ दीक्षाएं, दोनों विभूतियों के साहित्य का शताधिक पुस्तकों के रूप में संयोजन, संपादन काठमाण्डू के प्राणघातक भूकंप में अडोल-अकंप रहना, पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों को कोविड के भयावह भूचाल में भी यथावत रखना, प्रलयंकारी महामारी में पूरी धवल सेना की संरक्षणा, मुख्यमुनि, साध्वीवर्या जैसे कल्पनातीत पदों का सर्जन, नक्सलियों, आतंकवादियों, मनुष्यों को अहिंसा की दीक्षा देना आदि-आदि। कालजयी करिश्माई व्यक्तित्व के नायक आचार्य प्रवर को युगप्रधान आचार्य के सम्मान अलंकरण से अलंकृत कर पूरा धर्मसंघ ही नहीं पूरी मानव जाति प्रफुल्लित है, प्रसन्न है। भाव-विभोर है। आप अलौकिक शक्तिपुंज हैं, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण की वरदायी अनुशासना का वंदन, अभिनंदन।

With Best Compliments

ProcurePoint
E-Sourcing

Plastic Raw Materials | Sheets, Pipes & Rods | Alu Disposables
Construction & Pharma Chemicals
Packaging Film | Technical Fabrics & Nets | E-Commerce

Shyam-Arihant: Plot No. 10 & 11,
MCH No. 1-8-304/10, Pattigadda Road,
Secunderabad- 500 003., TS, India.

Tel: +91 40 66494900/01
info@procurepoint.in
www.procurepoint.in

Partner Brands:
DUGAR Alu Containers & Foils, Pipes, Sheets & Rods
DuBuild Silica Fume & GC
CDG PE Wax
PROPEL PP+PE
Additives
KCC Sealants
ChemTech PC & Surfactant
CHEMPLAST SANMAR PVC Resin
ayushmann Mattresses & One Pack
basudeo passion to perform
Chandantara Commercial Private Limited
visura you and us
welset OPP Films

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

अक्षय ज्ञान, अक्षय दर्शन और अक्षय चारित्र प्रदाता बने अक्षय तृतीयाः - शांतिदूत महाश्रमण

सरदारशहर, चूरु (राजस्थान): राजस्थान के चूरू जिला का एक नगर सरदारशहर, जिसने अपने साथ न जाने कितने इतिहास को जोड़कर ऐतिहासिक नगर बन गया है और उसके इतिहास में नित नए नवीन अध्याय अभी भी जुड़ते जा रहे हैं। नगरों के सरदार सरदारशहर में एक और नवीन इतिहास का सृजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के सरदार, सरदारशहर के लाल, अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में सम्पन्न हुआ।

सनातन परंपरा व जैन परंपरा सहित अनेक परंपराओं व मान्यताओं में विशेष महत्त्व रखने वाला वैशाख शुक्ला तृतीया अर्थात् अक्षय तृतीया के दिन सरदारशहर की धरा पर विराज रहे अध्यात्म जगत के महासूर्य महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में आस्था, उत्साह, उल्लास व उमंग के ज्वार से भरे देश ही नहीं विदेशी श्रद्धालु भी अक्षय ऊर्जा की प्राप्ति और व्रत के पारणे के लिए अपने आराध्य की मंगल सन्निधि में पहुंचे तो मानों पूरा सरदारशहर ही जनाकीर्ण बन गया। तेरापंथ भवन के निकट बने विशाल और भव्य युगप्रधान समवसरण भी मानों इस ज्वार में बहा चला रहा था। विराट व्यवस्थाएं भी मानों अल्प साबित हो रही थीं।

आस्था के इस सैलाब में जन-जन गोते लगा रहा था। युगप्रधान समवसरण में देश-विदेश से जुटे कुल लगभग १८१ तपस्वियों में, जहां जीवन के १३वें वर्ष में प्रथम वर्षीतप का पारणा हुआ, तो वहीं जीवन के ९४वें वर्ष की अवस्था ३५वें वर्षीतप की सम्पन्नता हुई। अमेरिका जैसे देशों में रहने के बाद भी अडोल बनी आस्था के कारण सात समन्दर पार भी वर्षीतप करने वाले पांच तपस्वी भी अपने गुरु को इक्षुरस का दान कर अपने व्रत को सम्पन्न किए।

मंगलवार को प्रातः लगभग सवा आठ बजे भव्य व विशाल युगप्रधान समवसरण श्रद्धालुओं की विराट उपस्थिति से मानों छोटा नजर आ रहा था। मंच पर आचार्यश्री के उपस्थित होते ही पूरा वातावरण जयकारों से गुंजायमान हो उठा। अक्षय तृतीया महोत्सव के कार्यक्रम का शुभारम्भ अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। साध्वीवर्या साध्वी संबुद्धयशाजी, मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी व मुख्यमुनिश्री मुनि महावीरकुमारजी ने अक्षय तृतीया, तपस्या व भगवान ऋषभ आदि विषयों पर उपस्थित जनमेदिनी को उद्बोधित किया।

अध्यात्म जगत के महासूर्य महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अक्षय तृतीया महोत्सव के अवसर पर अपनी अमृतवाणी का रसपान कराते हुए कहा आध्यात्मिक ग्रंथों में धर्म के तीन प्रकार बताए गए हैं-अहिंसा, संयम और तप। आचार्यश्री ने कहा कि आज अक्षय तृतीया है। अक्षय का अर्थ होता है जिसका क्षय न हो। इस अवसर पर अक्षय ज्ञान, अक्षय दर्शन और अक्षय चारित्र की शक्ति के विकास प्रयास हो तो तपस्या और भी फलीभूत हो सकती है।

इस दौरान आचार्यश्री ने सम्मुख उपस्थित श्रद्धालुओं तथा टीवी व सोश्यल माध्यम से सीधे प्रसारण से जुड़े हुए तपस्वियों को तपस्या के दौरान लगे दोषों के लिए ५१ सामायिक की आलोयणा प्रदान की तथा अगले वर्षीतप का धारण के अनुसार प्रत्याख्यान भी कराया। इस अवसर पर आचार्यश्री ने अपने दीक्षा प्रदाता मंत्रीमुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) का स्मरण करते हुए उनके वार्षिकी पुण्यतिथि पर अपनी भावांजलि अर्पित की। आचार्यश्री ने कहा कि साध्वीप्रमुखाजी के महाप्रयाण के बाद पहली बार अक्षय तृतीया का समायोजन हो रहा है।

कार्यक्रम में प्रवास व्यवस्था समिति-सरदारशहर की महामंत्री श्रीमती सूरजबाई बरड़िया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल व कन्या मण्डल ने संयुक्त रूप से गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

- सुखराज सेठिया

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य महाश्रमण जी के षष्टिपूर्ति जन्म वर्ष पर कोटि-कोटि वंदन
Research Dev. & Mfg. Corporation
Manufacturers Of:
SPUR, HELICAL, BEVEL, WORMS,
WOEM WHEEL, RACKS & GEAR BOXES

490 (K), 2nd Stage, 4th Phase,
Peenya Industrial Area, Bangalore,
Karnataka, Bharat - 560 058
Ph. : 080 - 22974041
Fax : 080 - 41171049
Mob. : 9448045383 / 9972381111

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

आचार्य महाश्रमण जी के षष्टिपूर्ति दिवस पर कोटि-कोटि वंदन

Jain Marmo Industries Ltd.

Quarry Owner, Processors & Exporters of all kinds of Marble & Granite (Blocks & Slabs)

Factory & Corporate Office
N.H.8, Sukher, Udaipur, Rajasthan - 313001
Tel:+91-294-2441666 / 2441777 Mob. No. : +91-9829051520
e-mail: jainmarmo_udr@yahoo.com

Delhi Office
S-3, Green Park Extn., New Delhi -110016
Tel: +91-11-26511203 / 26515408 Mob. No. +91-9810165002
Email: omegamarmo13@yahoo.com

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

युगप्रधान पदाभीषेक एवं षष्ठीपूर्ति समारोह पर शत् शत् नमन

बुधमल लुनिया

अध्यक्ष: श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा कोलकाता
तारानगर निवासी-हावड़ा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ७२७८९९२३८७

४८, मालीपंचघोरा स्ट्रीट, हावड़ा,
पश्चिम बंगाल, भारत - ७१२२०४

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

हम हैं तीर्थंकर महावीर के अनुयायी
णमोकार मंत्र हमारा एक है - हम-सब जैन हैं

विश्व विख्यात मार्बल नगरी मदनगंज में १२४ वर्ष पुराने मन्दिर का नवीनीकरण ९ वर्षों से अनवरत चालू है।

सहयोग व दान राशि निम्न एकाउण्ट में
यूनियन बैंक ऑफइण्डिया, किशनगढ़ शाखा, अजमेर-३०५८०१
IFSC Code. UBIN0910431
A/C. 520401000071491
में जमा करवा करके मो. ९८२९०७११४२ कोषाध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार दगड़ा को सूचित करें ताकि आपकी रसीद प्रेषित की जा सकें।

श्री चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मन्दिर ट्रस्ट
कोषाध्यक्ष
सुरेन्द्र कुमार दगड़ा

तेली मोहल्ला, सिटी रोड, मदनगंज-किशनगढ़, राजस्थान, भारत- 305801

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य महाश्रमण जी के ६०वें जन्म दिवस पर
कोटि-कोटि वंदन

दिनेश चौधरी -मो. 9828172726 सुरेश चौधरी-मो. 9929043722

गोपाल लाल दिनेश कुमार

जैन मंदिर के लिए सिंहासन, छत्र, भामण्डल,
चमर व सभी उपकरणों के निर्माता व विक्रेता

97, किशनपोल बाजार, जयपुर, राजस्थान, भारत-302003
अणुडाकः sureshmetals93@gmail.com
अंतरतानाः www.ascrafts.com

हमारे यहां शिखर कलश एवं ध्वजा पर सोना का वर्क भी कुशल कारीगरों द्वारा चढ़ाया जाता है।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जन्म दिवस पर विशेष- राम चमक रहे भानु समाना

नदियों का जल पवित्र होता है। वृक्षों की छाया सुखदायी और शीतलता प्रदान करने वाली है। वायु प्राण रक्षा करती है। पुष्प चारों दिशाओं में अपनी खुशबू फैलाते हैं और वातावरण को शुद्ध एवं सुवासित बनाते हैं। समस्त जगत की आत्मा सूर्य है। सूर्य सृष्टि में ऊर्जा और प्रकाश का मुख्य स्रोत है अर्थात सूर्य के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। उसी प्रकार हमारी अनंत आस्थाओं के केंद्र परम उपकारी आचार्य प्रवर १००८ श्री रामलाल जी म. सा. का जीवन अनेकानेक सदगुणों से विभूषित, अलौकिक, दिव्य, अनुपम एवं श्रेष्ठ है। आचार्य श्री सूर्य की भांति तेजस्वी, चंद्रमा के समान शीतलता प्रदान करने वाले, समुद्र के समान गंभीर हैं। उनका संयमित जीवन हम सभी के लिए अनुकरणीय है। वे सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चरित्र इन त्रय रत्नों के महान आराधक और केवल्य ज्ञानी है। जिस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम राम का नाम पत्थरों पर लिखकर समुद्र में डाल दिये तो वह पत्थर तैर गए, समुद्र पर सेतू बन गया, उसी प्रकार यदि कोई श्रावक सच्चे मन से राम मुनि के चरणों में वंदन कर उनके द्वारा निर्देशित मार्ग का अनुसरण करें तो इस संसार रूपी भवसागर को पार करना, मोक्ष मार्गी बनना अत्यंत सुगम हो जाएगा। सही अर्थों में उन्हें सामाजिक उत्क्रांति का प्रदायक, व्यसनमुक्ति एवं संस्कार क्रांति का उद्घोषक कहा जा सकता है। वे अंधकार से प्रकाश की ओर, कुमार्ग से सन्मार्ग की ओर, अवनति से उन्नति की ओर ले जाने वाले सदगुरु हैं। वर्तमान में समूचे देश और समाज को, विश्व मानवता को आचार्य श्री राम मुनि के उपदेशों को अंगीकार करने की महती आवश्यकता है।

उल्लेखनीय है कि समय की गति के साथ-साथ सामाजिक सुधारों पर ध्यान नहीं दिया जाता तो समाज में जड़ता आ जाएगी। समाज गतिहीन बन जाएगा और एक दिन उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। वर्तमान में धर्म, जाति और संप्रदाय के नाम पर जो झगड़े हो रहे हैं, सामाजिक समरसता समाप्त हो रही है, जातिगत विभेद के कारण जो विषाक्त वातावरण बन रहा है, उसके निराकरण की आवश्यकता है। सांप्रदायिक सद्भाव और सही अर्थों में धर्मनिरपेक्षता का वातावरण सृजित करने की आवश्यकता है, समाज में मानवीयता के भावों का संचार करने की आवश्यकता है, सेवा और परोपकार को प्रश्रय देने की प्रवृत्तियों को प्रवृत्त करना जरूरी है, तभी देश और समाज सुखी, समृद्ध, विकसित और गतिशील बन सकेगा। लोगों को व्यसन मुक्त बनाना भी आवश्यक है। नशीले पदार्थों के सेवन से व्यक्ति का जीवन नष्ट हो जाता है, वह जीवन में कभी उभर नहीं पाता। उचित ही कहा गया है -

'हजारों बह गए बोतलों के बंद पानी में,
जो डूबे गिलासों में, वे नहीं उभरे जिंदगानी में।'

मुनि श्री राम आचार्य नानेश के अंत:वासी शिष्य थे। सच्चे हीरे के पारखी आचार्य नानेश ने अपने दीर्घकालीन अनुभव का लाभ लेते हुए आगम संबंधी जानकारी के प्रकांड विद्वान मुनि प्रवर श्री राम को ७ मार्च १९९२ ई. को के जूनागढ़ राज महल के प्रांगण में हुक्म संघ की बागडोर प्रदान कर उन्हें युवाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित किया तथा १९९९ ई में आपश्री साधुमार्गी संघ के नवम् आचार्य बने। उस समय परिस्थितियां अनुकूल नही थी किंतु उन्होंने अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति के बल पर विपरीत परिस्थितियों को दरकिनार करते हुए सौभाग्य का सूर्य उदित किया।

आचार्य श्री राम निष्पृह एवं फक्कड़ प्रवृत्ति के संत है। उनका जीवन खुली किताब जैसा है। जैसा भीतर वैसा ही बाहर। दिखावे और प्रदर्शन से कोसों दूर। शोध कार्यों में रत रहना उसकी नैसर्गिक प्रवृत्ति है।

वे अंधानुकरण के पक्षधर नहीं है। उन्हें हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं का गहरा ज्ञान है तथा ज्योतिष शास्त्र में विशेष रूप से दक्ष हैं। आपकी सत्य के प्रति अभिरुचि, प्रज्ञा की क्षमता, उच्च कोटि की, विश्लेषण क्षमता एवं पूर्वाग्रह से मुक्त हैं।

आप परमागम रहस्य ज्ञाता है। तपस्या आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आप हुक्म संघ के प्रथम आचार्य हैं जिन्होंने मासखमण की तपस्या संपन्न की। इसके अतिरिक्त १४, ८, ९, १२, १०८ एकासन चार माह एकांतर तथा प्रतिमाह उपवास एवं चार एकासन वर्तमान में भी कर रहे हैं।

आचार्य पद प्राप्ति के बाद आपने दृढ़ निश्चय कर श्रावक-श्राविकाओं को ज्ञानवान और क्रियावान बनाने का संकल्प लिया। इस हेतु आपने प्रमुख रूप से ज्ञान चेतना वर्ष, प्रतिक्रमण एवं स्वाध्याय वर्ष, जप-तप-त्याग-नियम वर्ष, व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण वर्ष, संघ समर्पण वर्ष का विशेष रूप से आयोजन किया। आपने ३०० से अधिक मुमुक्षुओं को जैन भागवती दीक्षा प्रदान कर उन्हें कठोर संयम और साधना के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी, जिससे आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सके। इतना ही नहीं आपने गुरुकुल की स्थापना कर दीक्षा पूर्व मुमुक्षुओं के लिए आगम ज्ञान तथा अन्य प्रमुख धार्मिक ग्रंथों का ज्ञान प्राप्त करने की समुचित व्यवस्था की। आपने साधु- साध्वियों के ज्ञान विकास हेतु मीमांसा परिषद आयोजित की जो धार्मिक क्षेत्र में एक उल्लेखनीय कार्य था। आपने लगभग १७ राज्यों में हजारों किलोमीटर की पदयात्रा कर धर्मोपदेश का अमृत पान कराया। आपने दक्षिण भारत के तिरुचिनापल्ली तक तथा पूर्वांचल मैं धर्मजागरण का शंखनाद किया। आपने भारत के विभिन्न प्रांतों में जैन दर्शन एवं सामाजिक साधना के लिए श्रावक श्राविकाओं को उत्प्रेरित कर उन्हें जीवन में सन्मार्ग का अनुगामी बनाया। मालवा क्षेत्र में लोगों को व्यसनों से मुक्त करा कर उन्हें सदाचार युक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। संक्षेप में आचार्य प्रवर राम मुनि अनंत गुणों से विभूषित हैं तथा सूर्य की भांति अपना तेज और ओज चहूं ओर फैला रहे हैं। हम उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की मंगल कामनाएं करते हुए उनके श्रीचरणों मैं बारंबार वंदन अर्ध्य अर्पित करते हैं।

हम सौभाग्यशाली हैं कि ऐसी महान आत्मा के चरणों में वंदन करने का हमें अवसर मिलता रहा हैं।

- ईश्वर चंद बैद
अध्यक्ष, श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखा, (बीकानेर)

महामहिम राष्ट्रपति के हाथों सम्मानित हुए विक्की डी. पारेख स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा इस युवा संगीत रत्न का शिलालेख

दिल्ली: मानवता के कानन में मनुष्यत्व मन की ललक से फलख पर अलख जगाकर जो लोग मानवीय संवेदनाओं की सुगंध फैलाते है सच में वे महामानव कहलाते है, महामानवों की मनोहारी धरा भारत की दिव्य भूमि राजधानी दिल्ली में ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हुआ। जिसकी सर्वत्र चर्चा जारी है, दिल्ली में भगवान महावीर सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल रोहीणी का नवीनीकरण शिलान्यास महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथजी कोविन्द के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ, उक्त अवसर पर जैन समाज के रॉक स्टार, अंतर्राष्ट्रीय गायक विक्की ड़ी पारेख व टीम ने जबरदस्त संगीतमय प्रस्तुति देकर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। महामहिम राष्ट्रपति ने मंच पर विशेष रुप से जन-जन में संगीत की सुरावलीयों से अमीट छाप छोड़ने वाले युवा गायक व जैन समाज के नायक विक्की ड़ी पारेख को स्मृतिचिन्ह प्रदान कर न केवल सम्मान किया बल्कि चालीस सेकण्ड तक उनसे बात करते हुए कहा कि संगीत ऐसी साधना है जो मानव के मन को मोहकर मानवता की सीख देती है। महामहिम राष्ट्रपति ने विक्की पारेख को शाबाशी देते हुए कहा कि आप इसी तरह गाते रहे और अपने गीतों से समाज में नवक्रांति का संदेश दे।

जैन समाज का एक युवा लाड़ला जिसने संघर्षों से नाता जोड़कर स्वंयम अपनी जमीं तैयार की उसके लिए आज का दिन किसी चमत्कार से कम नहीं था। अपनी मनमोहक मुस्कान व आवाज से दिल जीतने वाले विक्की के साथ जब समारोह में उपस्थित एक से बड़े एक उच्चस्थ पदो पर आसीन व्यक्तियों, भामाशाहों ने सेल्फी व तस्वीरें ली तो वाकई वो क्षण स्वर्णिम इतिहास रच गया।

दिल्ली के सांसद हंसराज हंस जो स्वंयम् एक बहुत बड़े गायक है, उन्होंने भी विक्की के साथ एक गीत की जुगलबंदी की तो वातावरण संगीत के दो सितारों की जादुई आवाज से गुंज उठा, स्वंयम वहा उपस्थित जैन समुदाय के बड़े-बड़े संत व साध्वीजी भी आशीर्वाद देने के लिए उठ खडे हुए।

लालित परमार मंचसंचालक, कौरस सिंगर सन्नी जैन, नीरव वाघेला व साजवादक सभी इस कार्यक्रम में उपस्थिति रहे।

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

!! ॐ अर्हम् !!
तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर अहिंसा यात्रा के प्रणेता,
महातपस्वी, शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के
जन्म दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

Manoj Baid Mob. : 93810 05737
Ravi Baid Mob. : 80561 95737
Jayesh Baid Mob. : 93800 05737

SARVOTHAM PLYLAM

186/1, Sydenhams Road, Apparao Garden, Chennai,
Tamil Nadu, Bharat - 600 112 Ph. : 044 - 26690112, 26690373
e-mail : sarvothamplylam@gmail

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

सम्पूर्ण जैन समाज को ४० महिने से बन्द पड़ा चौपड़ा कुण्ड के जिनालय को खुलवाकर भक्तों को दिया अपनी तप साधना से अतिशय पुण्य का उपहार अंतर्मना प्रसन्न सागर जी ने

सम्मेद शिखर जी: ४० महिनो से बन्द पड़ा चौपड़ा कुण्ड जिनालय के भव्य द्वार उद्घाटन समारोह परम पूज्य, उभयमासोपवासी, महातपोमार्तण्ड, दुर्धरतप शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर पर्वत पर कठिन तप, अखण्ड मौन साधना करने वाले साधना महोदधि अंतर्मना आचार्य श्री १०८ प्रसन्न सागर जी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से अंतर्मना संघ सानिध्य में सम्पूर्ण जैन समाज को ४० महिने से बन्द पड़ा चौपड़ा कुण्ड के जिनालय को खुलवाकर भक्तों को अपनी तप साधना से अतिशय पुण्य का उपहार स्वरूप दिया।

इस शुभ संयोग पर मंदिर कर्मचारियों की ओर से द्वारिका रेजवार जी ने कहा कि हम सभी बहुत भाग्यशाली हैं कि हमारे शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर पर्वत की पारस नाथ टोंक पर साधना महोदधि अन्तर्मना आचार्य श्री१०८ प्रसन्न सागर जी महाराज की ५५७ दिन की उत्कृष्ट सिंहनिष्क्रिड़ित व्रत की मोन तप साधना चल रही है, हम सभी गुरुवर की अतिभव्य साधना से प्रभावित हैं। अंतर्मना गुरुदेव ने हमें आशीर्वाद व प्रेरणा दी है कि आप भगवान के द्वार खोल दो, भगवान आपको सुखी, स्वस्थ और प्रसन्न रखेगा।

अतएव हमने अंतर्मना गुरुदेव के आशीर्वाद को अपना अहोभाग्य मानते हुए साथ ही सम्पूर्ण भारत व विश्व के सभी जैन भाइयों की आस्था व श्रद्धा को ध्यान में रखते हुए हम सभी साथी कर्मचारियों ने आपसी समन्वय से यह निर्णय लिया है कि मंदिर के द्वार सभी भक्तों के लिए खोल दिए जायें और नियमित भगवान की पूजा अर्चना हो, आज वह संयोग आ ही गया साथ ही आज अक्षय तृतीया का महाशुभ संयोग है। आज ही के दिन भगवान बद्रीनाथ के पट खुलते है, आज हम भी अंतर्मना गुरुदेव के समक्ष हमारे पारस बाबा के द्वार खोल रहे हैं।

इस पावन पुनीत अवसर पर अंतर्मना आचार्य श्री ने अपने लिखित संदेश में कहा कि -

णमो सव्व सिद्धाणं...

प्रिय आत्मन--अनन्त प्रेम!

जिनकी बदौलत से हमें दौलत मिल रही है, हमारा घर, परिवार फल फूल रहा है, आज वो ही परमात्मा ४० महिनों से बिना अभिषेक, पूजा-पाठ, विधान के बैठे हैं।

मन अति प्रसन्न हो रहा है कि अक्षय तृतीया जैसा महान पर्व उत्कृष्ट सिंहनिष्क्रीडित व्रत मध्य के १६ उपवास की महापारणा एवं ४० महिनो से बन्द पड़ा चौपड़ा कुण्ड जिनालय के भव्य द्वार उद्घाटन करके सम्पूर्ण जैन समाज को चौपड़ा कुण्ड का उपहार दिया जा रहा है। नित्य जिनाभिषेक, पूजा-पाठ का उत्सव, आने वाले हजारो लाखों तीर्थ यात्रीयों के उत्साह का कारण बनेगा। तीर्थराज सम्मेद शिखर पर्वत पर यह त्रय मणिकांचन संजोग, चोपड़ा कुंड पर विराजित ज्योर्तिमयी जिन मंदिर की दहलीज पर सम्पूर्ण जैन समाज के सुख सौभाग्य सदभाव, प्रेम-मैत्री पुण्य प्रभात का उदय है! अहिंसा प्रेम की मंगलमय कामना करता हूं।

नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल

With Best Compliments from

देवेन्द्र कुमार जैन

अध्यक्ष
श्री जैन समाज मेरठ पूर्व
डी-ब्लाक, शास्त्रीनगर, मेरठ

प्रवीण जैन

असीम जैन

पल्लवी जैन

अगम्य जैन

JAINSON LAB INDIA
(ISO 9001-2015 CERTIFIED COMPANY)
Manufacturer, Exporter & Importer of Chemicals
Factory : A-2, UDYOGPURAM, DELHI ROAD, MEERUT-250103 (U.P.) INDIA
PH.: 0121-2440018, FAX : Email : jainsonalloys@gmail.com
Residence : 154, Sector-7, Shastri Nagar, Meerut-250004 Ph.: 0121-2768595, (M) 9837022459

आचार्य महाश्रमण का व्यवहार कौशल

व्यक्ति का व्यक्तित्व परिलक्षित होता है आचरण से, कार्यशैली से, आहार से, वाणी से। हमारी जीवन शैली दर्पण होती है हमारे व्यक्तित्व की। साधारण कार्य ही हमें असाधारणता की ओर ले जाते है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है- ''यदि तुम किसी मनुष्य के चरित्र को जाँचना चाहते हो, तो उसके बड़े कार्यों पर से उसकी जाँच मत करो। मनुष्य के अत्यंत साधारण कार्यों की जाँच करो वे ही ऐसी बातें हैं, जिनसे तुम्हें एक महान् पुरुष के वास्तविक चरित्र का पता लग सकता है।''

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण से पहला परिचय मुनि मुदित के रूप में इतिहास के अलभ्य अवसर ''आचार्य श्री तुलसी अमृत महोत्सव'' के द्वितीय चरण पर समायोजित जनाभिनंदन समारोह में २२ सितम्बर १९८५ को आमेट (राजसमंद) में हुआ। समारोह संयोजक के रूप में मैंने मुनि उदित एवं मुनि मुदित को आमंत्रित किया और युवा मुनियों ने आचार्य तुलसी के जीवन की प्रमुख घटनाओं को एक-एक कर परिसंवाद के रूप में अपने ओजस्वी स्वरों में प्रस्तुत किया। २३ वर्षीय मुनि मुदित ने पूरे आत्मविश्वास के साथ शुद्ध उच्चारण सहित आचार्य तुलसी की जीवन गाथा को प्रस्तुत करते हुए ओजस्वी वक्ता का परिचय दिया। मुनि मुदित की इसी ऋजुता, विनम्रता, अध्ययनशीलता, कर्तव्य परायणता, समर्पण और वक्तव्य शैली ने आचार्य तुलसी के मन को अन्तस् तक प्रभावित किया और गुरुदेव तुलसी ने संघ की भावी व्यवस्था को आकार देते हुए २३ वर्ष की छोटी उम्र में मुनि मुदित को युवाचार्य महाप्रज्ञ के अंतरंग सहयोगी के रूप में स्थापित कर युवा कंधों पर संघ के भविष्य को सुनिश्चितता प्रदान की।

विनम्रता की मूरत

मुनि मुदित प्रारंभ से ही अत्यंत विनम्र, सहज, सरल एवं मितभाषी स्वभावी रहे हैं। बड़ों के प्रति विनम्रता एवं आदर भाव आपकी जीवन शैली का अंग है। मैं भूल नहीं सकता १४ सितंबर १९९७ का वह दिन जब अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने महाश्रमण मुदित को युवाचार्य से संबोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रमण के रूप में प्रतिष्ठापित किया तो गंगाशहर में उस ऐतिहासिक क्षण की साक्षी रही हजारों लाखों आंखें खुशियों से नाच उठी। समारोह सम्पन्नता के उपरांत मैं अपने पिताश्री अणुव्रत प्रवक्ता काका देवेन्द्र कुमार कर्णावट के साथ युवाचार्य महाश्रमण की अभिवंदना करने तेरापंथ भवन गंगाशहर की पहली मंजिल पर पहुंचा तो देखा युवाचार्य महाश्रमण कमरे के बाहर बरामदे में नीचे ही अपने आसन पर शांत मुद्रा में बैठ चिरपरिचित मुस्कान के साथ जनता की अभिवंदना को स्वीकार कर रहे हैं। काका देवेन्द्र ने युवाचार्यश्री की अभिवंदना के लिए अपने हाथों को उनके चरणों की तरफ बढ़ाया तो युवाचार्यश्री ने काका के दोनों हाथों को अपने हाथों में थामते हुए अत्यंत विनम्रता के साथ कहा- काका! आपसे बहुत पाया सीखा है। युवाचार्यश्री की इस गहरी आत्मीयता एवं विनम्रता को देख मुझे याद आये साहित्य मनीषी हरिभाऊ उपाध्याय के ये शब्द- ''व्यक्ति विनम्रता, सच्चाई, ईमानदारी तथा लोक हितकारिता के राजपथ पर दृढ़तापूर्वक रहे तो उसे कोई भी बुराई क्षति नहीं पहुंचा सकती।'' बड़ों के प्रति ऐसा दृष्टिकोण आध्यात्मिक जागृति के द्वारा ही संभव है। आचार्य महाश्रमण ने ध्यान साधना से अध्यात्म के सार तत्व को पाया है जो प्रेम और शांति से युक्त हैं।

बाल स्वरूप

आचार्य महाश्रमण की इसी सरलता, विनम्रता और व्यवहार कुशलता को मैंने १९ मार्च २०११ से २५ फरवरी २०१२ तक मेवाड़ अंचल की यात्रा में देखा है। अहिंसा यात्रा के मेवाड़व्यापी परिभ्रमण के दौरान यात्रा,पथ में आ रहे हर गाँव-ढाणी को अपने पाँवों से नापना आचार्यवर का क्रम था। मार्ग में बच्चों, बुजुर्गों, महिलाओं, पुरुषों एवं साधुओं का आग्रह देख महाश्रमणजी के पाँव उन्हीं की ओर **शेष पृष्ठ ४२ पर...**

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

सारा जग करता है वंदन आप हैं तेरापंथ के नंदन
आचार्य महाश्रमण जी के षष्टिपूर्ति विशेष दिवस
पर हमारा कोटि-कोटि वंदन!

गुणसागर कर्णावट डॉ. महेन्द्र कर्णावट
गांधी सेवा सदन, राजसंमद
मो. ९४१४१७२३२५
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ४१ से... उठ जाते थे। जिन गाँवों में नहीं जाना था, उन गांवों में भी महाश्रमणजी अतिरिक्त श्रम करके गये, और ग्रामवासियों को भाईचारे के साथ जीने, नशामुक्त होने की सीख दे अगले निर्धारित पड़ाव की ओर बढ़ गये।

मेवाड़व्यापी यात्रा में आचार्यश्री का लक्ष्य रहा अधिक से अधिक गांवों में जाना, वहां के जन जीवन का अवलोकन करना, वहाँ का परम्परागत आहार ग्रहण करना एवं जन भावनाओं का आदर करना। २ अप्रैल २०११ को बावलास गाँव की धर्मसभा में आचार्यप्रवर के प्रवचन उपरांत एक नन्हा बालक अचानक मंच पर चढ़ा और महाश्रमणजी के सामने जा मौन खड़ा हो गया। महाश्रमणजी ने ममत्व भरे बाल स्वरों में नन्हें शिशु से पूछा- बोलोगे। शिशु ने सिर हिला दिया। महाश्रमणजी बोले- जोर से बोलो और उस नन्हें बालक ने तुतलाते स्वर में कविता पाठ कर दिया। बाल कविता पाठ को आचार्यश्री ने पूरे मनोयोग से सुना और कहा- बालक की कोमल भावनाओं का आदर करना मेरा कर्तव्य था। यह है आचार्यश्री का बालपन जो अवसर पाते ही अपनी बाललीला प्रारंभ कर देता है।

मुझे याद है १० अप्रैल २०११ का वह दिन जब आचार्य प्रवर रेलमगरा से बनेड़िया की ओर पाद विहार कर रहे थे तो कारोलिया के हनुमान मंदिर के बाहर बैठे साधुओं ने हरिओम-हरिओम कह कर अभिवादन किया। आचार्यश्री सहज रूप से उन साधुओं के पास पहुँचे, अभिवादन किया और नशा को छोड़ने की बात कही तो वे साधु नतमस्तक हो गये।

हैदराबाद से भीलवाड़ा तक की यात्रा में मार्ग में वरिष्ठ नागरिकों से ठहर कर उनकी कुशलक्षेम जानना महाश्रमणजी की जीवनचर्या का अंग बना। आचार्य महाश्रमण का यह ममत्वभरा व्यवहार कौशल उनकी नेतृत्व क्षमता का उजला पक्ष है जो जन-जन को आकर्षित करता है।

महामारी के भयग्रस्त माहौल में भी आचार्यश्री ने हैदराबाद से भीलवाड़ा तक की साहसिक यात्रा की। यात्रापथ में जंगलों को पार किया तो नक्सलवाद प्रभावित छत्तीसगढ़ के इलाकों में प्रवास कर वहां शांति और प्रेम का जल छिड़का।

१० जुलाई २०२१ को भीलवाड़ा चातुर्मासिक क्रम में आचार्य महाश्रमण का ऐतिहासिक स्थल चित्तौड़गढ़ प्रवास का क्रम था। मैंने जीवन संगिनी कल्पना, अनुज अतुल-हेमा शिशोदिया एवं उनके मित्रों के साथ चित्तौड़गढ़ से ८ किलोमीटर आगे जाकर अगवानी करने का मानस बनाया। यात्रायित मार्ग में सड़क किनारे खड़े होकर मैं आचार्यश्री के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था। मन में तरह-तरह के विचार उमड़ रहे थे। क्या आचार्यश्री मुझे पहचान पाएंगे? क्योंकि मैं शारीरिक रुप से बहुत दुर्बल हो गया था और मास्क लगा रखा था। आचार्यश्री धीरे-धीरे कदम बढ़ा रहे थे। मैंने दूर से ही वंदना निवेदित की तो आचार्यश्री ने मेरे सभी पूर्वानुभावों को झुठला दिया। तेजी से मेरी तरफ बढ़े, रुके और चित परिचित मोहक मुस्कान के साथ सड़क किनारे खड़े हो मेरे स्वास्थ की पूरी जानकारी प्राप्त की। सड़क पर खड़े-खड़े हमारी लगभग दस मिनट तक चर्चा हुई फिर आशीर्वाद के रुप में मांगलिक प्रदान कर आगे की तरफ बढ़े। आचार्यश्री से वार्ता के वह दस मिनट मेरे जीवन के सर्वाधिक आत्मिक शांति और न भूले जाने वाले क्षण थे। कल्पनाजी के अनुज-अनुजा अतुल-साधना शिशोदिया ने इस दृश्य को अपनी आँखों में संजोते हुए कहा- ''जीजाजी! आपको देखते ही आचार्यश्री के चेहरे पर जो मुस्कान बिखरी वह कल्पनातीत थी। हम सम्मोहित हो उठे। लगा आचार्य और शिष्य की दूरियाँ समाप्त हो चली। आप दोनों जिस ममत्व-आदर भाव से आपस में वार्ता कर रहे वैसा दृश्य हमने जीवन में पहली बार देखा।'' चितौड़गढ़ के बाद भीलवाड़ा चातुर्मास काल में मुझे चार बार आचार्यश्री के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। वही स्नेहिल आत्मीय मुस्कान और प्रेम हर बार सर्वत्र पसरा रहा।

९ नवम्बर २०१४ को दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले से आचार्य महाश्रमण ने अपने धर्मगुरू आचार्य महाप्रज्ञ का अनुसरण करते हुए देशव्यापी सप्तवर्षीय अहिंसा यात्रा का संकल्प किया। इन वर्षों में भारत देश के बीस राज्यों, नेपाल एवं भूटान की विदेशी धरा का लगभग १८००० किलोमीटर चतुर्विध धर्मसंघ के साथ पैदल परिभ्रमण कर सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति और अहिंसा का संदेश चारों ओर पहुंचाया। २७ मार्च २०२२ को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में अहिंसा यात्रा का समापन करते हुए आचार्य महाश्रमण ने जो कहा वह उल्लेखनीय है- ''कोई भी प्राणी हंतव्य नहीं है। अहिंसा ऐसा धर्म है जो व्यक्ति की चेतना को विशुद्ध और उसे शांति से जीने में सघन सहायक सिद्ध होता है। अहिंसा एक ऐसी सर्वोतम नीति है, जो हर नीति के भीतर प्राणतत्व के रूप में विराजमान हो जाये तो सभी नीतियाँ उत्कृष्ट बन सकती हैं।''

अभिवंदनीय है अहिंसा के अग्रदूत आचार्य श्री महाश्रमण जो सदैव शांत रहते हैं और जिनके चेहरे पर हर परिस्थिति में मुस्कान ही देखने को मिलती हैं।

- डॉ. महेन्द्र कर्णावट
अणुव्रत प्रवक्ता, कल्पना कुंज, राजसमंद

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के जन्म दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

Vimalchand Jain
Mob : 9837253305

THE RAJASTHAN SILICA SAND SUPPLIERS
Dealers & Suppliers of : Silika Sand & Other Glass Raw Material
128, Ganesh Nagar, Sector1, Flrozabad - 283203
(Residence) Mob: 09219407900

SANTOSH MINERAL & CHEMICAL Co.
Dealers & Suppliers of : Silika Sand & Other Glass Raw Material
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जिनागम

भारत को भारत ही बोलें इंडिया नहीं — Remove INDIA Name From The Constitution

अध्यात्म जगत के सजग प्रहरी महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण

शांति कुमार जैन
प्रभारी न्यासी
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
भ्रमणध्वनि: ९८११२ २५५७५

इस परिवर्तनशील संसार में अनेकानेक प्राणी जन्म लेते हैं, किन्तु सभी का जीवन सार्थकता को प्राप्त नहीं करता, क्योंकि कुछ आत्माएं सांसारिक मोह-माया के जाल में फंसकर जीवन जीने की कला से अनभिज्ञ रहती हैं, वहीं कुछ भव्य आत्माएं जीवन को सम्यग् प्रकार से उपयोग करके आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर होती हुई त्याग के मार्ग को प्रशस्त करती हैं, निज पर कल्याण हेतु समर्पित होकर जन-जन की श्रद्धा का केन्द्र बन जाती हैं। वास्तव में देखा जाये तो वही जीवन सार्थक होता है जो स्व-पर हित के लिए अर्पित होता है। रत्नत्रय की आराधना करने के साथ ही जिनका सम्पूर्ण जीवन परहित के कार्यों में समर्पित होता हैं, उन महापुरुषों के चरणों में मस्तक श्रद्धा से स्वतः ही अवनत हो जाता हैं। वे सभी के लिए वन्दनीय, पूजनीय और अर्चनीय बन जाते हैं। ऐसी ही विरल, अनूठा, दुर्लभ और गौरवमय व्यक्तित्व है तेरापंथ धर्मसंघ के युगप्रधान, महातपस्वी, अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्य श्री महाश्रमण जी का।

भारत का इतिहास संतों और मुनियों की गौरवमयी गाथाओं से भरा है, इस देश की धरती पर अनेक तीर्थंकर, अवतार, महापुरूष एवं संत पुरूष अवतरित हुए, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से समाज व राष्ट्र को सही दिशा व प्रेरणा दी। ऐसे उत्कृष्ट कोटी के प्रबुद्ध चिंतक अहिंसा, नैतिकता, शांति, सामाजिक-धार्मिक सौहार्द, अहिंसा यात्रा के प्रणेता महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी।

आपश्री का जीवन आचार और विचार दोनों प्रकार की विशिष्ठता लिए हुए है। एक ओर जहां आचार की ऊंचाईयों को नापना कठिन है, वहीं विचार की गहराइयों में उतरना मुश्किल है। आपश्री का जीवन प्रत्येक प्राणी के लिए प्रेरणास्पद है। गुरु के प्रति समर्पित ऐसा व्यक्तित्व कहां मिलेगा? आपश्री ने विनय और समर्पण का अनूठा आदर्श उपस्थित किया है।

जिस प्रकार पुष्प अपने में विद्यमान रूप, रस और सुगंध को बिना किसी भेदभाव के निःस्वार्थ भावना से सभी पर न्यौछावर करता हुआ सदैव खिलता-मुस्कुराता रहता है, उसी प्रकार आपश्री का सहजिक, सरल, व्यावहारिक बाह्य और आंतरिक जीवन अंतर्मन को प्रफुल्लित करता हुआ जीवन जीने की शैली सिखा देता है। निर्विकार जीवन का गुणमय रसमाधुर्य पाप से निवृत्ति और पुण्य में प्रवृत्ति कराता हुआ धर्म के प्रति अभिमुख कर देता है। आप श्री पष्ठपूर्ति के पावन अवसर पर मैं अपनी ओर से अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास की ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। आपश्री की कृपा सदैव हम पर बनी रहे, इसी आशा विश्वास के साथ।

श्री शेर सिंह जैन के सुपुत्र श्री शांति कुमार का जन्म १८ फरवरी १९५४ को हरियाणा के उमरा में हुआ। आप संघ व संघपति के प्रति बहुत ही समर्पित व्यक्तित्व हैं। प्रारंभ से ही संघ की विभिन्न संस्थाओं के साथ जुड़े रहे। विगत लम्बे समय से अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के न्यासी रहे हैं। वर्तमान में आप अणुव्रत भवन के प्रभारी न्यासी है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली के अध्यक्ष व दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के मंत्री भी आप रहे हैं। अखिल भारतीय पेपर मर्चेन्ट एसोशियेशन के अध्यक्ष भी आप रहे हैं।

अणुव्रत न्यास द्वारा आयोजित राष्ट्रस्तरीय अणुव्रत प्रतियोगिताओं विराट कार्यकम के राष्ट्रीय संयोजक के दायित्व का निर्वहन कर अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के संदेश को विद्यार्थियों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने में सघन प्रयासरत रहे हैं। आपकी सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने २००९ में आपको अलंकरण से अलंकृत किया गया। आप अत्यंत विनम्र, सरल, अनुशासित संयमित एवं संस्कारित व्यक्तित्व हैं। धर्मसंघ के कार्यों में सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए आइये हम सब मिलकर इसकी शुरूआत करें

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!

सुरेश बाफना

अध्यक्ष जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, वाशी नवी मुंबई

राजसमंद निवासी-वाशी नवी मुंबई प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९९६७६०९५७९

सुरेश जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भाव को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है, उनके विचार आज के परिवेश के अनुरूप शुद्ध व सरल गम्य है, जो हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं, इसीलिए आपके अनुयाई ना सिर्फ तेरापंथ के श्रावक-श्राविकाएं हैं बल्कि अन्य जैन-जैनेतर समाज के लोग भी हैं। आपके विचार व मार्गदर्शन हमेशा सही दिशा की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। विशेषकर आपकी अहिंसा यात्रा और नशा मुक्ति, सद्भावना अभियान ने सभी को प्रभावित किया है। आज भी आपका प्रयास जारी है, आपका अनुशासन प्रिय जीवन, आपके प्रचार-प्रसार की विधि, आपका व्यक्तित्व हम सभी के लिए प्रेरक है, आपका आशीर्वाद सदैव हम पर बना रहे, यही प्रार्थना करते हैं, आपके षष्ठी जन्म दिवस पर्व पर कोटि कोटि वंदन।

'जैन एकता' आज समाज की सबसे ज्यादा जरूरत है। आचार्य श्री ने भी इसके लिए प्रयास किया है, आचार्य श्री ने स्थानकवासी व मंदिरमार्गी समुदाय के आचार्यों को एक साथ-एक मंच पर लाकर हमारी संवत्सरी को एक साथ करने का प्रयास किया है और यह प्रयास सफलता की ओर है। जैन धर्म व समाज की रक्षा हेतु समाज में एकता होनी जरूरी है। भले ही हमारी आमनाय पद्धतियां, विचार अलग-अलग हों पर जहां राष्ट्रीय स्तर पर बात आती है तो वहां हमें एक हो जाना चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज के प्रति अधिक सक्रिय है, वे धर्म व समाज से जुड़ी बातों में विशेष रूचि रखते हैं व गुरु भगवंतों की वाणी को आत्मसात करने का प्रयास करते हैं, युवा ही जैन समाज का भविष्य हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना हैं कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, हम भारतीय हैं तो हमारे देश का नाम भी सिर्फ 'भारत' ही रहे।

सुरेश जी मूलत: राजस्थान के राजसमंद जिले में स्थित टाडावाड़ा के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा मुंबई में ही संपन्न हुई है, वर्तमान में आप नवी मुंबई के वाशी शहर में प्रवासित हैं और यहां प्लाईवुड के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी रुचि रखते हैं। वाशी स्थित तेरापंथ सभा के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत है साथ ही महावीर इंटरनेशनल, राजपूत संस्थान से भी जुड़े हैं।

मनोज डागा

अध्यक्ष जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, राजराजेश्वरी शाखा, बेंगलुरु

बिदासर निवासी-बेंगलुरु प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८४५०६२८६५

मनोज जी तेरापंथाचार्य महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आप जैसे गुरु का हम पर आशीर्वाद है, यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है, आपके आचार-विचार-शीतलता-क्षमा व सरलता हमें प्रभावित करती है, आपने तेरापंथ के साथ अन्य पंथों के श्रावकों को भी अपने ज्ञानवर्धक प्रवचन से अनुग्रहित किया है, आपने समाज में नैतिकता, नशा मुक्ति वाहिनी आदि से जनजागृति फैलाई है, आपके विचारों को जीवन में आत्मसात करने से जीवन को नई दिशा प्रदान की जा सकती हैं, आपके षष्ठिपूर्ति जन्म पर्व पर कोटि कोटि वंदन। आपका मार्गदर्शन हमेशा हमें प्राप्त होता रहे, यही कामना करता हूँ।

जैन समाज में एकता होना बहुत जरूरी है भले ही हमारी आमनाय पद्धति अलग-अलग हों, पर हमारे मूल सिद्धांत एक ही है। हमारे तीर्थंकर महावीर एक हैं, उनके बताए दिशा-निर्देशों का ही हम पालन करते हैं। णमोकार मंत्र हमारा एक है। शास्त्रों-आगमों में लिखी वाणी एक है पर उनको अपनाने का तरीका अलग अलग है, पर हम सभी जैन है। सभी एक साथ-एक मत पर हों जाएं तभी हमारा जैन धर्म सुरक्षित रहेगा।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी हुई है, वह धर्म से जुड़े कार्यों में विशेष रूप से सक्रिय रहती हैं। विभिन्न सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहभागी होती है और दिन-प्रतिदिन यह सक्रियता बढ़ती जा रही है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, क्योंकि प्राचीन काल से हमारे देश का नाम भारत ही रहा है, जो अपनी संस्कृति व सनातन धर्म का प्रतीक है। इंडिया नाम तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया है अतः 'भारत' नाम का प्रचार-प्रसार अधिक हो तो लोगों में जागरूकता आएगी।

मनोज जी राजस्थान के बिदासर के निवासी हैं। आपका जन्म आसाम व संपूर्ण शिक्षा पश्चिम बंगाल के नदिया जिले के पलासी में संपन्न हुई। स्नातक की शिक्षा आपने कोलकाता से ग्रहण की। पिछले २५ वर्षों से आप बेंगलुरु में बसे हुए हैं और बॉक्स मैन्युफैक्चरिंग के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा राजराजेश्वरी शाखा बेंगलुर के अध्यक्ष हैं, साथ ही ट्रस्ट के भी अध्यक्ष हैं। अन्य कई व्यवसायिक संस्थान से भी जुड़े हुए हैं।

बुधमल लुनिया
अध्यक्ष श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा कोलकाता
तारानगर निवासी-हावड़ा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ७२७८९९२३८७

बुधमल जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि शासनमाता साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी ने आचार्य प्रवर से चतुर्वीद धर्म संघ की तरफ से युग प्रधान पद स्वीकार हेतु निवेदन किया। पूज्य प्रवर ने साध्वी प्रमुखा जी के अनुग्रह को स्वीकार किया। वे महान तपस्वी हैं जिन्होंने १ दिन में ४७ किलोमीटर की पद यात्रा करके अपने शिष्य शासन प्रमुखा जी को दर्शन दिए। ऐसे तपस्वी संत भारतवर्ष में मिलना दुर्लभ ही है, तेरापंथाचार्य महाश्रमण जी की प्रवचन शैली जन-जन को लुभाने वाले होती हैं। वर्तमान में आचार्य श्री राजस्थान के चुरू जिले के सरदारशहर में प्रवास पर हैं। युग प्रधान समारोह १० मई को सरदारशहर जिला चुरू राजस्थान में हुआ है, जिसमें देश-विदेश से हजारों की संख्या में श्रावक उपस्थित हुए। समारोह बहुत ही भव्य रुप में हुआ आचार्य श्री के प्रवचनों का मुख्य आधार आगम पर आधारित रहता है। तीर्थंकरों की वाणी, आगम की वाणी पर ही प्रवचन पर आधारित होते है।

'जैन एकता' के विषय पर हमारे आचार्य श्री महाश्रमण जी ने भी पहल की थी, जिसमें आचार्य राममुनि जी व आचार्य डॉ. शिव मुनि जी के सानिध्य में एक सभा भी आयोजित की गई थी कि हमारी संवत्सरी एक ही समय, एक ही दिन मनायी जाए। आज भी इस दिशा में प्रयास जारी है, भविष्य में अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी हुई है, चरित्र आत्माओं के व्याख्यान हमेशा से ही प्रभावित करते रहे हैं, तेरापंथ समाज के युवा वर्ग तो विशेषकर सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि हम भरतवंशीय हैं, हमारे देश का नाम केवल 'भारत' निश्चित रूप से रहना चाहिए, यही हमारी पहचान है।

बुद्धमलजी मूलत: चुरू जिले में स्थित 'तारानगर' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'तारानगर' में ही संपन्न हुयी है। १९७५ से आप हावड़ा में प्रवासी हैं और एल्युमिनियम के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा कोलकाता के अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं। उत्तर हावड़ा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा भवन ट्रस्ट के मंत्री पद पर कार्यरत हैं। कोलकाता में तारानगर युवक परिषद के भी मंत्री के रूप में कार्यरत हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

बिकास पुगलिया
अध्यक्ष तेरापंथ युवक परिषद लिलुआ
कालू निवासी-हावड़ा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३०३१००६८

बिकास जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि तेरापंथ धर्म संघ के ११ वें आचार्य महाश्रमण जी हैं जिनकी आभा मंडल ही निराली है, उनका व्यक्तित्व हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है, उनके द्वारा दिए गए व्याख्यान आत्मसात करने से जीवन को एक नई दिशा प्राप्त होती है, उनकी चिंतन धारा सभी की ओर प्रवाहित होती है, उन्होंने समाज की चेतना व कल्याण के लिए कई प्रयास किए हैं जिनमें से अहिंसा यात्रा भी एक है, उनकी अहिंसा यात्रा ने नैतिकता, सद्भावना, नशा मुक्ति के लिए प्रयास किया जिससे हर कोई भी अपना जीवन सार्थक कर सकता है, उनके इस अहिंसा यात्रा में बिहार के मुंगेर जिले से लेकर पश्चिम बंगाल के कोलकाता तक मैं शामिल रहा, उस दौरान कई युवाओं को जोड़ा व उन्हें प्रेरित किया गया, विशेष कर नशा मुक्ति के लिए प्रोत्साहन दिया गया, जिससे ना सिर्फ जैन समाज के बल्कि अन्य धर्म और समाज के लोग भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाए। आचार्य महाश्रमण जी का ४९ दिक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया जा रहा हैं। गुरुवर का आशीर्वाद और कृपा दृष्टि हम पर बनी रहे यही प्रार्थना है, उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन।

'जैन एकता' के विषय पर विकास जी का कहना है कि आज समाज में एकता बहुत ही जरूरी है और इसके लिए विशेषकर युवाओं को साथ लेकर चलने की आवश्यकता है, उनके प्रयासों व कार्यों से अवश्य एकता स्थापित हो सकती है। महावीर जन्म कल्याणक पर्व व संवत्सरी एक साथ-एक ही समय पर मनाया जाना चाहिए। तीर्थकर महावीर के दिए गए सिद्धांत 'जियो और जीने दो' को बढ़ावा देने के लिए 'जैन एकता' जरूरी है और यह आज के समय की मांग भी है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। मैं इसका पूर्ण समर्थन करता हूं क्योंकि यही हमारी संस्कृति और इतिहास है।

बिकास जी मूलत: राजस्थान के 'कालू' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा पश्चिम बंगाल के सैंथिया में संपन्न हुई हैं। पिछले कई वर्षों से हावड़ा के लिलुआ में बसे हुए हैं और यहां फर्नीचर के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही तेरापंथ युवक परिषद लिलुआ, हावड़ा के अध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

देवेन्द्र जैन
अध्यक्ष श्री जैन समाज शास्त्री नगर मेरठ
मेरठ निवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३७०२२४५९

देवेन्द्र जी 'जैन एकता' के विषय पर अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि वर्तमान में 'जैन एकता' की नितांत आवश्यकता है। जैनों की संख्या कम है, ऊपर से हम कई पंथों व संप्रदायों में बंटे हुए हैं, जिस कारण हमारे धर्म और समाज का महत्व कम होते जा रहा है। अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए 'जैन एकता' अवश्य स्थापित होनी चाहिए, हम सिर्फ जैन हैं हमारे सिद्धांत एक हैं फिर यह अलगाववाद क्यों? समाज व धर्म के महत्व को बनाए रखने के लिए जैन समाज में एकता जरूरी है। आज की युवा पीढ़ी धर्म से जुड़ना चाहती है पर अपने व्यस्त जीवन के कारण वह धर्म और समाज से नहीं जुड़ पा रही है, अतः समाज व परिवार का कर्तव्य है कि उन्हें उचित दिशा निर्देश प्रदान करें, जिससे वे अपने धर्म समाज से जुड़े रहें। अपने धर्म के मर्म को समझने के लिए उन्हें सहयोग प्रदान करें।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। अनादि काल से अपना देश 'भारत' नाम से ही संबोधित होता रहा है। 'भारत' हमारा गौरव है, 'भारत' हमारा इतिहास है अतः अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया तो अब कदापि नहीं।

देवेन्द्र जी का जन्म व संपूर्ण शिक्षा मेरठ में संपन्न हुई है। आपने विज्ञान संकाय से स्नातक की शिक्षा पूर्ण की। यहां केमिकल मैन्युफैक्चरिंग के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। मेरठ स्थित शास्त्री नगर श्री जैन समाज के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। इस संस्था के अंतर्गत श्री दिगम्बर जैन देवालय का संचालन किया जाता है। अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

रचना हिरण
अध्यक्षा तेरापंथ महिला मंडल मुंबई
भीलवाड़ा निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२१३८५५८७

रचना जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के षष्टिपूर्ति पर्व पर विशेष पर अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहती हैं कि

मुस्कुराता चेहरा चमकती आंखें, तुम्हारी सूरत है अलगारी ।
वाणी में घोला अमृत, तुम्हारी महिमा है बड़ी भारी ।
महातपस्वी, महाश्रमण करते हैं हम तुम्हे वंदन ।
बढ़ते रहो-शिखर चढ़ते रहो, देखे यह दुनिया सारी ।।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की महिमा हम जितनी करें उतनी ही कम है। आप महा योगी महातपस्वी है, आपकी अहिंसा यात्रा निरंतर जारी थी पर उनके चेहरे पर कभी कोई शिकन नहीं दिखाई दी। श्रावकों को आशीर्वाद देने के लिए उनका हाथ सदा उठा रहता है, ऐसे आचार्य प्रवर को पाकर तेरापंथ धर्म संघ धन्यता का अनुभव करता है और हम यही कामना करते हैं कि युगों तक आचार्यश्री संघ का संचालन करें, हमें प्रेरणा दें, उनकी षष्टिपूर्ति पर मुंबई महिला मंडल यही कामना करती है कि वे स्वस्थ रहें और उनकी यात्रा निरंतर गतिमान रहे। सन २०२३ में आचार्य श्री का चातुर्मास मुंबई में हो रहा है जिसकी हम सब आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

जैन समाज में 'एकता' बहुत ही जरूरी है। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अन्य संप्रदाय आचार्य प्रमुखों के सम्मुख यह महत्वपूर्ण मंथन रखा था कि आप सब जिस समय और जिस तारीख को चाहें उस समय 'संवत्सरी' हम बनाने को तैयार हैं। हम सभी तीर्थंकर महावीर के अनुयाई हैं, हम महावीर को मानने वाले हैं, हम सब जैन हैं, तो यह अलगाववाद क्यों? हमें इस बात का चिंतन करना चाहिए, अगर सभी जैन पंथ एक हो जाएं तो एक बहुत बड़ी क्रांति होगी, न सिर्फ जैन समाज में बल्कि पूरे भारत में आ जाएगी।

आज का युवा वर्ग अपने कैरियर को प्रधानता देता है, इस कारण वह धर्म और समाज से जुड़ी बातों को विशेष महत्व नहीं प्रदान करता, वह धर्म से दूर होता जा रहा है, अतः सभी संप्रदाय के आचार्य, युवा वर्ग की सोच को साथ में जोड़ कर अपने व्याख्यान को प्रस्तुत करें तो युवा वर्ग अवश्य ही अपने धर्म और समाज से जुड़ा रहेगा। युवा वर्ग विज्ञान को प्रधानता देता है और वह हर बातों को साक्ष्य के साथ अपनाना चाहता है, हमारे वैज्ञानिक भी मानते हैं कि जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है बस इसे युवाओं के सम्मुख उचित दिशा के साथ प्रस्तुत करना होगा, तभी युवा वर्ग अपने धर्म समाज से जुड़ा रहेगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

रचना जी मूलतः राजस्थान के 'भीलवाड़ा' की निवासी हैं, आप १५ वर्षों से मुंबई तेरापंथ महिला मंडल से जुड़ी हुई हैं, पूर्व में मंत्री, कोषाध्यक्ष, उपाध्यक्ष, के पद पर सेवारत रही हैं, वर्तमान में अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रही हैं, साथ ही आप लायंस क्लब मुंबई से जुड़ी हुई हैं। आपको आर्ट और कला में विशेष रूचि है। आगम स्वाध्याय अध्ययन में आपका विशेष लगाव है साथ ही आप महिला काव्य मंच की भी सदस्या हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़ी हैं।

गणपत लाल मारू
अध्यक्ष, तेरापंथ सभा दादर
बागोर निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८६९०६८०७७

गणपत जी परम पूज्य गुरुदेव को वंदन करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री का उज्जवल व्यक्तित्व और चरित्र हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है, उनके व्याख्यान आगमों पर आधारित होते हैं जो सभी श्रावक, साधु-संतों को ग्राह्य होते है, वे महातपस्वी हैं, उन्होंने १८ हजार किलोमीटर की अहिंसा यात्रा भारत, भूटान, नेपाल के दौरान सद्भावना, नैतिकता और नशा मुक्ति का संदेश जन-जन तक फैलाया है। इस संदेश के माध्यम से गुरुदेव का यह चिंतन रहा कि आम आदमी भी किस तरह अपना जीवन यापन करे और अपने जीवन को सार्थक कर सके, गुरुदेव की अहिंसा यात्रा से न सिर्फ तेरापंथ समाज बल्कि अन्य जैन संप्रदाय और समस्त मानव समाज भी इससे प्रभावित हुए हैं। हम सभी उन्हीं के अनुयायी हैं, उनके द्वारा दिए गए निर्देश हमारे लिए अनुकरणीय है। हमें ऐसे आचार्य का सानिध्य व आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है इसके लिए हम कृतार्थ हैं। आत्मा का कल्याण हो, साथ ही हमारे कारण किसी अन्य को कोई तकलीफ ना हो, इन बातों को गुरुदेव ने हमेशा बढ़ावा दिया है।

'जैन एकता' समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है और यह स्थापित होनी ही चाहिए पर यह होना थोड़ा कठिन लगता है क्योंकि जैन समाज का आग्रह व्रती अपनी सोच और अपने बात को ही प्रमुखता देता है, हम-सभी तीर्थंकर महावीर को सामने रखकर इसका चिंतन करें तो यह समय की मांग भी है। आचार्य श्री ने भी इसके लिए प्रयास किया है, उन्होंने अन्य पंथ प्रमुखों के साथ मिलकर अगले २५ वर्षों तक 'संवत्सरी' एक साथ-एक ही रूप में मनाई जाने के लिए प्रयास किया है और यह प्रयास जारी है, भविष्य में यह प्रयास और सफल हो इसकी मंगल कामना करते हैं।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से तो जुड़ना चाहती है पर वह धर्म में फैली भ्रांति, दिखावे और आडंबरों से दूर रहना चाहती है वह प्रत्येक बातों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखती है और उसे प्रयोगात्मक रुप से अपनाना चाहती है, तभी युवा वर्ग अपने धर्म समाज से जुड़ा रह सकता है और इसके लिए प्रोफेसर मुनि श्री महेंद्र कुमार जी स्वामी भी प्रयास कर रहे हैं उनका प्रयास सराहनीय है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि यह भूमि भरत चक्रवर्ती की है जिन्होंने अपने पराक्रम से संपूर्ण आर्यव्रत को एक रूप में बनाए रखा, यह भूमि भरत की है और इसलिए इसका नाम भारत ही रहना चाहिए। भारत ही हमारे देश का मूल नाम है और हमें यही अपनाना चाहिए, चाहे भाषा कोई भी हो।

गणपत जी मूलतः राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में स्थित 'बागोर' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा बागोर में ही संपन्न हुई है। १९८४ से आप मुंबई में बसे हुए हैं और कपड़ों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। तेरापंथ सभा दादर के अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

दीपक नखत
कोषाध्यक्ष, अणुव्रत समिति हावड़ा
सरदार शहर निवासी-हावड़ा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८८३३१२३८८

दीपक जी तेरापंथ आचार्य महाश्रमण जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री मेरे सांसारिक पक्ष के मामा सा है और इस बात पर हमारे पूरे परिवार को गर्व है और हम यह प्रयास करते हैं कि आचार्य श्री का हम पर आशीर्वाद बना रहे हम सभी ऐसा कार्य करें, इसीलिए हम धर्म के प्रति सदैव जागृत रहते हैं उनके बताए छोटे-छोटे नियमों का पालन अपने दैनिक जीवन में करते हैं, उनकी अहिंसा यात्रा में दिए गए नशा मुक्ति, सद्भावना व नैतिकता का संदेश संपूर्ण समाज के लिए हितकारी सिद्ध हुआ है।

मेरे परिवार में मेरी धर्मपत्नी (३८), पुत्री (१६) व पुत्र (१३) द्वारा वर्षीतप की पारणा अक्षय तृतीया को की गई थी और इस वर्षीतप का अभिप्राय १ दिन भोजन और १ दिन उपवास करना ही मात्र नहीं होता, उपवास के दौरान किन चीजों का त्याग करना चाहिए, संयम और समय पर भोजन करना चाहिए, सचित अचित भोजन होने चाहिए, इस तपस्या के माध्यम से ही हम जीवन को सार्थक बना सकते हैं। आचार्य श्री का हम पर सदैव आशीर्वाद बना रहे, उनके प्रवचन व व्यक्तित्व ने हमेशा ही हम-सबको प्रभावित किया है, उनके जन्म षष्टिपूर्ति दिवस पर कोटि कोटि वंदन।

'जैन एकता' के विषय पर आपका कहना है कि आचार्य श्री ने भी 'संवत्सरी' एक ही समय मनाने का प्रयास किया है, उन्होंने अन्य गुरु भगवंतों को साथ लेकर हमारी 'संवत्सरी' एक ही समय पर एक ही दिन मनाई जाए, इसका शुभारंभ किया है और हमारी मंगल कामना है कि भविष्य में सभी पंथों द्वारा 'संवत्सरी' एक साथ-एक ही समय पर मनाई जाए।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

दीपक जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सरदारशहर' के निवासी हैं। आपका जन्म सरदार शहर में व शिक्षा अहमदाबाद में संपन्न हुई है। पिछले कई वर्षों से आप हावड़ा में बसे हुए हैं और प्राइवेट फॉर्म में कार्यरत हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अणुव्रत समिति हावड़ा के कोषाध्यक्ष के रूप में सेवारत हैं, साथ ही तेरापंथ सभा के कार्यकारिणी सदस्य भी हैं। अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

अमित जैन

अध्यक्ष श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नांगलोई

हरियाणा निवासी-दिल्ली प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९२१३५८८६२४

अमित जी आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति अपने भाव को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री का व्यवहार बहुत ही सरल व अनुकरणीय है। वे सभी को समान दृष्टि से देखते हैं और सभी को समान रूप से अपने अनमोल वचन प्रदान करते हैं। उनकी अहिंसा पदयात्रा न सिर्फ जैन समाज के लिए बल्कि अन्य समाज के लिए भी प्रेरणादायक रही, जिसका लाभ सभी को प्राप्त हुआ। उनके द्वारा श्रमण संघ के साथ मिलकर 'संवत्सरी' एक साथ मनाने का प्रयास किया जा रहा है, जो जिनशासन और जैन धर्म को को एक नई दिशा प्रदान करेगा।

आचार्य श्री ने युवा पीढ़ी को सदैव आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है। हमें गर्व है कि आचार्य श्री का हमें सानिध्य प्राप्त हुआ है। यह सानिध्य हमेशा बना रहे यही मंगल कामना करते हैं।

'जैन एकता' आज जैन समाज की सबसे बड़ी जरूरत है। एकता स्थापित होगी तो ही हमारे समाज व जैन धर्म का महत्व बना रहेगा। हम सब भगवान महावीर के अनुयाई हैं, हमारा णमोकार मंत्र एक है, हमारे सिद्धांत एक हैं, हम सिर्फ जैन हैं इसी का अनुकरण करें।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म से जुड़ा भी है और नहीं भी जुड़ा। कुछ परिवार हैं जो बच्चों को जैन धर्म के संस्कार बाल्यकाल से ही देते हैं और तेरापंथ धर्म संघ में ज्ञानशाला, युवा मंडल के माध्यम से युवाओं को जोड़ने का प्रयास किया जाता है, साथ ही आज की आधुनिक तकनीक को अपनाकर गायन व दृश्यकाव्य के माध्यम से जैन धर्म के प्रति युवाओं को प्रोत्साहित किया जाता है, इसी तरह युवा वर्ग अपने धर्म व समाज से जुड़ा रहेगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि यह बात जरूरी है कि अपने देश का नाम है एक ही रहे केवल 'भारत'।

आज हम अपने देश को तीन नामों से जानते हैं जबकि विश्व में किसी भी देश के २ नाम नहीं है तो हमारे देश का नाम दो क्यों? यह हमारे भारत को बांटने के प्रयास के उद्देश्य से किया गया है। अतः अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, चाहे भाषा कोई भी हो।

अमित जी मूलतः हरियाणा के कापडो के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा दिल्ली में संपन्न हुई है। यहां फर्नीचर के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा नांगलोई, दिल्ली में अध्यक्ष पद पर सेवारत है। अग्रवाल मित्र मंडल, अग्रवाल मित्र परिषद जैसी अन्य संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

राजेश बोहरा

मंत्री, अणुव्रत समिति हावड़ा

लाडनूं निवासी-कोलकाता प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ७८९०६१३३५९

राजेश जी तेरापंथ धर्म संघ के ११वें आचार्य महाश्रमण जी के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री के दर्शन करने मात्र से ही नई ऊर्जा, नई शक्ति का संचार होता है। रोज सुबह मंगल पाठ सुनने से हमारा संपूर्ण दिन उत्तम रहता है, उनके प्रवचन, उनके व्याख्यान जीवन तत्वों पर आधारित होते हैं। उन्होंने अपनी अहिंसा यात्रा के माध्यम से नैतिकता, नशा मुक्ति, सद्भावना का प्रचार-प्रसार किया। नैतिकता जीवन के सभी पक्षों में होनी चाहिए चाहे वह सामाजिक हो, व्यवहारिक हो या आर्थिक। सद्भावना सभी के प्रति होनी चाहिए चाहे वह किसी भी धर्म और समाज का क्यों ना हो, सभी को समान रुप से ही देखना चाहिए और नशा मुक्ति तो आज की सबसे बड़ी जरूरत है। आचार्य श्री द्वारा इस पर विशेष जोर दिया गया है, जिसे सभी श्रावक अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करते हैं ताकि हम जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकें।

'जैन एकता' के विषय पर आचार्य श्री भी प्रयास कर रहे हैं, उन्होंने पंथ से ऊपर जैनत्व की भावनाओं को सर्वोपरि रखा है। जैनत्व की भावना हमारे अंदर सकारात्मकता लाती है, अतः हमें जैनत्व को प्रधानता देनी चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विशेष रूप से सक्रिय है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक मंडल में २१ से ४५ वर्ष के आयु वर्ग के लोग जुड़े हुए हैं, किशोर मंडल में १३ से २१ वर्ष के किशोर जुड़े हैं और ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चों को बचपन से ही संस्कारित किया जाता है, इन सब माध्यमों से युवाओं को अपने धर्म व समाज से जोड़ा जाता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, प्राचीन समय में हमारा देश आर्यव्रत रहा, यह हिंदी भाषी देश है और हम भरतवंशी हैं अतः अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए ना कि इंडिया, जो अंग्रेजों का दिया हुआ नाम है।

राजेश जी मूलतः राजस्थान के लाडनूं के निवासी हैं। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा लाडनूं में संपन्न हुई है, तत्पश्चात उच्च शिक्षा कोलकाता में संपन्न हुई। यहां आप हार्डवेयर के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। हावड़ा स्थित अणुव्रत समिति के सचिव पद पर सेवारत हैं। तेरापंथ युवक परिषद लाडनूं के कार्यकारिणी सदस्य हैं।

अमरचंद दुग्गड़
ट्रस्टी जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा उत्तरा हावड़ा
सरदार शहर निवासी-हावड़ा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३०१२०१०७

अमरचंद जी आचार्य श्री के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री का व्यक्तित्व ही निराला है, उनके आभा मंडल पर जो तेज है उसके दर्शन मात्र से चित्त शांत हो जाता है। हर किसी को अपनी मुस्कुराहट से आकर्षित कर लेते हैं, हर किसी से भी बड़े प्रेम व आत्मीयता से भेंट करते हैं। उन्होंने अपनी अहिंसा यात्रा के माध्यम से नशा मुक्ति का प्रचार प्रसार किया, जिससे लाखों लोग लाभान्वित हुए हैं। उन्होंने सभी को संयम की प्रेरणा दी और क्रोध से बचा जाए, इसके लिए हमेशा से ही प्रोत्साहित किया हैं। उन्होंने श्रावकों की हमेशा से ही सार संभाल की है, उनके बारे में जितना कहा जाए उतना कम ही है, यह हमारा सौभाग्य है कि हमें आचार्य श्री का आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है और यह इसी तरह बना रहे यही मंगल कामना करते हैं। जैन समाज में एकता की नितांत आवश्यकता है पर सबकी अपनी-अपनी श्रद्धा व अपने-अपने विचार हैं, फिर भी सभी का अपने धर्म व समाज के प्रति लगाव बना हुआ है, जब सामाजिक स्तर व राष्ट्र की बात आती है तो संपूर्ण जैन समाज एक साथ-एक मंच पर आसीन हो जाता हैं और यह आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है।

युवा पीढ़ी को अपने धर्म और समाज से जोड़े रखने के लिए आचार्य श्री महाश्रमण जी लगातार प्रयास कर रहे हैं। ज्ञानशाला, युवा मंडल के माध्यम से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे हमारे समाज की नींव मजबूत हो, क्योंकि युवा वर्ग ही समाज का भविष्य है अत: युवाओं को धर्म समाज से जोड़े रखना अत्यंत आवश्यक है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया नाम अंग्रेजों का दिया हुआ है। 'भारत' शब्द में अपनापन व आत्मीयता है जो अन्य शब्दों में नहीं, अत: अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया कदापि नहीं।

अमरचंद जी मूलत: राजस्थान के सरदारशहर के निवासी हैं। आपका जन्म सरदारशहर में व संपूर्ण शिक्षा कोलकाता में संपन्न हुई है। पिछले ३२ वर्षों से आप 'हावड़ा' में बसे हुए हैं और कपड़ों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। पूर्व में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा कोलकाता व उत्तर हावड़ा के अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में उत्तर हावड़ा के ट्रस्टी पद पर सेवारत हैं अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

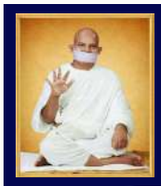

तेरापंथ धर्मसंघ के ११ वें पट्टधर अहिंसा यात्रा के प्रणेता, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी के जन्म दिवस पर कोटी-कोटी वंदन!

BAJRANG BUCHA
भ्रमणध्वनि : 9436003768
M. I. INDUSTRIES
NAGALAND WOOD INDUSTRIES
NORTH EAST TUBLARS PVT LTD
(Plywood Manufacturing)
SEVEN SISTERS
(Plywood Trading at Guwahati)
ARAVALI ENTERPRISES
(Dimapur)
Kohima Road, Dimapur, Nagaland, Bharat - 797112

!! ॐ अहम् !!

जय आचार्य भिक्षु

जय आचार्य तुलसी

जय आचार्य महाप्रज्ञ

तेरापंथ धर्मसंघ के शांतिदूत आचार्य महाश्रमण जी
म.सा. के जन्म पर्व पर शत्-शत् वंदन

हम रहें ना रहें गुरुवर तेरा आशीर्वाद रहें

Bijay Singh Chhajer
Rakesh Chhajer
Mobile: 9844013386

Quality Thermopack
And Insulations Industries

17-P, KIADB Industrial Area, Bidadi, Phase- II, Sector-1,
Mysore Road, Ramanagara, Karnataka, Bharat - 582109
e-mail : qualitythermopack@gmail.com

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Issue Opens : 01-09-2021
Issue Closes : 03-09-2021
Price Band : 603 – 610
Market Lot : 24 Shares & in Multiples

AMI ORGANICS LIMITED

Total Issue Size: ~ Rs 670 Crores
a) Pre IPO : ~ Rs 100 Crores
b) Anchor : ~ Rs 170 Crores
c) Main Book : ~Rs 400 Crores*

THANK YOU INVESTORS FOR OVERWHELMING RESPONSE

IPO SUBSCRIBED 64.54 TIMES*

TOTAL BID RECEIVED : ~ Rs. 25,733 Crores* (@ Upper Band)

* Excluding Pre IPO & Anchor Investors of Rs. 270.89 Crores

QIB	HNI	RETAIL
86.02 TIMES	155.40 TIMES	13.32 TIMES

as per www.bseiindia.com and www.nseindia.com dt. 3rd Sept, 21 @ 5 pm

Intensive
Investment Banking & Corporate Finance
www. intensivefiscal.com

जिनागम

सम्पादक-विजय कुमार जैन

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

www.mainbharathun.co.in

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनिः ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाकः mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

mailgaylordgroup@gmail.com

Postal Registration Number - MCN/192/2021-2023
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2021-23
'License to post without prepayment'
Published on 09th May 2022 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen.With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years.For smoother, effortless writing.

www.addpens.com

ONLY ₹50/- PER PC

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999 अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्ज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598